राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक १०] तृतीय विधान सभा के दसवें सत्र, १९६६ का १५ वां दिवस [संख्या १२

गुरुवार, दिनांक २९ सितम्बर, १९६६.

विधान सभा की बैठक म. पू. ८.४० बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री रामनिवास मिर्धा, अध्यक्ष, पदासीन)

सदन की मेज पर रखे गए पत्र

श्री अध्यक्ष : सदन की मेज पर रखे जाने वाले पत्र।

(१) **परिसीमन आयोग की आज्ञा**

मंत्री, निर्वाचन विभाग (श्री भीखाभाई) : अध्यक्ष महोदय, मैं परिसीमन आयोग अधिनियम, १९६२ की धारा १० (३) के अन्तर्गत, परिसीमन आयोग की आज्ञा संख्या १४–ए दिनांक ३० जून, १९६६ को सदन की मेज पर रखता हूं जिसके द्वारा परिसीमन आज्ञा संख्या १४ में संशोधन किये गये हैं।

श्री मुकुटबिहारीलाल गोयल (बयाना) : अध्यक्ष महोदय, ...

श्री अध्यक्ष : श्री बृजसुन्दर शर्मा।

(२) **शिक्षा विभाग की अधिसूचना**

शिक्षा मंत्री : (श्री बृजसुन्दर शर्मा) : अध्यक्ष महोदय, मैं शिक्षा (४) विभाग की अधिसूचना संख्या एफ ६ (३९) शिक्षा (बी) (१९५९) प्रकोष्ठ । ४ । दिनांक २८ सितम्बर, १९६६ को सदन की मेज पर रखता हूं जिसके द्वारा राजस्थान स्मारक, पुरावशेष स्थान तथा प्राचीन वस्तु नियम, १९६४ प्रकाशित किया गया है।

(८.४२ म. पू०)

सदन की आज की कार्यवाही हेतु समय निर्धारित करने संबंधी चर्चा

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यों को जैसा कि विदित है अविश्वास प्रस्ताव का आज आखिरी दिन है और अब भी कई माननीय सदस्य इसमें बोलना चाहते हैं, सरकार की ओर से भी आज बयान होगा, कुछ मंत्री महोदय बोलेंगे उसके बाद में मुख्य मंत्रीजी बहस का उत्तर देंगे। इसके अलावा कई ध्यान आकर्षण प्रस्ताव व अन्य प्रस्ताव हैं, जिनकी सूचना माननीय सदस्यों ने दी है और वे भी अपने आप में काफी महत्वपूर्ण हैं इसलिये माननीय सदस्यों से जानना चाहूंगा कि किस तरह प्रक्रिया चलाई जाय जिससे सभी को संतोष हो जाय। अविश्वास प्रस्ताव पर अच्छी तरह बहस हो जाय और दूसरे प्रस्तावों पर भी थोड़ा समय दिया जा सके।

(श्री अध्यक्ष)

श्री मुकुटबिहारीलाल गोयल(बयाना): अध्यक्ष महोदय, इसके लिये उचित तो यह होगा कि आज १ बजे तक अविश्वास प्रस्ताव पर कार्यवाही कर ली जाय, उसके बाद दो घंटे ब्रेक कर दिया जाय। ३ से ५ बजे तक फिर बैठ लें ताकि यह कार्य है, इसको निबटा लें क्योंकि ये मुद्दे भी अपने आप में ऐसे महत्वपूर्ण है जिनके ऊपर सरकार का ध्यान आकर्षित करना बहुत आवश्यक है।

श्री नत्थीसिंह (भरतपुर) : अध्यक्ष महोदय, ध्यान आकर्षण प्रस्ताव अविश्वास प्रस्ताव की वजह से ही नहीं लिये जा सके। आज भी इनको छोड़ देने से इसका मतलब यह होगा कि बहुत से महत्वपूर्ण मसलों पर हमने विचार ही नहीं किया। इसलिये जैसा कि मुकुटजी ने सुझाव रखा कि १ बजे तक अविश्वास प्रस्ताव पर कार्यवाही कर के बाद में दो घंटे के लिये स्थगित कर के फिर सदन की बैठक तीन बजे से बुला ली जाय और इनको ले लिया जाय।

श्री अध्यक्ष : अगर ३ से ५ बजे तक रखें तो भी अविश्वास प्रस्ताव पर इतने माननीय सदस्य बोलने वाले हैं कि माननीय सदस्य ज्यादा बहस नहीं करें तो ही पूरा हो सकेगा। इसलिये माननीय सदस्य थोड़ा थोड़ा समय लें, उसमें भी माननीय सदस्यों के सहयोग की आवश्यकता होगी।

श्री हरिदेव जोशी (खनिज मंत्री) : तय यह हुआ था कि आज १ बजे तक सब कार्यवाही समाप्त कर देंगे, फिर यह कहना कहां तक उचित है ?

श्री मुरलीधर व्यास (बीकानेर) : कॉल अटेन्शन नोटिस १ बजे या बाद में लेकर १०-१० मिनिट दे कर उन पर विचार किया जा सकता है। कई बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न हैं, कई प्रश्न हैं, कई प्रश्नों के जवाब तो ऐसे हैं कि आपने आश्वासन दिये हैं जवाब देने के और माननीय अध्यक्ष ने भी फरमाया है कि इनके जवाब मंत्री महोदय देंगे। इस तरह की व्यवस्था दी जा चुकी है इसलिये इन महत्वपूर्ण मुद्दों के लिये समय दिया जाय तो उचित होगा।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूं कि जो प्रस्ताव माननीय सदस्यों की तरफ से आया है कि १२॥-१ बजे तक अविश्वास प्रस्ताव को समाप्त कर दिया जाय और उसके बाद-लंच के बाद-३ से ५ बजे तक कॉल अटेन्शन नोटिस वगैरह हैं उनको ले लिया जाय तो मुझे आपत्ति नहीं है।

श्री हीराभाई (कुशलगढ़) : एक व्यवस्था का प्रश्न है। जो अभी व्यवस्था दी जा रही है इसमें मेरी सहमति है पर जब अविश्वास प्रस्ताव पर मत होंगे और यह सरकार ही भंग हो जायगी फिर हम कैसे बैठेंगे।

श्री हरिदेव जोशी : सपने देखा करो, सपने।

श्री अध्यक्ष : हीराभाई की स्थिति बहुत महत्वपूर्ण है.......

श्री भैरोंसिंह (किशनपोल, जयपुर) : इस बात को मुख्य मंत्री जी को स्वीकार कर लेना चाहिये।

श्री अध्यक्ष : तो फिर व्यवस्था इस प्रकार रही कि १ बजे तक अविश्वास प्रस्ताव पर जो भी कार्यवाही करना है, समाप्त कर देंगे और फिर ३ बजे मिल कर सदन की वापिस बैठक हो जायगी जिसमें ध्यान आकर्षण प्रस्तावों पर विचार किया जायगा। इसमें भी समय निर्धारित कर दें कि मुख्य मंत्री जी कितनी बजे अपना जवाब शुरू करें।

श्री भैरोंसिंह : विरोधी दल की तरफ से भी जवाब होगा।

श्री अध्यक्ष : विरोधी दल की तरफ से जवाब होगा उसमें एक दो माननीय सदस्य विरोधी दल के नेता, आप तय करें उत्तर दे सकेंगे इसलिये कम से कम २ घंटे इस परपक्ष के लिए आवश्यक होंगे। ११ बजे इस बहस को समाप्त किया जाय। फिर मुख्य मंत्री जी जवाब देंगे और फिर विरोधी पक्ष की ओर से जवाब दिया जाय। ११ बजे से पहले कुछ मंत्री महोदय और माननीय सदस्य भी बोलना चाहेंगे। इसलिए माननीय सदस्यों से मैं फिर निवेदन करूंगा कि संक्षेप में भाषण करें तो उचित होगा।

श्री हीराभाई : माननीय अध्यक्ष, ...

श्री चन्दनमल बैद (यातायात मंत्री) : एक पोइन्ट जो मेरे बारे में था.... ..

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य को संतोष हो गया।

श्री चन्दनमल बैद : भैरोंसिंहजी को संतोष हो गया तो कोई बात नहीं पर मेरे ऊपर एक आक्षेप लगाया था ....

श्री अध्यक्ष : अविश्वास के प्रस्ताव पर बहस। श्री हीराभाई !

श्री चन्दनमल बैद : तो मैं मानूं कि मेरे ऊपर चार्ज लगाया है उसके बारे में उनको संतोष हो गया है ?

(८.४८ म. पू.)

मंत्री-मण्डल के प्रति अविश्वास प्रस्ताव पर अग्रेतर वाद-विवाद

श्री हीराभाई (कुशलगढ़) : अध्यक्ष महोदय, आज तीन दिन से अविश्वास के प्रस्ताव पर वाद विवाद हो रहा है। इस सरकार को खत्म करने के लिये यह सही है कि यह एक बहुत बड़ा कदम है। क्योंकि जब से प्रजातन्त्र का राज हुआ, हम यह चाहते थे कि पहली, दूसरी और तीसरी योजनाओं में यह सरकार अपना रवैया सुधारे और आजादी व जनतन्त्र की रक्षा करे लेकिन आज राजस्थान और हिन्दुस्तान के अन्दर जनता में जितना अधिक असंतोष है, इस सरकार द्वारा जनता को परेशानियों में डाला जा रहा है, जितना जनता को परेशान किया जा सकता है वह सारा रवैया इस सरकार ने अपना लिया है, बजाय इसके कि यह प्रजातन्त्र की रक्षा करती। एक तरफ यह कांग्रेस सरकार कहती है कि हम अमेरिका वालों की गुलामी से दूर हो जायं, कर्जे से हमारा निस्तारा हो जाय लेकिन २० सालों से अगर हमारी राजस्थान सरकार एक एक जिले में एक एक बांध बनाती,

(श्री हीराभाई)

छोटे छोटे बांध या छोटी छोटी नहरें बनातीं तब तो जाकर कुछ हद तक इस स्थिति पर पहुंचते कि अमेरिका के कर्जे से बच सकते पर जितना हमारा आय का बजट था उसका २५ प्रतिशत तो सही उपयोग किया और बाकी ७५ प्रतिशत खिलवाड़ और भ्रष्टाचार में बर्बाद कर दिया, सरकार की इस कार्यवाही के कारण हमें दूसरे देशों का गुलाम रहना पड़ा है। इतने बांध बना देते, पंचायत समितियों और पंचायतों को ज्यादा से ज्यादा पैसा देकर उनका उत्थान करके जितना पानी हमारा बेकार जा रहा है उसको रोक कर रखा जाता तो आज जो लगातार अकालों की समस्या हमारे सामने आ रही है वह नहीं आती। और अकाल से पीड़ित लोग आज भूख से नहीं मर सकते थे लेकिन वह आज आप नहीं कर पाए। सिर्फ चुनाव का क्षेत्र ही बनाने में हमारी सरकार के नुमाइंदे जो सरकार का नेतृत्व कर रहे हैं, उन्होंने पूरा दिमाग चुनाव की तरफ रखा है और जब हमारा देश बरबाद होता जा रहा है, ये हमारे देश में बहुत अच्छाइयां ला सकते थे लेकिन जब से हमारे यहां कांग्रेस का राज्य हुआ, प्रजातन्त्र का राज्य हुआ, १६४७ के बाद जो कदम उठाए, प्रजातन्त्र हमारे हाथ में आया, तब जाकर एक दो साल ठीक चला और बाद में कांग्रेस की पूरी हकुमत छा गई तब से, अध्यक्ष महोदय, अकाल ही अकाल पड़ रहा है और अकाल से पीड़ित लोग भूख से मरते हैं। उसी तरह से आज हमारे देश में अनाज की कमी है, पानी की कमी है और हर तरफ भ्रष्टाचार पैदा हो गया और बाकी तमाम खामियां पैदा हो गईं, आज जनता इस बात को महसूस कर रही है।

मैं ज्यादा लम्बाई में न जाकर इतना ही कहना चाहूँगा कि इस साल अकाल पड़ा और जो राहत कार्य चलाए उनसे साफ जाहिर हो गया कि सिर्फ चुनाव क्षेत्र में ही उन्होंने काम किया है और अपनी पार्टी का प्रचार किया है, उससे प्रजातन्त्र का गला बिल्कुल घोंट दिया गया। अगर अकाल में भी कांग्रेस का यही रवैया रहा है तो आइंदा चुनाव में हम भी दावा करते हैं और विरोधी पक्ष के लोग दावा करते हैं कि आगे कांग्रेस वाले चुनाव में जीत कर नहीं आएंगे....

श्री भीखाभाई (वन मन्त्री) : कैसे नहीं आयेंगे ?

श्री हीराभाई : आप अकाल पीड़ित नहीं हैं, मैं बांसवाड़ा की मिसाल आपके सामने रखना चाहता हूँ। ८-८५ हजार मजदूरों ने राहत कार्यों में काम किया लेकिन उनमें से कम से कम २५ प्रतिशत तो जो सुपरवाइजर्स थे वे कांग्रेस के कार्यकर्ता ही थे और एक एक कार्यकर्ता ने एक-एक मेड़ में १० मास्टर रोल्स रखे, घर बैठे लोगों से अंगूठा करवा कर मास्टर रोल्स भर दिए। तो इस तरह से षड़यन्त्र रचा है, राष्ट्र के धन का दुरुपयोग किया है कई शिकायतें सरकार के पास गईं, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। इतना ही नहीं, वहां एक बार मुख्य मन्त्री जी का दौरा हुआ और तीन बार हरिदेवजी जोशी, खनिज मन्त्री का दौरा हुआ है। तो इस तरह ४ मीटिंग्स

Page No.5

(श्री हीराभाई)

वहां हुई हैं या ५ बार हुई हैं। पांचों मीटिंग्स में लोगों को बुलाया कि तुम्हारा पेमेंट करना है और तुमको और किसी धंधे से लगाना है। उन मीटिंग्स में जाने के बाद ओवरसीयर्स और इंजीनीयर्स द्वारा उनकी बराबर हाजिरी लगाई गई। आश्चर्य की बात है कि एक तरफ कांग्रेस की मीटिंग करें और दूसरी तरफ लाखों लोग बुलाकर मीटिंग में शामिल करें और रिलीफ कार्य में उनकी हाजिरी भरी जाती है और उन दिनों का भी पेमेंट किया जाता है। पैसा कांग्रेस का नहीं है, यह राष्ट्र का पैसा है, जनता का पैसा है। मुख्य मन्त्री यह बता दें कि यह पैसा अगर कांग्रेस का है तो अन्य लोगों का खजाना कहां है ? यह तो सब का खजाना है। तो फिर हमारा पैसा क्यों बरबाद करते हैं ? जितनी मीटिंग्स आपने कीं उनकी हाजरी भरकर जाली ढंग से आपने पेमेंट किया। सुखाड़िया जी और जोशीजी ने ५ मीटिंग्स कीं, दिन भर लोगों को वहां बुलाकर बिठा रखा तो ५ लाख का भ्रष्टाचार आपने नहीं किया ? सुखाड़िया जी और जोशीजी द्वारा राष्ट्र के धन का दुरुपयोग इस तरह से किया जाता है। आजादी कहां है ? आप हकुमत के बल से, पैसे के बल से, जनता के पैसे से पार्टी को मजबूत करना चाहते हैं, तो यह आजादी नहीं है और आप एकतन्त्रीय हकुमत पैदा कर रहे हैं। एक तरफ हम दूसरे देश वालों का विरोध करते हैं कि हम यहां किसी को आने नहीं देंगे लेकिन आप तो उनको न्यौता दे रहे हैं। अगर यही भ्रष्टाचार कायम रहा तो जनता ऊब जायगी तो इन मंत्रियों पर भी गोलियां चलेंगी। तो जो १०० साल का कार्य होगा उस पर भी पानी फिर जायगा, इसको आप रोकने की कोशिश करें तो भी नहीं रोका जा सकता। इसलिए इस सरकार को हटा देना बहुत जरुरी है।

इतना ही नहीं, कल श्री ढाबरिया जी ने कहा था कि कुशलगढ़ से मुझे हराने के लिए सरकार ने कांग्रेस वालों ने षड्यंत्र रचा था, जोशी जी ने अपने रिश्तेदार को वहां एस० डी० ओ० बनाया। फूल शंकर जिसका नाम है। एक कांग्रेसी को प्रधान बनाया। इसी तरह से डूंगरपुर से उदयसिंह थानेदार को वहां पर बुलाया गया, उसी तरह से तहसीलदार भी और सप्लाई ऑफीसर मानसिंह जो जगजात में रेन्जर था उसको सप्लाई आफीसर बनाया। वहां के कांग्रेसी नेता दरबार साहब और उनके भाई सभी लोग जोशी जी के कुटुम्ब के हैं और कांग्रेसी नेताओं के कुटुम्ब के हैं। जिस आदमी के सर पर लाल टोपी देखी तो पुलिस के द्वारा उस पर ३७६ और ३६२ का मुकदमा चलाया। केस बनवा कर उसको गिरफ्तार करवाया जाता है और जेल में भेजा जाता है। सुन्दरलाल नाम का एक दर्जी है, उसको जेल भेजा। रात को साढ़े सात बजे उदयसिंह थानेदार और एक रिटायर्ड थानेदार जेल में जाकर जेल खुलवाते हैं और उससे कहा जाता है कि तुम अब समाजवाद को त्यागो और कांग्रेसी बन जाओ, सफेद टोपी लगाओ और हम तुमको कल ही छुड़वा देंगे, इस तरह से लोगों को मजबूर करते हैं। उन्होंने थानेदार को जवाब दिया कि हम समाजवाद को नहीं छोड़ेंगे। तब उदयसिंह ने जोर से से उसको डंडा मारा। तो, मैं गृहमन्त्री जी

Page No.6

(श्री हीराभाई)

से जानना चाहता हूँ कि जब जेल ६ बजे बन्द हो जाती है, हम ५ बार जेल में रह चुके हैं, ६ बजे जेल बंद हो जाती है और फिर जेल नहीं खुलती है तो रात को साढ़े सात बजे जेल क्यों खोली गई ? अगर यही कांग्रेस का रवैया है तो जेलों में जाकर भी हम लोगों पर गोलियां चलवाई जायंगी। तो इस तरह के जोशी के कारनामे हैं। मैं उनसे कहता हूं कि ऐसे कारनामों से वंचित रह नहीं सकते तो हमें भी वैसे ही कदम उठाने पड़ेंगे।

एस० डी० ओ० ने तारीख १४ को पंचों और सरपंच को सुरेन्द्रसिंह वकील के यहां बुलाया और कहा कि तुम कांग्रेसी बन जाओ, बहुत समय तक सोशियेलिस्ट रहे हो, नहीं तो तुम्हें जेल में बंद करना पड़ेगा। उन्होंने जवाब दिया कि हमें जेल में बन्द कर सकते हैं लेकिन हम कांग्रेसी नहीं बन सकते। कुछ लोग जो कमजोर थे उनके सर पर एस० डी० ओ० ने स्वयं ने अपने हाथ से सफेद टोपी लगाई और गांव में जाकर उनको छोड़ आए। इतना ही नहीं इन लोगों ने फिर जाकर एस० डी० एम० के कोर्ट में एफीडेविट दिया कि ऐसा काम एस० डी० ओ० ने किया है।

इतना ही नहीं, इसी तरह से तहसीलदार ने तारीख १३ जून को अकाल समिति की बैठक जो हुई उसमें तकावी वितरित करने का निर्णय किया। तकावी वितरित करने का अधिकार तहसीलदार को नहीं है

(६.०० म. पू.)

लेकिन पंचायत समिति को न दिया जाकर वहां के तहसीलदार को यह अकाल तकावी दी और उसने बैठक बुलाई। हम सब गये। १३ जून को अकाल तकावी वितरण की। वहां दूसरे दिन फूलशंकर एस० डी० ओ० तहसीलदार के यहां पहुँचता है और वहां के दरबार, जो कांग्रेस पार्टी के नेता हैं, पूरी प्रोसिडिंग्स को बदल दिया गया। नये फार्म लाकर तकावी वितरण की। क्या तहसीलदार ने इस प्रकार की कार्यवाही करके प्रजातन्त्र के नियमों का उल्लंघन नहीं किया, क्या उसने इस प्रकार कार्यवाही करके प्रजातन्त्र को आघात नहीं पहुंचाया ? कई शिकायतें कीं लेकिन कोई नहीं सुनता। फूलशंकर साफ कहता है कि अभी जोशीजी आये थे और उन्होंने कहा है कि सोशलिस्टों की मीटिंग में भाषण करो और गड़बड़ी करो और तुम्हारा कोई बाल बांका नहीं होने दूंगा। जोशीजी ने गढ़ में यह कहा है। प्रजातन्त्र का गला घोट कर कर्मचारियों के द्वारा ऐसी स्थिति पैदा की जाय तो कर्मचारी आपके साथ हैं तो कल हमारे साथ भी आ सकते हैं। जितना छोटा वर्ग है, पुलिस के छोटे जवान हैं उनको भी हम साथ ले सकते हैं। लेकिन हमारी प्रजातन्त्र के ऊपर आस्था है, हम उसको खोना नहीं चाहते। आज सत्ता के बल पर ये लोग जनतन्त्र की हत्या कर रहे हैं। एक मानसिंह सप्लाई ऑफिसर है उसने कहा है कि तमाम लाल टोपी वाले हैं, उनकी दूकानें बन्द कर दो। एस. डी. ओ. ने रजिस्टर छीन लिये। लोग गये और कहा कि अनाज क्यों नहीं दे रहे हो ? क्या लाल टोपी वाले अनाज नहीं खाते ? दो तीन आदमियों को सप्लाई ऑफिसर मानसिंह ने मारा और शंकरलाल नाम के व्यक्ति को पकड़ कर पछाड़ा उसके लिए एफ. आई. आर. दर्ज कराई

(श्री हीराभाई)

है। इस प्रकार निर्णय ले लेते हैं। चुनाव वगैरा क्यों हो ?

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

सरकार ही तय कर ले कि दस कांग्रेस के सिवाय और कोई नहीं। उसी की हुकुमत रहेगी। काहे को यह प्रजातन्त्र की बात करते हो फिर? लाखों रुपया चुनाव में खराब होता है। प्रजातन्त्र नहीं रहता है और सत्तारूढ दल वाले ही उसको खत्म कर रहे हैं तो हमें खेद है।

जिन अफसरों का नाम लिया है, जिन्होंने हमारे साथ अपराध किया है, मैं राज्य सरकार से मांग करता हूँ कि यदि किसी प्रकार से उन लोगों को वहां से नहीं हटाया जायगा तो चुनाव कराना न कराना बेकार है। हमारे गरीबों के लिए खतरा है। उनसे बचाने के लिए हमारे पास एफेडेविट तैयार हैं। आप उसके लिए कमीशन बिठा कर जांच कराइये और तहसीलदार और एस. डी. ओ. और सप्लाई आफिसर मानसिंह को हटाया जाय। दरबार के रिश्तेदार हैं और एस. डी ओ. हरिदेव जोशी के रिश्तेदार हैं और जोशीजी ने वादा कर लिया है कि कुशलगढ क्षेत्र की विजय कराओगे तो मैं तुम्हारे सेक्रेटरी बनाने की सिफारिश करूंगा। यह लालच दी है। और हमारा गला घोट रहे हैं। इन सारी घटनाओं को लेकर इधर बैठने वाले और उधर बैठने वाले चाहेंगे कि इस प्रकार की घटनाओं को रोका जाय। इसकी जांच के लिए एक कमीशन बिठाया जाय।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

जेल ७।। बजे क्यों खोली ? उसकी जांच करा ली जाय। एस० डी० ओ० फूलशंकर सरकारी अधिकारी होते हुए भी उसने सफेद टोपी क्यों लगायी ? तहसीलदार ने प्रोसिडिंग्स क्यों बदली ? हरदेवजी जोशी और सुखाड़ियाजी जाली मास्टर रोल बनवा कर धन की बरबादी की उसकी जांच करके उनको हटाने की कार्यवाही वैसे आज हम उनको हटा ही रहे है और बाकी उनको वहां से हटाया जाय।

श्री अध्यक्ष : श्री दुर्गालाल बाढ़दार।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार (हवामहल, जयपुर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन करना यह है कि जहां तक इस राज्य सरकार के प्रति यह अविश्वास का प्रस्ताव लिया जा रहा है मैं इस सम्बन्ध में इतना ही निवेदन करना चाहूंगा, अध्यक्ष महोदय, अविश्वास तो इस सदन का ही इस सरकार के प्रति नहीं है किन्तु अविश्वास तो सारी जनता का ही इस सरकार के प्रति है और यह स्वयम् सिद्ध बात है। स्वयम् सिद्ध बात इस दृष्टि से है कि वर्तमान मंत्रीमण्डल में बहुत सारे ऐसे मसले हैं, यह सारी जनता जानती है कि उन पर एकमत हो कर कार्य नहीं कर सकता। जो मंत्रिमण्डल अपने किसी सिद्धांत पर अटल न रह सके और आपस में संघर्ष करे और वह मंत्रिमंडल यहां आकर जनता के सामने कहने की कोशिश करता है कि हमें जनता का विश्वास प्राप्त है हमें यह एक विडम्बना मालूम पड़ती है।

(श्री दुर्गालाल बाढ़दार)

मैं सदन के सामने केवल उन मुद्दों पर चर्चा करना चाहता हूं जो कतिपय मंत्रियों ने सदन के सामने ऐसे वक्तव्य दिये हैं और यह स्थापना करने की कोशिश की है कि हमें जनता का विश्वास प्राप्त है। उन्हीं बातों का उत्तर देने के लिये, माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं दो चार बातें आपके सामने रखना चाहता हूं।

सबसे बड़ी बात जनता के सामने सरकार की ओर से यह उपस्थित की जाती है, यह बात जनता के सामने प्रकट की जाती है वह यह कहते हैं कि हमने स्वतन्त्रता प्राप्त करने के पश्चात् इस देश में जितना विकास किया है, जितनी प्रगति की है और जितना रुपया व्यय किया; है उतना सम्भवतः आज तक किसी सरकार ने नहीं किया है। मैं तो केवल छोटी सी बात पूछता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, हर समझदार आदमी यह पूछता है, मंत्रिमंडल से यह पूछता है, जनता का प्रत्येक समझदार व्यक्ति यह पूछता है कि इस सरकार ने या केन्द्रीय सरकार ने ऐसा क्या ऐहसान किया है ? जिनके हाथों में हुकुमत होती है, जिनके हाथों में शासन की बागडोर होती है जो शासन चलाने का कर्तव्य पालन करना चाहते हैं उनका यह प्रथम कर्तव्य हो जाता है, यह उनकी प्राइमरी, एलीमेन्टरी ड्यूटी हो जाती है कि वह जनता के हित के लिये, जनता के लाभ के लिये, जनता की सुरक्षा के लिये जनता को अच्छा खाना और अच्छे वस्त्र देने के लिये बड़े से बड़े काम करने की चेष्टा करे। माननीय मंत्री महोदय उन योजनाओं को गिनाते हैं, अपने अच्छे कारनामों का जिक्र करके जनता को यह बताना चाहते हैं कि जनता का हम में विश्वास प्राप्त है, मैं उन्हीं बातों का जिक्र करना चाहता हूं। यह तो आपका पुनीत कर्तव्य है कि आप जनता की भलाई के लिये कुछ योजनायें बनाते हैं, उनकी भलाई के काम करते हैं। लेकिन आप से पूछना चाहता हूं कि आपने उन योजनाओं पर लाखों और करोड़ों रुपये खर्च किये तो क्या आपने अपनी निजी संपत्ति के खर्च किये ? यह वही रुपया है जो देश की जनता कठिन परिश्रम करने के बाद टैक्सों के रूप में देती है, यह वही रुपया है जो जनता अमानत के रूप में आपकी कस्टडी में रखती आयी है। अब यह देखना है कि आपने उसका सदुपयोग किया है या या दुरुपयोग किया है ?

जब आप विकास का वर्णन करते हैं और ऐसी बातों को जनता के सामने लाने की कोशिश करते हैं तो हमें हंसी आती है कि आप कितनी जनता को गुमराह करने की चेष्टा करते हैं। आपने विकास किया। पर मैं निवेदन करना चाहता हूं कि आपके विकास के कामों की, आपने जो बांध बनाये, सड़कें बनाईं नहरें निकालीं, मकान बनाये, उनका आप पहले के किये गये कामों से तुलना तो करें। मैं यह कोई पहले वालों की प्रशंसा की दृष्टि से नहीं कह रहा हूं, मैं तो इससे यह बताना चाहता हूं कि जो बान्ध, जो सड़कें, जो नहरें और जो मकान आदि पहले के बने हुए हैं उनमें आज भी कहीं कोई दरार या खराबी नजर नहीं आती, जब कि उनको बने वर्षों बीत गये, और

(श्री दुर्गालाल बाड़दार)

उसके मुकाबले में आपके नये हर काम में आप देखलें कहीं दरारें पड़ गई हैं, तो कहीं टूट फूट हो गई है एक दो साल बाद ही। सड़कों की तो यह हालत है कि इधर बनी उधर एक दो महीने में ही टूटनी शुरू हो जाती हैं। इससे साबित होता है कि आपने आंखें खोलकर काम नहीं किया। जनता के पैसे को अमानत समझ कर उसका सही उपयोग करने में आपने गफलत बरती। अमानत को, धरोहर को ठीक तरह से रखा जाय, ठीक तरह से खर्च किया जाय यह दृष्टिकोण अगर नहीं रहता है तो जिस विश्वास को आप में प्रकट कर के जनता ने आपको चुनकर यहां बिठाया है, उस जनता के विश्वास के साथ आपने विश्वास घात किया है।

आप लैंड अलॉटमेंट का सवाल ले लीजिये। तकावी लोन की बातें लीजिये। हमने उनमें भ्रष्टाचार किया। जो पैसा दिया गया उस का खुलकर दुरुपयोग हुआ। हम उसे नहीं रोक सके।

एस्टीमेट्स कमेटी और पब्लिक अकाउन्ट्स कमेटी की रिपोर्ट सदन में रखी गईं। उनमें जिन अनियमितताओं का उल्लेख है वही बहुत हैं। वह सर्व विदित है। सरकार को उसकी गलतियों को पोइन्टेडली, बराबर रिपीटेडली, बताया गया पर उनको सुधारने की सरकार ने कुछ भी कोशिश नहीं की। ऐसी स्थिति में मैं तो दो ही बातें कहूँगा। या तो आप में क्षमता नहीं है कि इन गलतियों का आप निराकरण कर सकें। या कुछ कारण ऐसे हैं जिनकी वजह से ऐसे काम करने वालों को आप डिसप्लीज नहीं करना चाहते। उनको शील्ड करना चाहते हैं। डिसप्लीज करने की हालत में आप किसी भी सूरत में नहीं हैं। चाहे समस्या कितनी ही गहन हो, प्रबल हो, जनहित कितना ही बडा उसमें निहित हो, आपके सामने एक ही प्रश्न रहता है कि येन केन प्रकारेण आप अपने इन शक्ति के स्रोतों को कायम रक्खें। ये आज आपके शक्ति के स्रोत हैं। इस दृष्टि कोण से अध्यक्ष महोदय, लाखों करोड़ों रुपया इस राज्य सरकार ने डवलपमेंट के नाम पर, मकान बनाने के नाम पर कुए खोदने के नाम पर और दूसरे दूसरे नामों पर उन लोगों को अॉलट किया है जिनसे या तो किसी प्रकार का पारिवारिक सम्बन्ध है इनका या जिनसे चुनावों में सहायता मिलती है या दूसरे कारण होते हैं या जिनसे व्यक्तिगत लाभ होता है। मैं किसी मन्त्री पर रिश्वत लेने का ऐसा इलजाम लगाना नहीं चाहता पर यह बताना चाहता हूँ कि यदि मन्त्री की निगाहों में इस तरह से जनता की अमानत का पैसा बरबाद होता है और वे बैठे बैठे देखते रहें, कोई कार्यवाही नहीं कर सकें तो इसे क्या कहा जाय ? या तो उनकी कनाइवेन्स है ऐसे कामों में या जानते हुए भी उनका निराकरण नहीं कर सकते तो इनइफीसियेन्ट हैं, अयोग्य हैं। दो ही बातें हो सकती हैं।

शिक्षा, चिकित्सा और न्याय के बारे में आपके भाषण सुनने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ कि कांग्रेस के शासनकाल में इतनी स्कूलें बढ़ गईं, इतने चिकित्सालय बढ़ गये इतने कोर्ट्स और न्याय पंचायतें खुल गईं जितनी पहले नहीं थीं। इतनी बिजली लगा

(दुर्गालाल बाढ़दार)

दी जितनी पहले नहीं थी। सड़कें भी पहले से बहुत अधिक बना दीं। ये कुछ मोटी मोटी बातें बोलते रहते हैं और कहते हैं कि विरोधियों के पास तो गालियां देने के सिवाय और कुछ नहीं है।

मैं, श्रीमान्, यह पूछना चाहता हूं आपको कि आपके पास सिवाय इन दो चार बातों के बोलने के लिये क्या मसाला रह गया है? जैसे तोते को राम का नाम रटा दिया जाता है वैसे आपने भी तीन बातें रट रक्खी हैं। स्कूलें खुल गईं, सड़कें बन गईं। पर इस तोता रटन्त से होता क्या है? आपने जनता को कितना लाभ पहुंचाया?

मैं तो जनता के इन प्रतिनिधियों के सामने एक छोटी सी बात आप से पूछना चाहता हूं। बिजली का मामला है। जब आपके ये बड़े बड़े कारखाने नहीं खुले थे और लोकल थर्मल से बिजली सप्लाई की जाती थी तो तीन आना यूनिट में सप्लाई की जाती थी। बाद में आपने कहा कि हम चम्बल की बिजली लावेंगे, भाखरा से लावेंगे, और घर घर को बिजली देंगे, चमन कर देंगे। स्वर्ग बना देंगे। आपने यत्न किये इसके लिये। हम भी खुशी से बांसों उछलने लगे कि चलो चम्बल की बिजली सप्लाई होने लगी और यहां का थर्मल सिस्टम बन्द कर दिया गया तो तीन आना यूनिट से बढ़कर उसकी रेट ६ आना हो गई और बढ़ती बढ़ती सात आना तक और आठ आना तक आ गई और अब सरचार्ज की समस्या और लग गई। जनता को क्या लाभ हुआ आप की इन खरचीली योजनाओं का? आप हाइडल बिजली बिजली थर्मल से सस्ती नहीं दे सके। क्या कारण है? कभी सोचा आपने? वही तोता रटन्त है।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

बहुत जल्दी समाप्त करता हूं। अखबारों में पढ़ा मैंने अर्ज २३ अ रब और ६४ करोड़ का कर्जा इस देश पर आपने इन योजनाओं के द्वारा कर दिया? इसके बदले में उत्पादन आपने क्या दिया। आप जाने। उत्पादन आपका भ्रष्टाचार में चला गया। जो कर्जा आपने लिया है उसको सारे हिन्दुस्तान की सीमा पर बिछा दिया जावे तो पूरे हिन्दुस्तान का मानचित्र बन सकता है। इतना कर्जदार बनाकर, उत्पादन को भ्रष्टाचार में नष्ट कर के आपने देश को रसातल में जाने का रास्ता खोल दिया है। ऐसी स्थिति में जनता का हित इस सरकार से हो सकेगा यह मृगमरीचिका मात्र है।

आपने बहुमत के बल पर आप इन कुर्सियों पर चिपके रह सकते हैं, आपके पास बहुमत का अलादीन का चिराग है। पर कम्युनिटी के नाम पर, देश के नाम पर, इनसानियत के नाम पर, मानवता के नाम पर मैं मंत्री-मण्डल के सारे सदस्यों से केवल इतना ही निवेदन करना चाहता हूं कि देश को अगर सुधारना चाहते हैं, जनता का कुछ भी हित करना चाहते हैं, तो अपनी इन खर्चीली और कर्ज में डुबोने वाली, भ्रष्टाचार को पनपाने वाली योजनाओं को बदल दो। देश का कल्याण चाहते हो तो इन अपव्ययकारी योजनाओं को परिवर्तित कर दो, ये योजनाएं भ्रष्टा-

Page No.11

(श्री दुर्गालाल बाढ़दार)

चार पैदा करती हैं और भ्रष्टाचार उत्पादन को रोकता है। उत्पादन के बिना देश दीवालिया हो जावेगा । तो इन योजनाओं को बदलो, वरना जनता आपको इन कुर्सियों से पकड कर फेंक देगी । आज माननीय सदस्यों में ही आपकी सरकार के प्रति असंतोष नहीं है, वरन् विद्यार्थियों में, मजदूरों में, आपके राज्य कर्मचारियों में और महगाई के कारण सारी जनता में भ्रष्टाचार के कारण सारे देश में आपके प्रति असंतोष है। ऐसा कौनसा देश का तबका है जिसमें आपके शासन के प्रति असन्तोष नहीं है । आप मुझे बता दें। किसान वर्ग मजदूर वर्ग आज आपका कोस रहे हैं। जब यह असंतोष चारों तरफ फैला हुआ है तो क्या कारण है कि आप आज दावा करते हैं कि जनता का आप में कोई विश्वास रह गया है।

इसलिए मेरा निवेदन है कि आप इन कुर्सियों को रखने की अब चेष्टा न करें। इस अविश्वास प्रस्ताव को आप स्वयं स्वीकार कर लें। इस स्वयं सिद्ध बात पर बिना बादलों के आसमान पर झूठ के बादल डालकर असलियत को छिपाने की चेष्टा न करें और कम से कम देश के फायदे के लिए जनता के हित के लिये स्वयं इस्तीफा दे दें तो अच्छा होगा । वरना समय स्वयं आपको ले जावेगा दूसरे रास्ते पर। यह तो समय की बात है समय को इस लिखावट को पहचानो। वह फरमान जब वक्त पर आवेगा तो एग्जीक्यूट होगा। उससे पूर्व ही आप जनता के हित को समझ कर चलना चाहते हो तो समझ जाओ। यही मेरा आपसे निवेदन है।

श्री निरंजननाथ आचार्य (गृह मंत्री) : अध्यक्ष महोदय....

श्री मानिकचन्द सुराणा (कोलायत) : मंत्रीगण तो बाद में भी बोल लेंगे ।

श्री निरंजननाथ आचार्य : अध्यक्ष महोदय, सदन में पुलिस विभाग के सम्बन्ध में....

श्री मानिकचन्द सुराणा : मेरा निवेदन अध्यक्ष महोदय यह है कि मंत्रीगण तो फिर भी बोल लेंगे हाथी के पैर में सब आ जायेंगे। जब सुखाड़ियाजी बोलेंगे तो इनका बोलना हो जायेगा। पहले हमारी बात तो सुन ली जाये।

श्री अध्यक्ष : उनके साथ साथ आप भी बोल लेना।

श्री निरंजननाथ आचार्य (गृह मंत्री): माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे विभाग से संबंधित सदन में कई प्रश्न उठाये गये और माननीय सदस्यों ने कुछ सुझाव अच्छे भी दिये, मैं क्योंकि कई स्थगन प्रस्ताव अपराधों के संबंध में आये हैं और आने वाले हैं इसलिये उस संबंध में तो अधिक नहीं कहूंगा। कुछ मुद्दे सीमा की सुरक्षा के सम्बन्ध में, अपराधों की वृद्धि या कमी होने के संबंध में और कुछ जो व्यक्तिगत आरोप लगाये गये हैं उनका स्पष्टीकरण मैं करना चाहूंगा।

अध्यक्ष महोदय, मैं बड़ी गम्भीरता से एक गम्भीर प्रश्न की ओर माननीय सदस्यों का ध्यान आकर्षित करता हूं और वह यह है कि श्री

(श्री निरञ्जननाथ आचार्य)

छगन लाल गोदावत के मकान की तलाशी स्वर्ण की सेन्ट्रल एक्साइज विभाग द्वारा ली गई। उसके संबंध में कई भ्रांतियां उत्पन्न की गयीं। यह ठीक है अध्यक्ष महोदय कि ४ जून से १४ अगस्त तक २४० किलोग्राम सोना इसी सेठ के यहां से और ६२७. ४४० किलोग्राम चान्दी इन्हीं सेठ के यहां से निकली। सोना ट्रेजरी में जमा कर दिया गया और ६२७ किलोग्राम चांदी चित्तोड में कलेक्टर के यहां है। इस चांदी को लेकर कल बहुत प्रश्न पैदा किये गये कि ट्रेज़रट्रोव की चांदी है। ट्रेज़रट्रोव के कानून के तहत इस चांदी को लिया गया। यह ठीक है। अगर यहीं तक रहता कि ट्रेज़रट्रोव की चांदी है या और किसी एक्ट के अन्तर्गत यह चाँदी है और एक चिन्ता इस पर व्यक्त की जाती है कि इसका मामला जल्दी निर्णित होना चाहिए तब तो मैं नेकनीयत के संबंध में कुछ नहीं कहता। लेकिन अध्यक्ष महोदय कानून के प्रश्न पर विवाद खड़ा किया गया कि ट्रेज़रट्रोव के अन्तर्गत यह नहीं है। जल्दी फैसला होना चाहिए, इतनी पेशियां पड़ गयीं गवर्नमेंट एडवोकेट उसमें आता है नहीं और यह ६२७ किलोग्राम चांदी का फैसला नहीं होता ट्रेज़रट्रोव के एक्ट में यह मामला नहीं आता। ऐसी पैरवी की गई जब कि यह मसला कलेक्टर के यहां है और उसमें विवाद यह है कि किस कानून के अन्तर्गत यह मामला आता है। जिसमें कलेक्टर एक पार्टी है और नोटिसेज़ दूसरी पार्टी को दिये जायें और यहां सदस्य महानुभाव यह कहें कि जल्दी फैसला हो, मामला ट्रेज़रट्रोव में नहीं आता इसकी मंशा का नतीजा मैं माननीय सदस्यों पर छोड़ देता हूं। निकल जाये ट्रेजरट्रोव के कानून में यह चांदी, सेठ को मुनाफा हो जाये और क्यों हो जाये, किस की इसमें दिलचस्पी है, इस दबाव में आकर कलेक्टर कह दे कि जो ट्रेजरट्रोव में नहीं आती ६२७ किलोग्राम की चांदी ट्रेजरट्रोव में नहीं आती यह फैसला दबाव से कोई कराना चाहे उसके पीछे अध्यक्ष महोदय मंशा क्या हो सकती है, मैं उसे नहीं कहना चाहता। कैसी दिलचस्पी है मैं नहीं कहता। संकेत जरूर मिलता है, मैं नहीं कहता। ट्रेजरट्रोव के अन्तर्गत यह चांदी नहीं आती इसके सम्बन्ध में भी मैं नहीं कहता। लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि सेन्ट्रल एक्साइज् डिपार्टमेन्ट ने एप्लीकेशन करके यह कहा है कि ट्रेजरट्रोव में है या नहीं लेकिन सेन्ट्रल एक्साइज के एक्ट में है। दोनों प्रश्न कलेक्टर महोदय के यहां निर्णय के लिए उनके सामने है। मैं यह चाहता था कि यह विवाद का प्रश्न जो कि अदालत के सम्मुख है इस प्रश्न पर इस दबाव के साथ कानून के मसले पर यहां पैरवी नहीं की जानी चाहिए थी कि ट्रेजरट्रोव के अन्तर्गत नहीं आता इसलिए स्वयं अपने आप इसको देख लें कि आपकी मन्शा इसको ट्रेजरट्रोव से हटाने की क्या है ? इस विवाद को प्रश्चनवाचक चिन्ह करके इसको यहां छोड़ देता हूँ।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया (बनेड़ा) : अध्यक्ष महोदय, यह जवाब पूरा नहीं है। मैंने जो बात कही है उसका जवाब दें। मैंने यह कहा है कि इस चांदी के मामले में १४ पेशियां हो चुकी हैं। गवर्नमेन्ट की तरफ से कोई एपियर कलेक्टर के पास नहीं हुआ और उसके बाद में यह कहा गया सेठ से कि ५ लाख रुपया दो तो यह चांदी हम तुमको दे

(श्री उमरावसिंह ढाबरिया)

देंगे। इसका क्या जवाब है और फिर इस चांदी को एक्साइज़ विभाग के पास क्यों नहीं रखते ? सेन्ट्रल एक्साइज़ डिपार्टमेन्ट के सुपुर्द करनी चाहिए थी यह चांदी वह तो नहीं की और दबाकर ५ लाख रुपया लेना चाहते हैं....

श्री निरंजननाथ आचार्य : ढाबरियाजी अभी तो आरम्भ ही है, इब्तदा ही है। मैं यह कह रहा था कि अधिक पेशियों हुई मन्जूर है....

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : १४ हुई।

श्री निरंजननाथ आचार्य : १४ हुइ १५ हुई मन्जूर, और बोलिये। गवर्नमेन्ट के डिप्टी एडवोकेट नहीं आये यह मन्जूर है, विलम्ब होना यह भी मन्जूर है।

श्री मानिकचन्द सुराणा : सारे जुर्म इकबाल कर रहे हैं ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : सेठ को ६२७ किलोग्राम चांदी आपकी पैरवी के बाद नहीं देना मन्जूर है। नहीं देंगे, नही देंगे नहीं देंगे।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : सेन्ट्रल एक्साइज को दे दो। तुम उसका ५ लाख रुपया क्यों मांगते हो ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : हम भी शांति से सुनते रहे हैं। बैठिये। बनेड़ा का प्रश्न अभी आता है थोड़ा सा धैर्य रखिये।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : यह कहकर मुझे डराने की जरूरत नहीं है कि बनेड़ा का प्रश्न आने वाला है। जो सही हो वह कहें।

श्री निरंजननाथ आचार्य : यह गला फाड़ देंगे अध्यक्ष महोदय, बड़ी मुश्किल है। अभी गहरा प्रश्न आता है। इसलिए थोड़ा शान्ति से सुन लीजिये तो आप जवाब अच्छा दे पायेंगे।

मैं यह दूसरा प्रश्न अर्ज कर रहा था कि यहां पर प्रश्न उठाया। मैं कहना नहीं चाहता। सुराणाजी से मेरी इस सम्बन्ध में बात हुई। वह खानगी की बात है। उन्होंने कहा कि क्या है। वह परेशान भी हुए। मैं नहीं कहना चाहता हूँ इस प्रश्न पर। लेकिन अब दूसरा प्रश्न यह होता है....

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा (नसीराबाद) : अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से कहूंगा कि इस तरह से या तो कहें कि क्या बात हुई। आप क्यों छिपाना चाहते हैं ? आपको कहना चाहिए। आप सदन में मिस्ट्री क्रियेट करके हमको लर्च में क्यों डालते हैं ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : अन्त में कहूँगा। अध्यक्ष महोदय, मैंने नोट कर लिया है। बाद में कहूंगा।

अब मैं यह अर्ज कर रहा था कि दूसरे किस्से के लिए कल माननीय हरिदेवजी जोशी ने कहा और माननीय मंत्री श्री मिर्धाजी ने भी कहा कि बनेड़ा के माननीय सदस्य ने किस्सा अच्छा गढ़ा है। उस समय तथ्य को क्रोनोलॉजीकल ऑर्डर में माननीय मुख्य मंत्री जी को बात भी थी। अब मैं कहता हूँ कि अच्छा किस्सा गढ़ा कि

(श्री निरंजननाथ आचार्य)

६–१२–६५ को यह कहा गया कि मुख्य मंत्री जी चितौड़ में थे और एक मंत्री महोदय मैं नाम ले लूं अमृतलाल जी यादव भी चितौड़ में थे और तारीख ६–१२–६५ को इत्तला अव्वल के प्रश्न पर गुणवन्तलाल को कहा गया और एस० पी० को नीमच भेजा गया पार्टीज को लाने के लिए। इनको कहा गया कि इत्तला अव्वल दे दो। हम कुछ कर देंगे। माननीय मुख्य मंत्री जी ने इत्तला अव्वल ले ली और उसके बाद में एक किस्सा करीब करीब आपके भाषण में दो तीन पैराग्राफ में यह चला। वह किस्सा तो आप स्वयं ही देखेंगे। लेकिन माननीय मुख्य मंत्री जी वहां गुणवन्तलाल की तरफ से ५१ ईंटों के सम्बन्ध में गणपतिलाल और दूसरे दोस्तों के खिलाफ एक इस्तगासा जिसको एफ० आई० आर० कहते हैं वकील आपके मुख्य मंत्री जी लेते हैं और फिर उस ट्रान्जेक्शन में आपने कहा, फिर एस० पी० को यूटीलाइज किया गया, नीमच भेजा गया, अपराधी को लाया गया, वकीलों से बात चीत हुई और वकीलों से बातचीत होकर एक दास्तान चली। अब मैं एक ही शब्द में इस सारी दास्तान, दास्तान नहीं कहता किस्सा, कल्पनाका किस्सा एक सेन्टेन्स में आपके इस कल्पना के किस्से को समाप्त करता हूं। माननीय सदस्य स्वयं आप परीक्षण करें। तारीख ६–१२–५५ को ५५ नहीं ६५ को.... छोटी मोटी गल्तियों को मत पकड़िये। ६५ ही है। मैं बतलाना चाहता हूं कि मुख्य मंत्रीजी चित्तौड़ नहीं थे। मुख्य मंत्री उस दिन वहां चितौड में नहीं थे। प्रोग्राम उनका निकाला हुआ है। ऐसी स्थिति में आप यह भी देख लीजिए कि जब भी मुख्य मंत्रीजी कहीं इधर उधर जाते हैं तो उनका प्रोग्राम मिनिट और सैकिंड तक, घण्टा तक लिपिबद्ध, अराईवल और डिपार्चर, इसके अन्दर सब कुछ होता है और यह नहीं है कि कहीं भी दूसरों की तरह चले गये या आ गए, ऐसा नहीं है।...

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : ऐसे प्रोग्राम बनने के बाद कैंसिल भी हुए हैं, पचासों बार ऐसा होता है।

श्री निरंजननाथ आचार्य : और कैंसिल के प्रोग्राम का भी दस्तावेज होता है। हो गया ना ? इसलिए मैं आपसे अर्ज करना चाहता हूं कि एस० पी० साहब नीमच गये, जीप से गये। एस. पी. साहब नीमच गये और वापिस आए, उसका भी एक एक इंच का प्रोग्राम होता है। जीप से जाते हैं तो उसका रजिस्टर में इन्द्राज होता हैं और एस. पी. की जिसकी इंटिग्रिटि के सम्बन्ध में आप खुद कायल हैं, उस एस. पी. के लिए कहा जाय कि उसको नीमच भेजा गया। इसलिए दास्तान नम्बर एक जो माननीय सदस्य ने कही कि एफ. आई. आर. मुख्य मंत्री लेते हैं, साजिशें होती हैं, एस. पी. नीमच जाता है और यह यादव जी भी शरीक होते हैं और एफ. आई. आर. लेते हैं यह आपका सारा भाषण आप पढ़ कर देखिए, उसके आधे हिस्से को तो दीमक खा गई.....

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : आप जैसी दीमक खा सकती है। यह बिल्कुल सही है, इसका जांच कमीशन बैठाइए, मैं सही साबित कर दूंगा।

श्री निरंजननाथ आचार्य : यह मैं जानता हूं, आप अन्त तक नहीं मानेंगे इसका मैं क्या करूं।

(श्री निरंजननाथ आचार्य)

अब रहा सवाल....

श्री सतीश चन्द्र अग्रवाल (जौहरी बाजार, जयपुर) : ९ तारीख को वे कहां थे, मुख्य मंत्रीजी उस दिन कहां थे आपके हिसाब से ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : यह सारा ही है, मैं आपका अन्त में बताऊंगा। मैं दावे के साथ कहता हूं.......

श्रीमुरलीधर व्यास (बीकानेर) : आप बता दीजिए ना।

श्री उमराव सिंह ढाबरिया : आपके साथ थे, आपकी गोद में बैठे थे, कहां थे मुख्य मंत्रीजी।

श्री निरंजननाथ आचार्य : गोद में तो बनेड़े वाले हैं।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : बनेड़े वाला आपकी गोद में हो सकता है लेकिन मुख्य मन्त्रीजी कहां थे यह बताइए।

(शोरगुल अश्रव्य)

श्री भैंरोंसिंह (किशनपोल, जयपुर) : अध्यक्ष महोदय, यह तो स्पष्टीकरण....

श्री गणपतिलाल वर्मा (मांडलगढ़) : यह जब विरोधी पक्ष वाले बोलते हैं तो हम चुपचाप बैठे रहते हैं, बोलते तक नहीं और जब इधर से बोलते हैं तो ये बीच बीच में रोकते हैं, तो हम भी इनको बोलने नहीं देंगे।

श्री भैरोंसिंह : अध्यक्ष महोदय, गृह मन्त्रीजी ने स्वयं ने इसको कोम्प्लीकेटेड बना दिया है। आप इस चीज को बता दीजिए कि उस दिन मुख्य मंत्रीजी कहां थे सारी चीज का पता लग जाएगा।

श्री निरंजननाथ आचार्य : अध्यक्ष महोदय, इसको मैंने नोट कर लिया है क्लेरिफिकेशन के रूप में।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : क्या नोट कर लिया है। इतनी बात नहीं कह सके कि ९ तारीख को कहां थे मुख्य मन्त्रीजी।

श्री निरंजननाथ चाचार्य : जब माननीय सदस्य क्लेरिफिकेशन मांगेंगे तो मैं उस समय सब कुछ बता दूंगा।

श्री अध्यक्ष : माननीय मन्त्री महोदय आखिर कितना समय लेंगे ?

श्री निरंजननाथ प्राचार्य : मैं बहुत थोड़े से समय में समाप्त कर दूंगा।

श्री अध्यक्ष : १५ मिनिट। १५ मिनिट में जो कुछ भी आपको सफ़ाई देनी हो, दे दें।

श्री उमरावसिंह डाबरिया : मैं आपसे कहता हूं कि यह बताइए कि मुख्य मंत्रीजी कहां थे ? यह सोने का कोई छोटा मोटा मामला नहीं है। मुख्य मन्त्रीजी ने कहा था कि वे इस सोने के मामले का जवाब देंगे तो क्लेरिफिकेशन उनके जवाब के बाद करूं और अगर होम मिनिस्टर ही जवाब देते हों तो यह कागज जो बहुत वेल्यूएबल डाकूमेंट है, मैं इस सदन में बताना चाहता हूँ कि मुखाड़ियाजी का इस मामले में कितना हाथ है और कहां कहां आप मौजूद हैं। इसमें एक एक बात मौजूद है। आपका स्टेटमेंट है।

श्री निरंजननाथ आचार्य : तो अध्यक्ष महोदय, वह दास्तान तो....

श्री अध्यक्ष : आप १५ मिनिट में समाप्त कर दें।

श्री निरंजननाथ आचार्य : एस० पी० को जो....

श्री भैरोंसिह : अध्यक्ष महोदय, माननीय गृह मन्त्रीजी जानबूझ कर मुख्य मन्त्रीजी की स्थिति साफ नहीं करना चाहते हैं और इस तरह से उन्होंने सारे मामले को अचम्भे में डाल कर उलझा दिया है। गृह मन्त्रीजी यह साफ क्यों नहीं कहते कि उस दिन मुख्य मन्त्रीजी कहां थे। इस सदन को कोंफिडेन्स में ले रहे हैं तो आप नोट क्या कर रहे हैं।

श्री निरंजननाथ आचार्य : मेरे पास तो सारे प्रोग्राम हैं।

श्री अध्यक्ष : आपको जितना भी कुछ बताना है वह १५ मिनिट में बता दें।

श्री निरंजननाथ आचार्य : यह सारी तफतीश गणपतलाल के केस के मामले में हुई। एस० पी० के पास रिपोर्ट पेश हुई और डिप्टी एस० पी० को आदेश दिया गया केस छोटी सादड़ी में रजिस्टर हुआ, एस० पी० के पेश हुआ, यह सारा दस्तावेज की बुनियाद पर पेश कर रहा हूं, इसमें आपके दास्तान का कोई जिक्र नहीं है....

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : ४०६ का मुकदमा चित्तौड़ में है या नहीं गणपतलाल के खिलाफ, यह बता दीजिए।

श्री अध्यक्ष : जो मन्त्री महोदय बताना चाहें पहले उसको सुन लें और उसके अन्दर जो सवाल पूछने हों उसको बाद में टेक–अप कर लें।

श्री निरंजननाथ आचार्य : अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन कर रहा हूँ कि यह सोना कहा गया कि पी० सी० सी० आफिस में चला गया, प्रस्ताव पास हो गया और कुछ बातें और हुई और फिर रेडियो पर आ गया। अब ६ तारीख की दरख्वास्त पर एफ० आई०आर० पेश होने पर १६ तारीख तक गणपतलाल कहां रहा, कहां वह रहा, उसकी हम तलाश करते रहे कि वह कहां रहा ओबसकेंडर की हालत में। मैं अब इस प्रश्न पर नहीं कह कर जो कहा गया कि वह पी० सी० सी० आफिस में गया, और जैसा माननीय हरिदेवजी ने कहा कि बिलकुल गलत है, निराधार है, मैं फिर आज कहता हूं कि वह निराधार है, गलत है, मिथ्या है। मैं उसके बारे में निवेदन करना चाहता हूँ कि गणपतिलाल ने तारीख १६ को एक दरख्वास्त कलेक्टर के यहां प्रस्तुत की। उसने कहा कि सोना मैं बरामद कराना चाहता हूं और उस सोने से मैं शास्त्रीजी को तोलना चाहता हूँ। कलेक्टर के यहां यह दरख्वास्त पेश हुई ...

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : किस ने दरख्वास्त दी ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : गणपतलाल ने यह दरख्वास्त कलेक्टर के यहां पेश की, और मैं निशान्देही करना चाहता हूँ कि यह आदमी ओबस्केन्डर था, पुलिस पीछे पड़ी हुई थी, कोई चारा इसने नहीं देखा तो अदालत

(श्री निरंजननाथ आचार्य)

में आकर दरख्वास्त पेश की और हम इसके पीछे हो गए और खेतों में जाकर के इस गणपतलाल ने ४४ ईटें खेत से बरामद कराई और वह खेत भी जहां बरामदगी हुई, खोदा गया। पंचनामा तैयार हुआ, इसके लिए जो खुदाई हुई वह काफी गहरी खुदाई हुई और खुदाई भी उस जगह हुई जहां पर घास उगी हुई थी, उस खेत को खोद कर यह ४४ ईटें वहां से निकाली गई। अब मैं यह अर्ज करना चाहता हूँ कि आप पी० सी० सी० के ऑफिस में आइए, आपके बयान के माफिक ४४ इटें और हरएक ईंट का वजन तीन किलो, यहां बरामद होकर यहां पर रह गई और एफ० आई० आर० में जिक्र है ५१ ईंटों का और उसमें जिक्र है कि ५१ ईंटें हमने इसको दी, गणपतिलाल को और सात ईंटें लौटाई और बाकी की मुलिजम ने रखली। अब इस हिसाब से बाकी की बरामदगी, इन ईंटों की बरामदगी बाकी रहती है। अब पी० सी० सी० के ऑफिस में हैं, अध्यक्ष महोदय, ये क्या लेकर गए? कैसे वे ईंटें लेकर गए, कैसे प्रस्ताव पास हुआ और इन ईंटों के सम्बन्ध में बातचीत हुई। मैं कहता हूँ कि इस बरामदगी के बाद यह ४४ ईंटें बकौल आपके बयान के जो पी० सी० सी० में आई तो यह कैसे सम्भव हो सकता है। यह प्रस्ताव पास करने की बातें और ये पी० सी० सी० ऑफिस में ईंटें आने की बातें बिल्कुल मिथ्या हैं, निराधार हैं और फेब्रिकेटेड हैं।

इसके बाद अध्यक्ष महोदय, बाकी जो किलोग्राम सोना जो बाकी है वह तीन आदमियों के पीछे पड़ने पर और जो बरामदगी करनी थी उसको कर दी, १० किलोग्राम और बरामदगी हुई ये ४४ प्लस १० और कुछ बाकी रह गये, बाकी रह गये उनके संबंध में हमारी कोशिश चल रही है....

श्री मुरलीधर व्यास : आगे....

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य मंत्रीजी को बोलने दीजिये।

श्री निरंजननाथ आचार्य : हम इसकी बरामदगी करें यह हमारी कोशिश रही है। मैं एक तथ्य माननीय सदस्यों के सामने रखना चाहता हूं। गणपतलाल आजाद था, जमानत पर रिहा किया हुआ था पर वह उद्विग्न था। पुलिस के आतंक का मसला रख दिया। एडजोर्नमेंट मोशन भी पुलिस के आतंक के संबंध में आया है, पुलिस आतंकित कर रही है। वह जमानत पर छोड़ दिया गया था पर उस गणपतलाल ने अनोखे सर्कम्सटान्सेज़ पैदा कर दिये बरामदगी से बचने के लिये। उसने काम अनोखा किया। उसने अदालत में जाकर अपनी सीक्योरिटी या जमानत को खींच लिया और अपने आपको सरेन्डर कर दिया और अदालत से उसे जुडिशियल लोक-अप में ले लिया। मुलजिम सरेन्डर होकर अदालत के सामने चला गया और जुडिशियल कस्टोडी में ले लिया गया तब तो उसमें बरामदगी मुश्किल हो गई उसने बरामदगी पर असर डाल दिया और बरामदगी नहीं हो सकी। यह केस पेन्डिग बीफोर दि कोर्ट अंडर सेक्शन ४०६ है। माननीय सदस्य मैं बड़े एतिहात से बोल रहा हूं। सिद्धान्ततः शहादत का विश्लेषण

Page No.18

(श्री निरंजननाथ आचार्य)

नहीं करता क्योंकि जो केस अदालत के सामने है उसको इस प्रकार यहां रखने से अदालत पर क्या असर पड़ता है तो कंटेम्पट और सेंक्टिटि ऑफ कोर्ट के विपरीत होता है। सारे माननीय सदस्यों ने ऐसा किया जिससे गजब हो गया।

मैं अर्ज कर रहा हूं इस बीच कहा जाता है कि सोने से तौलने की खबर ऑल इंडिया रेडियो पर आ गई, कैसे आया शास्त्रीजी को तोलने के प्रश्न पर खयानत के सोने से कैसे तोला जा रहा था, इसमें बड़ा फर्क है। मैं तहकीक कर रहा हूं कि राजस्थान के डी. पी. आर. (डाइरेक्टर ऑफ पब्लिक रिलेशन्स) ने कोई विज्ञप्ति इस संबंध में, शास्त्रीजी को सोने से तोलने की तो नहीं निकाली। अब प्रश्न उठता है कि यह विज्ञप्ति कैसे हो सकती है? गणपतलाल, जो आदमी आपके बकौल शास्त्रीजी को सोने से तोलने के बहाने से बरामदगी से बचने की कोशिश करता है, उसने यह कोशिश की कि मुझ पर पुलिस का आतंक है, परेशान हूं, २ तारीख को वह दिल्ली जाता है और १६ तारीख को वापिस आया उसके दरमियान दिल्ली में वह शास्त्रीजी से मिला ऐसा ज्ञात हुआ है ....

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : यह बिल्कुल झूठी बात है, शास्त्रीजी पर अन्याय है........

श्री निरंजननाथ आचार्य : पी. टी. आई. ने........

(शोरगुल)

पी० टी० आई० ने खबर का प्रकाशन किया। गणपतलाल ने दिल्ली में क्या किया क्या नहीं किया। लेकिन राजस्थान सरकार का इस प्रश्न में कोई हाथ नहीं है, हमारे डी. पी. आर. का हाथ नही है इसलिये मैं अर्ज करना चाह रहा हूं कि लांच्छन लगाने से पहले आप जरा देखें। यह मै जानता हूं कि आप बहुत परेशान हैं मुख्य मंत्रीजी की वजह से या लड्ढाजी की वजह से या मेरी वजह से....

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : न मै मुख्य मंत्रीजी से परेशान हूं, न तुमसे परेशान हूं, और न किसी और से परेशान हूं

श्री निरंजननाथ आचार्य : मैं ढाबरिया जी के लिये बनेड़ा में १० दिन तक कैंप लगाकर बैठा रहा और वे कुछ कपड़े माथे पर रख कर फिरे और लोगों को बहकाने की कोशिश की लेकिन मेरे रहते वहां नहीं आ सके। आखिर में जनता ने जो निर्णय लिया वह साफ है, गांव में उन्होने जोग रमाया लेकिन जनता ने उनको साफ कह दिया यह सब मेरी वजह से, मुख्य मंत्रीजी की वजह से और लड्ढाजी की वजह से है। ये मुझको तो अपवाद समझते हो कि शायद किसी दिन दोस्ती कर बैठे लेकिन जिस अदालत का कंटेम्प्ट किया है, शहादतों को टेम्पर किया है, ये ऐसी चीजें हैं, यदि हम उदारचित हो जांय वह अलग बात है बाकी यह प्रश्न सीरियसली लिया जा सकता है। इस प्रश्न को यहीं खत्म करके अब मैं डागाजी के प्रश्न पर कहना चाहता हूं।

(श्री निरंजननाथ आचार्य)

सेठ डागा बम्बई से यहां आये। बम्बई जेल के अस्पताल में वे बीमार थे, वे यहां के रहनेवाले हैं बीकानेर के, उन्होंने वहां की गवर्नमेंट को मूव किया कि मैं राजस्थानी हूं और बीमार हूं इसलिये, मुझे राजस्थान की जेल में भेज दिया जाय । यह ट्रान्सफर ऑफ कन्विक्ट्स एक साधारण समस्या है। यहां से पंजाब में भेजते हैं पंजाब से यहां पर भेजते हैं इसलिये यह कहना कि भूतपूर्व जेल मंत्री का इस में हाथ था, गलत है। आपकी जवान है आप खूब कहिये ...

श्री राधाकृष्ण गोयल (टोंक) : और भी कोई ऐसा इन्स्टान्स है ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : बहुत हैं। आप भी रिकमन्ड करिये पंजाब भिजवाने के लिये वहां भेज दूं और वहां से यहां बुलवा लूं ।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : कांग्रेस ने मोहन पूनमिया को बीकानेर में रखा । कई बार कहा गया कि इनको जयपुर भिजवादो, क्यों नहीं भेजा ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : वह मामला दूसरा था ।

एक अच्छे समझदार व्यक्ति को शिविर में रखा गया। हम वहां पर पॉवर लूम्स लगाना चाहते थे, शिविर में कई प्रकार के कार्यक्रम चलते हैं, दरियें बुनी जाती हैं और भी कई प्रकार के कार्यक्रम होते हैं; उनके, इन्डस्ट्रियलाइज्ड क्षेत्र के एक्सपीरियेन्स का फायदा शिविरवासियों को मिले तो उनका फायदा हम लेना चाहते थे । मैं कहता हूं कि जब जेल रिफॉर्म्स एक्ट में प्रावधान है, उस आदमी को यहां भेजा गया, उसने योगदान किया, उसकी एक झोंपड़ी बनाकर रहने की इजाजत दी गई तो प्रश्न उठा दिया कि बंगला बना दिया। हर शिविरार्थी को अधिकार है कि अपनी कुटिया में रहे। उसने ४०००) लगाकर झोंपड़ी बनवाली, प्लास्टर करवा दिया। 'ए' क्लास का कैदी होने से वह उसमें रहने लगा तो आप की आंखों में खून आ गया क्योंकि वह सेठ है; एक्स फाइनेन्स मिनिस्टर रहा है, प्रतिष्ठित रहा है ।

श्री रामानन्द अग्रवाल : आप इस तरह का प्रिसीडेन्स कायम करना चाहते हैं कि कोई मिनिस्टर चोरी करले, गबन करले या कल कोई आप जैसों को जेल में भेजदे तो आप उसके लिये प्रिसीडेन्स कायम करना चाहते है ।

श्री निरंजननाथ आचार्य : 'ए' क्लास प्रिज़नर 'ए' क्लास की हैसियत से रह सकता है ।

श्री अध्यक्ष : 'ए' क्लास प्रिज़नर बनाने का क्या आधार है ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : वे बोम्बे में 'ए' क्लास हुए ।

श्री मानिकचंद सुराणा : यह तो मूंदड़ा कांड का मुलजिम है ।

श्री रामानन्द अग्रवाल : आपने उसके वहां टेलीफोन लगाया या नहीं, उसके पास कार थी या नहीं, उसको जोधपुर ले गये या नहीं ?

श्री मानिकचंद सुराणा : अध्यक्ष महोदय,........

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा (नसीराबाद) : कैदी कैदी ही है, ए. बी. और सी. क्लास रूल्स के मातहत होती है लेकिन किसी को बंगला या झोंपड़ी बनवाकर रहने का अधिकार नहीं हो सकता।

(हियर–हियर)

श्री निरंजननाथ आचार्य : अध्यक्ष महोदय, उसके पास गाड़ी नहीं थी, ऑर्डिनेरी 'ए' क्लास प्रिज़नर जैसे रहता है वैसे रह रहा है ।

श्री भैरोंसिंह : गृह मंत्रीजी एक स्पष्टीकरण करदें....

(शोरगुल)

श्री हरिराम चौहान (तिजारा) : अध्यक्ष महोदय, जो जेल के रूल्स हैं उनके अनुसार कार, बंगला या इस तरह की सहूलियत नहीं दे सकते। आप ताज्जुब करेंगे उसको बंगला दिया गया, कार दी गई, टेलीफोन दिया गया। मैंने मुख्य मंत्रीजी को यह बात लिखी कि मुझे घूमने की इजाजत दीजिये। मुझे विधान सभा का मेम्बर होते हुए भी घूमने की इजाजत नहीं दी गई, इस बेशर्म सरकार ने मुझे घूमने को इजाजत नहीं दी।

श्री भैरोंसिंह : एक स्पष्टीकरण आप करदें। क्या यह कायदा है कि जिसको जेल की सजा हो जाय उसको एक तिहाई सजा काटने से पहले ओपन जेल में नहीं भेजा जा सकता? क्या यह सही है कि जेल के कई कैदियों, जिन्होंने ओपन जेल में भेजे जाने की मांग की थी, उनकी इस मांग को जेल आथोरिटी ने यह कह कर अस्वीकार कर दिया कि उन्होंने सजा का एक तिहाई हिस्सा अभी नहीं भोगा है इसलिये उनको नहीं भेजा जा सकता?

श्री मानिकचन्द सुराणा : क्या यह भी सही है कि माननीय लालबहादुर शास्त्री की जोधपुर विजिट के समय, जब जोधपुर की जेल का निरीक्षण करने के लिए वह बम्बार्टमेंट के बाद आये थे, इन डागाजी को एक दिन के लिए जोधपुर भेजा गया था ताकि प्रधान मन्त्री की विज़िट की वजह से एक महीने का रेमीशन इन डागा को मिल सके?

श्री निरंजननाथ आचार्य : इसके संबंध में तो....

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : मुझे मालूम नहीं है।

श्री निरंजननाथ आचार्य : आपकी तो मुझे बहुत मालूम है।

मैं निवेदन करता हूँ कि एक तिहाई कैद काटने का रूल है–यह ठीक है। लेकिन जेल मेन्युअल के अन्दर रूल्स शिविरार्थी के सम्बन्ध में हैं और उनमें यह है कि किनको इसमें एन्टर किया जाय, इस शिविर में यह प्रिविलेज है, वहां जाने पर उनको आजादी होती है इधर उधर घूमें–फिरें, अपनी मजदूरी करें, खायें-पीयें और आनन्द से रहें। इसमें कॉन्फीडेंस का प्रश्न है। वैसे एक तिहाई कैद इन्होंने जेल में नहीं काटी।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : फिर क्यों रखा?

श्री निरंजननाथ आचार्य : अब कह रहा हूं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : क्या कह रहे हैं?

श्री निरंजननाथ आचार्य : आगे नहीं कहने देंगे?

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : वह क्योंकि एक्स–मिनिस्टर थे इसलिए उनको वहां पर रखा है। एक दिन आने वाला है जब आप और दूसरे सब एक्स–मिनिस्टर बन जायेंगे। इसलिये यह आपने कराया है।

श्री निरंजननाथ आचार्य : इसमें उनका गुड कन्डक्ट भी है।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : जालसाजी है।

श्री निरंजननाथ आचार्य : इस पोइन्ट की वजह से....

श्री रामानन्द अग्रवाल : लोगों को लूट लिया है।

श्री निरंजननाथ आचार्य : यह ठीक है कि रूल्स इन मेकिंग हैं, रूल्स बने नहीं है। इसलिए डिस्क्रीशनरी पॉवर से एक तिहाई सजा पूरी न होते हुए भी विशेष परिस्थिति में यदि किसी से ज्यादा सहयोग मिल सकता है शिविर में तो वह कर सकते हैं। मैं बुलन्दगी से कह सकता हूँ कि उनको वहां भेजा गया है और इसमें कोई शक शुबाह नहीं है।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : क्योंकि शक शुबाह नहीं है इसलिए वापिस भेजा गया या इसलिए कि उसने लाखों रुपये चन्दे में नहीं दिये इसलिए वापिस भेजा गया है ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : यह तो बता दिया है कि वापिस भेजा है। अब बीमारी अच्छी होने के बाद क्योंकि उससे काम लेना है इसलिए उसको वापिस भेजेंगे। उससे शिविर में काम लेना है।

श्री विजयसिंह झाला (नाथद्वारा) : तब तक आप नहीं होंगे।

श्री मानिकचन्द सुराणा : मैंने रेमीशन का सवाल उठाया उसका जवाब नहीं दिया। जब प्रधान मंत्री जोधपुर की विजिट पर आये थे तब एक विशेष तौर से एक दिन के लिए डागा को वहां भेजा गया ताकि प्रधान मंत्री की विजिट की वजह से एक महीने के रेमीशन का फायदा मिल सके।

श्री निरंजननाथ आचार्य : यह जानकारी मुझे अभी नहीं है।

श्री मानिकचन्द सुराणा : जानकारी है, अध्यक्ष महोदय, भेजा है। मैं कहना चाहता हूँ कि आई. जी. पी. की गाड़ी में बैठ कर मुलजिम जयपुर से जोधपुर रात को गया है।

श्री निरंजननाथ आचार्य : मुझे इसकी जानकारी नहीं है।

श्री मानिकचन्द सुराणा : २३ तारीख को जयपुर से जोधपुर लेकर गये हैं।

श्री भैरोंसिंह : मंत्री महोदय, जिन्होंने वापिस भेजा, वह मेडिकल ग्राउन्ड पर नहीं भेजा है बल्कि इस कारण से भेजा है कि इन्होंने एक तिहाई जेल नहीं भोगी है। इस प्रकार के एक आवेदन पत्र के ऊपर सरकार की ओर से यह दलील दी गई है....

श्री निरंजननाथ आचार्य : मैंने इसको जेल में नहीं भेजा। मेडीकल ग्राउन्ड पर, क्योंकि वह बीमार था, इसलिए जेल में जाने के लिए कहा। वहां इसका इलाज हो रहा है।

श्री भैरोंसिंह : मैं जो पूछ रहा हूं उसका जवाब दीजिए। क्या यह सही है कि जब जेल में भेज दिया गया तो उसने एक आवेदन पत्र दिया कि मुझे ओपन जेल में रखा जाय। मेरे साथ में यह कन्डीशन है, जो मैंने बंगला वहां बनाया है, वह मेरी जेल भुगतने के बाद में बंगला सरकार का होगा। यह कन्डीशन होते हुए भी मुझे जेल में भेज दिया गया है यह मेरे साथ अन्याय किया गया है। उस आवेदन पर यह लिख कर दिया है कि क्योंकि अभी

(श्री भैरोंसिंह)

तक एक तिहाई जेल नहीं भोगी है इसलिए ओपन जेल में नहीं रख सकते ।

श्री निरंजननाथ आचार्य : सरकार से अर्थ मंत्री का है और मंत्री यानि मेरे पास कोई एप्लीकेशन नहीं आई ।

श्री अध्यक्ष : सरकार से मतलब तो आपके एक सिपाही से भी है, जो आपके यहां काम करता है ।

श्री निरंजननाथ आचार्य : न मेरे पास प्रार्थना—पत्र आया, न मुझे जानकारी है ।

श्री भैरोंसिंह : अध्यक्ष महोदय, सच झूठ का पता तो अभी लग जायगा, आप जेल से वह फाइल मंगा कर देख लें, उसमें इस प्रकार का आदेश है या नहीं ।

श्री अध्यक्ष : मैं सोचता हूँ निश्चित रूप से इसमें जो कार्यवाही की गई है वह एक सरकार का बहुत खेदजनक निर्णय था ।

कुछ माननीय सदस्य : इस्तीफा दो ! इस्तीफा दो ! डूब मरो !!!

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य !

श्री श्रवण लाल (हिन्डौन– सु.): इन्हें चुल्लू भर पानी में मर जाना चाहिये ।

श्री अध्यक्ष : खेदजनक इसलिये और भी ज्यादा बन जाता है कि जिस व्यक्ति के संबंध में है वह अपनी एक विशेष अवस्था रखता है । उसको हमारे देश का जो सबसे बड़ा न्यायालय है, उसने दोषी साबित किया है । इसके अलावा जिस प्रकार यह कहा–फिर वापिस भेजेंगे, यह करेंगे । मैं केवल यह निर्णय करूंगा, निवेदन करूंगा कि सारी परिस्थितियों पर विचार करें, कोई ऐसा गलत काम न करें आवेश में आकर जिससे हमको, आपका इस प्रकार जो अभी क्रिटिसिज्म हुआ है, उसका फिर सामना करना पड़ेगा । (विरोधी पक्ष से – हियर हियर) और जो भी आप करें, आपने स्वयं स्वीकार कर लिया है अभी तक नियम नहीं है इस प्रकार के, इसलिए कोई भी काम करें भविष्य में इस प्रकार करें कि प्रिसिडेंस गलत न बने और नियमानुसार हो और सरकार की प्रतिष्ठा और आपकी पार्टी की प्रतिष्ठा बन सके ।

(विरोधी पक्ष से – हियर–हियर)

श्री निरंजननाथ आचार्य : अध्यक्ष महोदय, मैं विश्वास दिलाता हूं ऐसी कोई बात नहीं होगी । जो कुछ भी होगा प्रतिष्ठा के अनुकूल होगा । मैं विश्वास दिलाता हूं ऐसी परिस्थितिओं को देखते हुए संतुलित स्थिति में ही यह होगा ।

कुछ माननीय सदस्य : डूब मरो ।

श्री कृष्णकुमार गोयल (कोटा) : अध्यक्ष महोदय के आसन से इतना बड़ा अविश्वास इस सरकार के प्रति व्यक्त हुआ है- इससे ज्यादा खुशी की बात हो नहीं सकती ।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : फिर भी यह यहां बैठे हुए हैं, शर्म नहीं आती ।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह (आसपुर) : अध्यक्ष महोदय, दो शब्द जो आपने कहे उसके बाद मुझे कुछ कहने की आवश्यकता नहीं थी लेकिन एक एक शब्द जो मंत्री महोदय के मुखारविन्द से निकले, मैं समझता हूं, वह कोई तथ्य, कोई रूल, किसी के आधार पर नहीं हैं । एक एक शब्द में बदबू आ रही है इस बात की बदबू है, रियायत और भ्रष्टाचार की बदबू है और उसके बाद जो आसन से आपको उपहार प्राप्त हुआ है, उसके बाद आपको चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए ।

श्री अध्यक्ष : अब मैं समझता हूं, कार्यवाही चालू करें ।

श्री हरिराम : आप संक्षेप में बोलें । केवल १५ मिनिट ।

श्री हीराभाई : अध्यक्ष महोदय,....

श्री अध्यक्ष : हीराभाई ! कृपया ...

श्री हीराभाई : मैं जानना चाहता हूं, माननीय मंत्रीजी से जानना चाहता हूं वह थानेदार ने पिटाई की उसके बारे में क्या जवाब है ?

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य ! अभी इस पर विचार न करें ।

श्री फतहसिंह (चौहटन) : बोर्डर के बारे में तो कुछ कहें ।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : मेरे बारे में जो कहा है उसके लिए जवाब देने को मुझे टाइम दिया जाय ।

श्री अध्यक्ष : टाइम का सवाल नहीं है, आपने कहा और उन्होंने भी कहा ।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : जिस तरह जेल के मामले में आपने इनको ताड़ना दी है, मेरे मामले में तो उससे भी ज्यादा शब्दों में आपको ताड़ना देनी पड़ेगी, मेरी बात आप सुनेंगे उसके बाद ।

श्री अध्यक्ष : उसके लिए समय नहीं है, माननीय सदस्य !

श्री हरिराम चौहान !

श्री हरिराम चौहान : अध्यक्ष महोदय,....

श्री विजय सिंह झाला : मुगन बिगड़ गया, आचार्य जी अब ६७ में नहीं आ सकते ।

श्री हरिराम चौहान (तिजारा-सु०) : मैंने माननीय मंत्री जी की तकरीर सुनी और कांग्रेस के जो दूसरे माननीय सदस्य हैं उनकी भी तकरीर सुनी । अब मैं इस अविश्वास के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं । मैंने जो भी कांग्रेस की तरफ से माननीय मंत्री महोदय की तकरीर हुई उनको ध्यान से सुना । वह यह चाहते थे कि इस सरकार को हम अपोजीशन के लोग भी नेकचलनी का प्रमाण पत्र दें । हम यह नहीं कर सकते क्योंकि बीस साल का जो इतिहास है,२० साल की जो कांग्रेस सरकार की कारगुजारियां हैं वह हमको मजबूर करती हैं कि हम इस सरकार को किसी भी तरह से नेकचलनी का प्रमाण पत्र न दें । मैं इसके अलावा यह भी कहना चाहता हूं कि वह बार बार यह बात कहते हैं कि राजस्थान की जनता ने हमको चुन कर भेजा है, राजस्थान की जनता का

(श्री हरिराम चौहान)

हममें अविश्वास नहीं है। यह तो महज चुनाव के दृष्टिकोण से हमारे यहां पर हम पर अविश्वास किया जा रहा है, क्योंकि चुनाव नजदीक हैं इसलिए इस तरह का वातावरण, इस तरह का माहौल बनाया जाय। मैं निश्चित रूप से यह बात कहना चाहता हूं कि राजस्थान की जनता को इस कांग्रेस की सरकार ने बीस साल के अन्दर, इस बीस साल के अन्दर जितना भी देश को एक बर्बादी और कंगाली के कगार पर खड़ा किया है, उतना शायद ही दुनियां की किसी सरकार ने बीस साल के अन्दर किया होगा।

(१० म० पू०)

अध्यक्ष महोदय, मैं यह बात भी कहना चाहूँगा कि आज आप राजस्थान की जनता की बात करते हैं। आप कहते हैं कि हममें जनता का विश्वास है। मैं आपको गारन्टी के साथ कह सकता हूँ कि आपका आपके मन्त्री मण्डल में भी विश्वास नहीं है। मैं कहना चाहता हूँ कि एक बार आपके मन्त्री मण्डल के एक सदस्य हैं उनसे मुझे मिलने का मौका मिला जिस समय कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव हो रहे थे। श्री कुम्भाराम जी जो मन्त्री मण्डल में है उन्होंने कहा कि मेरे बारे में कहा जाता है कि मैंने छोरे उड़वाये, मैंने गुड़ खाया है, मैं डाकू हूँ। उसके बारे में उन्होंने कहा कि मैं यह कहना चाहता हूं कि जिसके मन्त्री मण्डल में मैं हूं जिसके लिए यह कहा जाता है कि इस तरह का डाकू और गुड़ खाने वाले और छोरे उड़ाने वालों को मन्त्री बना रखा है इसलिए वे मेरे से भी बड़े डाकू हैं, इस तरह से वे मेरे से भी बढ़ चुके हैं। इस तरह से उन्होंने ग्राम जनता में और ग्राम लोगों में जहां काफी सदस्य मौजूद थे उनके सामने यह बात कही। तो मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ कि उनके खुद के लोगों में उनका विश्वास नहीं है।

एक माननीय सदस्य : आप दोनों का कहना सही है।

श्री हरिराम चौहान : आप ग्राम जनता की बात तो छोड़ दीजिए। ग्राम जनता को आप पर विश्वास है या नहीं। ग्राम जनता के बारे में मैं आपसे निवेदन करूं कि आप किसानों के बारे में बड़ी बड़ी डींगें हांकते हैं। मन्त्री महोदय ने कहा कि हमने १२०० गांवों में बिजली दी है। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि आपने २० वर्षों में १२०० गांवों में बिजली दी है और राजस्थान में कुल २५००० गांव है। इस हिसाब से राजस्थान के सारे गांवों में कितने समय में बिजली आवेगी इसका मैंने हिसाब लगा कर देखा तो ४०० सालों में सब जगह बिजली इस हिसाब से आवेगी। फिर यह सरकार कहना चाहती है कि हमने १२०० गांवों में बिजली लगाई। यह आपका २० वर्षों का काला इतिहास है जो आपके सामने है। अगर आप गांव गांव में बिजली चाहते हैं तो आपको ४०० साल का समय इस हिसाब से चाहिए और आप ४०० वर्षों तक राजस्थान की जनता की छाती पर मूंग दलना चाहते हैं।

(१०.०२ म. पू.)

(राव श्री नारायणसिंह, उपाध्यक्ष, पदासीन)

यह कभी भी जनता आपको बरदास्त नहीं करना चाहती।

(श्री हरिराम चौहान)

जहां तक किसानों की बहबूदी का प्रश्न है मैं यह कहूंगा कि जब आपके पड़ोसी देश पंजाब में चाही जमीन का लगान ३) रु० बीघा है और यह सरकार राजस्थान की जो इतनी बड़ी डींग मारती है कि हमने किसानों की हालत सुधारी है यहां पर १६) रु० बीघा का लगान है। इन किसानों के लिए आप कहते हैं कि हमने उनकी हालत को सुधारा है। दूसरी तरफ अगर किसी रिपोर्ट की बात कहें तो वे खुद कहते हैं कि मैं खुद दिमाग रखता हूँ। हिन्दुस्तान के आलाह आलाह दिमाग रखने वालों की कमेटी ने रिपोर्ट दी है उस पर भी आप कहते हैं कि राजस्थान में लोगों की हालत सुधरी है। उस कमेटी ने अपनी रिपोर्ट दी है उसमें लिखा है कि गरीब ज्यादा गरीब हुआ है और अमीर ज्यादा अमीर हुआ है। आप आज क्या कर रहे हैं अमीरों को प्रोत्साहन दे रहे हैं। आप देखेंगे तो आपको मालूम होगा कि ७ परि–वारों में ६५ परसेन्ट की पूंजी है और बिड़ला जिसके पास सन् १९४७ में २६ करोड़ की पूंजी थी आज उसके पास २६० करोड़ की पूंजी है। हां, इस हिसाब से पूंजी बढ़ी है। तरक्की हुई है तो किनकी तरक्की हुई है, मन्त्रीजी की तरक्की हुई है और उनके बाद उनके परिवार वालों की तरक्की हुई है। उनके पास आज दो हजार से कम बीघा जमीन नहीं है। इससे पहले आपको किसी के पास जमीन नहीं मिलेगी। सब मंत्रियों ने जमीनें खरीदी हैं, उन्होंने अपनी अपनी कोठियें बनवाई हैं और बनवा रहे हैं। उनकी तरक्की अवश्य हुई है, उनके परिवार की और उनके चाटुखोरों की और अगल बगल में चलने वाले लोगों की अवश्य हम कह सकते हैं कि तरक्की हुई है। अगर उनकी तरक्की को देख कर वे यह कहना चाहें कि यह राजस्थान की जनता की तरक्की है तो मैं नहीं समझता कि यह किस प्रकार की राजस्थान की जनता की तरक्की है।

आज राजस्थान में हरिजनों की क्या हालत है? भूमिहीन किसानों की क्या हालत है? आप उनको काम नहीं दे सकते जमीन नहीं दे सकते। उनके पास रोटी के गुजारे का कोई साधन नहीं है। आज भी मेरे पास गंगानगर से चिट्ठी आई है और वे लिखते हैं कि गंगानगर में गरीबों में भूखमरी है। वे लोग वहां पर मतीरे खा खा कर अपना गुजारा करते हैं। आप देखिए, मतीरे खा खा कर अपना गुजारा करते हैं। मान-नीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह निश्चित तौर से कह सकता हूँ कि कुछ नहीं सैकड़ों हरिजन मांग मांग कर अपना गुजारा करते हैं। इसका खास कारण यह है कि उनके पास कोई खेती बाड़ी का साधन नहीं है।

इसी प्रकार बिजली के लिए और पीने के पानी के लिए कहूँगा। आज आपको २० वर्ष हो गए लेकिन अभी तक आप पीने के पानी की व्यवस्था उनके लिए नहीं कर सके और आप यह नाज करते हैं कि जनता हमारे साथ है यह कैसे उचित हो सकता है। अगर जनता आपके साथ होती तो आपके ११ मन्त्रियों में से ७ मन्त्री नहीं हारते। उस पर भी अगर सरकार के मन्त्री यह कहें कि आपको मेजोरिटी वोट नहीं मिले। ठीक है, फिर भी ६० परसेन्ट वोट जनता ने आपके खिलाफ दिये हैं और फिर भी आप यह कहते हैं। आपने चुने हुए व्यक्तियों में

(श्री हरिराम चौहान)

से कुछ लोगों को गाजर मूली और मतीरे की तरह से खरीदा। जितने भी विरोधी आपकी तरफ आये वे विरोधी पक्ष से जीत कर आए। अगर वे इस्तीफा देते या आप उनसे इस्तीफा दिलाते और फिर वोट दिलाते तो आपको मालूम होता। अगर आप में हिम्मत होती तो इस प्रकार से करके दिखाते। आज आप कहते हैं कि हमने १२०० गांवों में बिजली पहुंचाई है अगर इसी पर आपको वोट मिलते तो आपको चाहिये था कि उन सदस्यों से इस्तीफा दिला कर फिर से चुनाव लड़ाते।

मैं यह कहूंगा कि आज हमारी अर्थ व्यवस्था जो सारी की सारी अमेरिका पर चलती है, आज अगर सरकार को अमेरिका से कर्जा नहीं मिले तो क्या हालत हो। हमारी सरकार कोई भी योजना नहीं चला सकती। कोई सरकार की स्कीम नहीं चल सकती। मंत्रियों को तनख्वाह नहीं मिल सकती, बिजली का काम नहीं हो सकता। आज अमेरिका आपको कर्जा दे दे और उस पर आप अपना काम चलाए और फिर आप यह कहें कि हमारी साख है इसलिये हमें पैसा मिलता है। मैं यह कहूंगा कि फिर आप बोहरों के लिये क्यों कहते हैं बोहरा भी यही बात कहता है। फिर आप क्यों कहते हो कि वह शोषण करता है। इसलिये यह बात कहना कि जब हमारी सारी की सारी अर्थ व्यवस्था बाहर के मुल्कों पर निर्भर है, आप ऐसी व्यवस्था की बात को छोड़िये। आज हमारी रोटी भी अमेरिका पर निर्भर है। जब अमेरिका हमको नाज देगा तो हमारी रोटी हमको मिलेगी। मैं यह कहूंगा कि आपने २० वर्षों में इस प्रकार कंगाली में ला कर खड़ा कर दिया है कि उसकी कोई सीमा नहीं फिर भी मंत्री महोदय यह कहें कि हम तरक्की करते जा रहे हैं और जनता हमारे साथ है, वह तो आपको ५ महीने के बाद मालूम हो जावेगा कि वास्तव में जनता किसके साथ है। लेकिन यह कह सकता हूं कि भारत सरकार ने देश को अमेरिका के गिरवे रख दिया है। आज अगर अमेरिका के बन्दरगाहों में हड़ताल होती है, वे कोई इस सरकार के नौकर नहीं है, हजारों समझौते हों जावे मगर फिर भी अगर वे हड़ताल कर देते हैं तो हमारे यहां पर रोटी का मसला खटाई में पड़ जावेगा। हमारे यहां पर भूखमरी पैदा हो जावेगी। इतना ही नहीं जो भी अनाज अमेरिका से प्राप्त होता है वह भी शहरों में दिया जाता है। गांवों में कितने ही भूखे नंगे किसानों को जरूरत होते हुए भी उनको गेहूं वहां पर नहीं मिलता है। गांव वालों को चीनी नहीं मिलती है।

श्री चन्दनमल बैद (यातायात मंत्री) :

यह तो कई दफे सुन लिया।

श्री हरिराम चौहान : और जब तक आपको अक्ल नहीं आवेगी तब तक सुनाना पड़ेगा। उपाध्यक्ष महोदय, यहां पर जब भी उन पर अच्छी चोट पड़ती है तो कहीं न कहीं चरपराहट होती है।

श्री मानिकचन्द सुराणा : इनका मतलब यह है कि यह गेहूं और चीनी की बात क्या सुनाते हो आप इनको यह सुनाओ

(श्री मानिकचन्द सुराणा)

कि कहीं से १० लाख खा गये और कहीं २० लाख, ऐसी बातें सुनाओ।

श्री हरिराम चौहान : उपाध्यक्ष महोदय, मेरे पास यह मसाला भी बहुत है। क्योंकि बहुत से माननीय सदस्यों ने इन बातों पर जोर दिया कि कोई सोना खा गया कोई गुड़ खा गया। तो कोई सोना खा रहे हैं और कोई गुड़ खा रहे हैं और कोई नई बात बतावें। ये मंत्रीलोग हीरे पन्ने और जवाहरात और चरने लग जायेंगे। मैं पर्सनल अटैक करने की बात नहीं करता ...

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

श्रीमान्जी, यह घंटी आपको याद नहीं रहती या मेरी बदकिस्मती है ?

श्री उपाध्यक्ष : मुझे खूब याद रहती है, ५ मिनिट पहले बजा देता हूँ। आप इससे इतने चौंकते क्यों हैं ? यह तो सांकेतिक है।

श्री हरिराम चौहान : उपाध्यक्ष महोदय, इनको नई चीजें नहीं लगतीं, लोगों को खाने को अनाज नहीं मिले, चीनी नहीं मिले, लोगों के अन्दर भुखमरी है, लोग आज घास खा कर गुजारा कर रहे हैं, ये बातें इनको नई नहीं लगतीं। ये तो कहते हैं कि इन चीजों के लोग आदी हो गये हैं। जहां तक मंत्री मण्डल का सवाल है मैं नहीं समझता कि कहीं इस प्रकार की मिसाल हो, जिस तरह मंत्री मण्डल बढाया है, उसमें सिवाय राजनैतिक कारणों के और कोई कारण नहीं हो सकता। गये चुनावों में ११ मंत्रियों में से ७ को राजस्थान की जनता ने ठोकर मार कर हटा दिया, लात मार कर गद्दी से उतार फेंक दिया तो इनको सोचना चाहिये था कि मंत्रियों की संख्या ११ से कम करें। पर कम करना तो रहा दूर इनकी संख्या और बढ़ाते हैं, १६ किये, फिर बढा कर १८ किये और अब २४ का चल रहा है। अगर चुनाव नजदीक नहीं आते तो राजस्थान का मंत्री मण्डल शैतान की आंत की तरह बढता ही जाता। एक तरफ पंजाब प्रान्त था जिसने देश पर संकट के नाम से ६ मंत्रियों को कम किया और दूसरी तरफ राजस्थान था, देश के ऊपर संकट आया हुआ था इस पर भी अपना मंत्री मण्डल बढ़ा रहा था। उस वक्त खर्चा कम करना चाहिये था पर मंत्री मण्डल में मंत्रियों को बढा रहा था, सेक्रेटरीज और अफसरों को बढ़ा रहा था।

जहां तक गरीब और आम जनता की बहबूदी की बात है, उनकी बात छोड़ दीजिये पर जहां तक राज कर्मचारियों का सवाल है, प्रजातन्त्र का दावा करने वाली यह सरकार कहती है कि हमारे यहां प्रजातन्त्र है, आपको छोड़ा इसलिये है कि प्रजातन्त्र के मानने वाले हैं। मैं कहता हूं इस सरकार को अजीर्ण है, एक तो प्रजातन्त्र का अजीर्ण है और दूसरा देश भक्ति का अजीर्ण है। तो मैं कहना चाहता हूँ मन्त्री मण्डल के मन्त्रियों से कि जरा शीशे में अपना मुंह देखिये, आपमें कितने लोग हैं जो जेल काट कर आये हैं, आपमें कितने लोग हैं जो राष्ट्रीय आन्दोलन में काम करते थे ? मुश्किल से ३ मिलेंगे, मैं समझता हूँ ३ भी नहीं। कोई ५२ मार्का का मोडल है, कोई ५५ मार्का का मोडल

(श्री हरिराम चौहान)

है तो कोई बिलकुल ही ६२ मार्का मोडल है। तो देश भक्ति का अजीर्ण करने वाले लोगों, प्रजातन्त्र का अजीर्ण करने वाले लोगों तुमने आज एक एक दाने के लिए माताओं और बहिनों को लाइन में लगा दिया है, हिन्दुस्तान के बच्चे बच्चे को रोटी के लिये अमेरिका के गिरवे रख दिया है, तुम अपने कर्मचारियों तक का प्रबन्ध नहीं कर सकते, उनका तुम भला नहीं कर सकते। कर्मचारियों का ५ रुपया बढाते हैं और बड़े बड़े मिनिस्टरों का बढ़ाते हैं ५०० रुपया। सौ गुना फरक, यही है तुम्हारा समाजवाद, यही है तुम्हारी समानता, इसी तरह असमानता मिटाना चाहते हो? इधर (दक्षिण की ओर हाथ करके) की गाड़ी में बैठ कर दिल्ली जा रहे हो तो कैसे मानें कि समाजवाद ला रहे हो। कहां से कौनसा समाजवाद ला रहे हो, इधर राजाजी बैठे हैं, उधर भी राजाजी बैठे हैं। इधर राजाजी बैठें तो प्रतिक्रियावादी और उधर राजाजी बैठें तो राजाजी बहुत बढ़िया हैं, रानीजी बहुत बढ़िया हैं। टिकट बांटोगे कल सुखाड़ियाजी राजाजी के, रानीजी के घर जायेंगे और घर घर जाकर टिकट बांटते फिरोगे। पर आपके टिकट की ऐसी हालत होने वाली है जैसे जापानी नोट की हुई थी, जापानी नोट नहीं चला, उसी तरह कांग्रेस का टिकट नहीं चलेगा ..

श्री भैरोंसिह : कांग्रेस का टिकट चलेगा नहीं, कांग्रेस का टिकट कटेगा।

श्री हरिराम चौहान : आप प्रजातन्त्र की बातें करते हो, प्रजातन्त्र के बारे में मैं एक मिसाल देना चाहूंगा। जेल का सवाल यहां काफी चला, उसके बारे में अध्यक्ष महोदय काफी अच्छी रूलिंग दे गये, कम से कम गृह मंत्री महोदय को तो उसी वक्त बाहर निकाला जाना चाहिये और जेल भेज देना चाहिये।

श्री भैरोंसिह : इतना मेरा सुझाव है कि जेल में भेजें तो सांगानेर की ओपन जेल में भेजें।

एक माननीय सदस्य : उसी बंगले में भेजें।

श्री रामानन्द अग्रवाल : एक तिहाई सजा काटने से पहले नहीं भेजें, नहीं तो अध्यक्ष महोदय को और रूलिंग देनी पड़ेगी।

श्री हरिराम चौहान : गंगानगर में गुलाम मोहम्मद म्युनिसिपैलिटी के मेम्बर थे, म्युनिसिपैलिटी के चैअरमैन सुखाड़िया साहब के रिश्तेदार थे, उनके खिलाफ अविश्वास का प्रस्ताव आया, कलेक्टर को अविश्वास का प्रस्ताव दे दिया। कलेक्टर ने अविश्वास के प्रस्ताव पर टाइम में मीटिंग नहीं बुलाई। इस पर गुलाम मोहम्मद हाई कोर्ट में रिट करने गया तो उसको डी० आई० आर० के अन्दर बिना वारन्ट लिये ही गिरफ्तार कर लिया और उसे पाकिस्तान का एजेंट बता कर बिना मुकदमा चलाये जेल में ठूंस दिया। उसको १८ दिन तक काल कोठरी में डाले रखा।

यह किस्सा तो कहना ही पड़ेगा, क्यों बार बार आप घंटी की तरफ हाथ ले जाते हैं।

श्री उपाध्यक्ष : १५-१५ मिनट सबको दिये हैं, आप ....

श्री हरिराम चौहान : सुनें। मुखाड़िया जी की सरकार ने मुझे जेल से यहां सदन में नहीं आने दिया और सदन में मुझे बोलने का मौका नहीं दिया, वह भी तो रियायत होनी चाहिये।

श्री उपाध्यक्ष : दो-तीन मिनट बोल लीजिये।

श्री हरिराम चौहान : वे म्युनिसिपैलिटी के मेम्बर थे, उनको काल कोठरी में डाला, आज जो चुने हुए हैं, उनको तो काल कोठरी में डाला जाता है और जो चुने हुए नहीं हैं उनको यह सरकार बंगलों में रखती है। प्रजातन्त्र का दावा करने वालों ने म्युनिसिपैलिटी के मेम्बर को जेल में बन्द कर दिया और वे वोट नहीं डाल सकते थे इसलिये मेजोरिटी बराबर हो गई और अविश्वास का प्रस्ताव नहीं आ सका। इस तरह से प्रजातन्त्र के ऊपर हमला किया। ट्रेड यूनियन आन्दोलन को इस सरकार ने कुचला और कामरेड पूर्नामियां को जेल में भेजा, बीस, पच्चीस कार्यकर्त्ता थे उनको बगैर मुकदमा चलाये जेल में रखा, १६ महीने तक जेल में रखा। बगैर मुकदमा चलाये जो सरकार १६ महीने तक लोगों को जेल में रखती है वह सरकार यह कहे कि वह प्रजातन्त्र की हामी है, गवर्नर के सामने सवाल करने पर चुने हुए नुमायन्दों को टांगे पकड़ पकड़ कर बाहर निकाल दे तो ऐसी सरकार के लिये डूब मरने के सिवाय और कुछ नहीं कहा जा सकता।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

श्री उपाध्यक्ष : आप काफी बोल चुके हैं।

श्री हरिराम चौहान : अभी खत्म करता हूं। दो मिनट में खत्म करता हूं।

मैं यह कहना चाहता हूं कि एक सवाल उठाया था कल चन्दनमलजी वैद ने बार बार कम्युनिस्टों से सवाल किया था कि जनसंघ और स्वतन्त्र पार्टी आ गई तो आप क्या करोगे, बार बार पूछा, हाडाजी ने जवाब दिया कि पहले तो आपको हरायेंगे, फिर सोचेंगे। मैं एक कदम आगे बढ़ कर कहना चाहता हूँ कि हमारी पार्टी आपको हराने के लिये सारे प्रयत्न करेगी, संगठित शक्ति ऑपोजिशन में बनाई जायगी। आप जरूर हारोगे और हारने के बाद और निश्चित रूप से आपको सरकार बनाने में किसी तरह की मदद नहीं करेंगे।

श्री मानिकचन्द सुराणा (कोलायत) : उपाध्यक्ष महोदय, इस सदन में अविश्वास प्रस्ताव पर पिछले तीन दिनों से बहस हो रही है और बहुत से बड़े बड़े मुद्दे सदन में इस सदन की राय जानने के लिए रखे गए हैं। मैं आप से निवेदन करना चाहता हूं कि राजस्थान की राज की जो स्थिति है और राजस्थान की और राजा नीतियों की जो स्थिति है, उससे ऐसा लगता है कि यह स्थिति उसी प्रकार की है जैसी स्थिति रोम में उस समय की थी जब कि रोम जल रहा था और नीरो बंसी बजा रहा था। मैं चुनौती के साथ इस सरकार को दावे के साथ पूछना चाहता हूं कि किसी एक भी छोटी या बड़ी समस्या का पिछले १९ सालों में कांग्रेस की हुकूमत ने हल किया है और मैं दावे के साथ

(श्री मानिकचन्द सुराणा)

कह सकता हूं कि वह समस्या राजस्थान में एक ही नहीं है। क्या खाद्य उत्पादन, क्या औद्योगिक उत्पादन, सड़कों के बनाने का काम, क्या सिंचाई का काम, इन सारे विभागों के काम को, एक एक करके यदि देखा जाय तो इस सरकार की असफलता की उसके प्रत्येक पन्ने पर, हरेक वर्ष की कार्य-प्रगति पर निश्चित रूप से हमको छाप मिलेगी। बहुत से आंकड़े हमारे माननीय नेता श्री रामकिशन ने सरकार के सामने अपने भाषण में रखे। जहां तक आंकड़ों का सवाल है, मैं समझता हूं, नाथूरामजी का कोई मुकाबला नहीं कर सकता और उसके खंडन में कुछ आंकड़े माननीय रामकिशन ने रखे। मैं उनको दोहराना नहीं चाहता लेकिन मैं बहुत संक्षेप में यह निवेदन करना चाहता हूं कि आप जो हवा बना रहे हैं कि राजस्थान के एक हजार गांवों में बिजली पहुंचा दी, राजस्थान में पहले कोई सड़क नहीं थी हमने सड़कें बना दीं, राजस्थान में नेहरें बना दीं, राजस्थान में खाद्य के मामले में आत्म-निर्भरता पैदा कर दी, आपके सारे दावे, आपके खुद के आंकड़ों के अनुसार सही नहीं हैं। आंकड़ों की बात बहुत लम्बी-चौड़ी की जा सकती है, लेकिन आंकड़ों की बात कह-कर आप खुद उनके जाल में फंस जाते हैं। नाथूरामजी कहते हैं कि रिपोर्ट्स को क्या देखते हैं, प्लानिंग कमीशन की रिपोर्ट्स को क्या देखते हैं, मुझे सर है, कान है, आंखें हैं, दिल है। मैं नाथूरामजी से कहना चाहता हूं कि अगर आप रिपोर्ट्स को पढ़ने की शक्ति रखते हो तो पढ़ो। उनको देखिये, आज आम जनता राजस्थान में बिल्कुल निराशा के कगार पर, भुखमरी के कगार पर बैठी है। आज राजस्थान में सबसे ज्यादा गंभीर स्थिति है, खाद्य स्थिति गंभीर है। आज राजस्थान में सरकार के निकम्मेपन के कारण ६ लाख बीघा जमीन, ८० लाख एकड़ भूमि आज पड़त है, जिस पर कोई खेती नहीं कर पाता है लेकिन इन सारी बातों के बताने से कोई लाभ नहीं है क्योंकि हमारी सरकार में योजनाओं के प्रति कोई निष्ठा नहीं है। हमारी सरकार का कोई लक्ष्य निश्चित नहीं है, बिल्कुल दुर्लक्षपूर्ण स्थिति है। इस सदन में चाहे कितनी समस्याओं का जिक्र किया जाय, चाहे भ्रष्टाचार के संबंध में उठें चाहे, हरिदेव जोशी की जमीन का किस्सा हो, चाहे नाथूराम के रिश्तेदारों की जमीन का किस्सा हो जाय, चाहे मुख्य मन्त्री के रिश्तेदारों की जमीन का किस्सा उठे, चाहे मंत्रियों के छोटे बड़े भ्रष्टाचार के किस्से उठें, चाहे प्रतापसिंह कैरों की हत्या के समय श्री डांगी वहां उपस्थित हों और उन्होंने पुलिस को कोई इत्तला नहीं दी यह बात उठाई जाय, लेकिन किसी भी मसले पर पिछले पांच सालों में मुख्य मन्त्रीजी ने कोई कदम नहीं उठाया है जिससे लगे कि विधान सभा सक्षम है। जनता की तकलीफ की कोई बात कहता है विधान सभा के माध्यम से, उसको स्वीकार किया जाता हो, यह बात नहीं है, हमारे मुख्य मन्त्रीजी के युग में किसी का कुछ बिगड़ नहीं सकता क्योंकि सबको अभयदान दे रखा है। राजस्थान में गंगा बह रही है और बहती हुई गंगा में आदमी जाते हैं, बाल्टी है तो बाल्टी डाल दे और देगची है तो वह डालदे और लूट लें।

अभी दो दिन पहले श्री ढाबरिया ने एक किस्सा रखा। मैं समझता हूं कि मुख्य

(श्री मानिकचन्द सुराणा)

मन्त्रीजी स्वयं उन सारे मुद्दों का स्पष्टीकरण करेंगे क्योंकि गृहमन्त्री ने जो अभी जवाब दिया है और कहा है कि वह बात झूठी है, तो मैं कहना चाहता हूं कि यदि आपको कोई सबसे बड़ा नुकसान हो सकता है तो इनके जवाब से हो सकता है, इसको संभाल रखो, इनके जवाब से ही आप फस मरेंगे। इनके जवाब को यदि गीता बना दिया तो फंस जाओगे। आप जो मनघड़ंत कहानियां बना रहे हैं, मैं मुख्य मन्त्रीजी से जानना चाहता हूँ कि इन कहानियों के बारे में आपका वर्णन क्या है। लेकिन मुख्य मंत्रीजी आपने इन ५ सालों में किसी मंत्री के खिलाफ कोई कदम नहीं उठाया ! मैं पूछना चाहता हूं कि क्या आप समझते हैं कि जितने भ्रष्टाचार के किस्से आए हैं, आप अपने दिल पर हाथ रखकर कहें कि ये सब बातें शत प्रतिशत झूठी थीं, निराधार थीं, क्या किसी भी किस्से में कोई दम नहीं है ? मैं सिर्फ दो–तीन बातें रेफर करता हूं।

झुंझुनू के अंदर चौधरी हरलालसिंह ने भूख हड़ताल की उस समय अलाउद्दीन खिलजी वहां के कलेक्टर थे। बहुत शिकायतें हुईं। चौधरी हरलालसिंह जो कांग्रेस के अध्यक्ष थे उन्होंने अपनी शिकायत पेश करने के लिए प्रधान मंत्री, लालबहादुर शास्त्री का दरवाजा खटखटाया। यह एक अजीब बात है कि राज्य के मुख्य मन्त्री ने प्रधान मंत्री की नहीं सुनी। प्रधान मंत्री ने तीन रिमाइंडर्स इसी मामले में मुख्य मंत्रीजी को भेजे। एक पत्र आपको मिला १२-५-६४ को जिसमें पूछा कि इस मामले में आप क्या कर रहे हैं, दूसरा खत मिला ३०-५-६४ को और तीसरा खत मिला १०-६-६४ को और तीन खतों के बाद में मुख्य सचिव उन पर लिखता है कि इनको फाइल कर दिया जाए; आपने सुझाव दिया नोट बनाकर और आपने दस्तखत कर दिये। यह हाल है राजस्थान का जहां चौधरी हरलाल की शिकायत का यह हाल हो साधारण व्यक्ति की तकलीफ को कौन सुन सकता है। जब चौथा रिमाइंडर आया लालबहादुर शास्त्री का ३०–७–६४ को तो मुख्य मंत्रीजी की आंख खुली, मुख्य सचिव संभल गए कि प्रधान मंत्री से पीछा नहीं छूटेगा इसलिए उन्होंने नोट बनाकर दिया कि इस मामले में रिपोर्ट भेजनी पड़ेगी कि इसमें सारे तथ्य गलत हैं और जांच के लिऐ राजस्व मंडल के चिरपरिचित सदस्य श्री आर०एन०मधोक के सुपुर्द कुछ मामले किए, आपने विजिलेन्स कमीशन को सुपुर्द कुछ मामले किए। ४ रिमाइंडर्स लालबहादुर शास्त्री के आने के बाद जब यह कार्यवाही आपके राज्य में शुरू होती है। मैंने विजिलेन्स कमीशन की रिपोर्ट पढ़ी है। मैं मुख्य मंत्री जी से कहना चाहूंगा कि जहां तक नेशनल फंड का सवाल है जो झुंझुनू में इकट्ठा किया गया उसका क्या हाल हुआ ? उसके बाद ६ पन्नों में पुलिस ने लिखा है कि दो महीने तक ५ हजार रुपये अलाउद्दीन खिलजी ने अपने पास रखे, यह टेम्पोरेरी गबन है, १० जगह ऑब्जर्वेशंस हैं। एक कलेक्टर जो राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में टेम्पोरेरी गबन करे उसके खिलाफ आपने क्या कदम उठाया ? जब सारी इन्क्वायरी हो गई,, आर० एन० मधोक की इन्क्वायरी रिपोर्ट को पेन्डिंग रखा और विजीलेन्स कमीशन की रिपोर्ट आगयी और वह भी आ गयी, दोनों जब आ गयीं तो चार्ज शीट दी फरवरी, ६६ में जब कि

(श्री मानिकचन्द सुराणा)

कम्पलेन्ट हुई ६४ में। कम्पलेनेट चौधरी हरलालसिंह और सपोर्टर लालबहादुर शास्त्री और ६६ में जाकर चार्ज शीट बनी और उसमें यह लिखा कि ऐसी कोई चीज नहीं है जिससे सस्पेन्ड करने की जरूरत हो। आज वह कलेक्टर, वही फतहसिंह, एग्जी-क्यूटिव इन्जीनियर कुचल, ये सारे स्कॉट फ्री हैं। राजस्थान में आगी अपनी जगह काम कर रहे हैं, आपने उनको अभयदान दे रखा है। माननीय मुख्य मन्त्रीजी आप हमारी मत सुनो। लालबहादुर शास्त्री की तो सुनो लेकिन आप लालबहादुरजी शास्त्री की भी नहीं सुनेंगे। कई मामले ऐसे होंगे, उनकी चिट्ठी को भी फाइल में दबा दी होगी।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक दूसरा किस्सा इससे भी जो ज्यादा गम्भीर है वह कहना चाहता हूं। यह तो एक कलेक्टर की शिका-यत की पी० सी० सी० के प्रेसिडेन्ट ने। लेकिन एक दूसरी शिकायत लाल बहादुर शास्त्री ने और की और वह कब की कि भूधरमल कन्हैयालाल तिवारी जयपुर के पास रूपवास और बयाना में बहुत बड़े माइनिंग एरियाज हैं, किस्सा जरूर पुराना है मुख्य मंत्रीजी कहेंगे लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि उस मामले में, उपाध्यक्ष महोदय, यह

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

मामला गंभीर क्यों होता है? क्योंकि उस मामले में केबिनेट के दो मिनिस्टर, एक श्री रामकिशोरजी व्यास और दूसरे मिनिस्टर श्री कुम्भारामजी आर्य, इन्वोल्व्ड हैं। एक सैंड स्टोन की माइनिंग लीज दस साल के लिये दी थी। ५३ में उसकी मियाद, उसकी लीज खत्म होने को थी, लेकिन ५२ में ८, ९ महीने पहले ही उस फर्म के द्वारा रिन्यूअल के कागजात चलाये गये और यह बताया गया था कि जयपुर की स्टेट के साथ एक इकरार-नामा किया गया था कि रिन्यूअल के समय और रॉयल्टी बढ़ायी जा सकती है और राज्य अपनी टर्म्स डिक्टेट कर सकता है। सबसे पहले मंत्री रामकिशोरजी व्यास थे, उन्होंने लिखा कि लीज रिन्यू कर दी जावे। इस सम्बन्ध में न उन्होंने डाइरेक्टर माइन्स से पूछा और न ही सेक्रेटरी विभाग से पूछा, किसी से नहीं पूछा, और उन्होंने मंत्री चाहे जैसा कर सकता है, किसी से पूछने की आवश्यकता नहीं, इस प्रकार से राज्य सरकार के कोष को नुकसान पहुंचा कर निर्णय दिया। राजस्थान के मंत्रियों को इस प्रकार की छूट है। उस समय मंत्रीजी श्री जयनारायणजी व्यास थे। उस समय बीकानेर से आये चौधरी कुम्भारामजी इन्डस्ट्रीज मिनिस्टर बन गये थे। यह फाइल उनके पास पहुंची तो दो आदमियों ने दर-ख्वास्त दी कि डेढ लाख रुपये में माइन्स लेने के लिये तैयार हूं। प्रीमियर सप्लायर दिल्ली ने चिट्ठी दी इससे ज्यादा रुपया देने के लिये तैयार हैं। ये दोनों चिट्ठियां, मैं दावे के साथ कहता हूँ कि चौधरी कुम्भारामजी ने पढी हैं, उनके इनिशियल हैं। और उसके बाद में चीफ मिनिस्टर जयनारायणजी के ध्यान में यह आया, उन्हें भ्रष्टाचार पसन्द नहीं था, उन्होंने डाइरेक्टिव दिया कि लीज रिन्यू न की जाय और सैंड स्टोन की मोनोपली दी गई है उसके टुकड़े किये जायं छोटे-छोटे हिस्सों में बांटकर दिया जाय। मुख्य मंत्री जी चाहते थे वैसा नहीं हुआ। जयनारा-यजी ने जैसा चाहा वैसा नहीं हुआ एक नोट लिखा गया कि राजस्थान के नहीं हिन्दुस्तान के एटोर्नी जनरल की राय ली जाय। बाद में

(श्री मानिकचन्द सुराणा)

ली गई। बड़े बड़े वकीलों को ऐंगेज किया गया। चिरन्जीलालजी को ऐंगेज किया गया। सरकार ने चिटठी जारी की वह वेस्ट पेपर में फेंक देने काबिल है लेकिन उस चिट्ठी के बहाने से वह लीज रिन्यू कर दी कुम्भारामजी ने। जब पार्टी ने मुकदमा किया, वह हाई-कोर्ट में हार गये उसी के ठीक दो दिन बाद ही लीज रिन्यू कर दी गई। उपाध्यक्ष महोदय, यह इतना ही किस्सा होता तो मुझे कहने की आवश्यकता नहीं होती। लाल बहादुरजी शास्त्री ने क्या लिखा ? यदि मैं गलत कहता हूँ तो आज ही विधान सभा से इस्तीफा देने के लिये तैयार हूँ, चार-पांच महीने बाकी हैं, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि भूमरलाल कन्हैयालाल के यहां रेड हुई। १२ अलमिराज में रखने लायक रेकार्ड सीज किया। उसमें एक डायरी निकली और स्पेशल इन्कम टैक्स सर्किल ऑफिसर ने उसकी एक सूची बना कर भेजी और लालबहादुर शास्त्री को लिखा ४० लाख का इस सेठ का कर्जा है। कुम्भारामजी को दिया, २० हजार रुपये सेक्रेटरी साहब को दिये। गोकुललाल-जी मेहता उस समय सेक्रेटरी थे। उनके खिलाफ डिपार्टमेंटल इन्क्वायरी आज भी चल रही है। लालबहादुरजी शास्त्री के लिखने के बाद कुम्भारामजी के खिलाफ जांच हुई। जांच कुम्भारामजी के खिलाफ नहीं हो सकती वह तो सचिव के खिलाफ हो सकती है। लालबहादुरजी शास्त्री लिख दें लेकिन आप जांच नहीं करायेंगे, दूसरों की तो क्या कहें। आप इस नारे में थे कि आप और कुम्भारामजी राजस्थान का मंत्रिमंडल चलायेंगे। अब भी मैं कहना चाहूँगा मुख्य मंत्रीजी कह दें कि यह तथ्य गलत हैं तो सदन की सदस्यता से इस्तीफा दे दूंगा। मुख्य मंत्रीजी आप करप्शन को शील्ड कर रहे हो, मैं यह कहना चाहता हूं कि इससे आप राज्य के धन को लुटा रहे हो। जो पेटर्न कुम्भा-रामजी ने कायम किया, उसी भूमरमल की तरह का मामला है, उसी तरह का पेटर्न राजा हरिश्चन्द्रजी ने कायम किया, सॉल्ट पिटर के केस में। कल भैरोंसिंहजी ने उसका हवाला दिया था। जब कि दूसरी पार्टी कहती है कि इसका ठेका ५० हजार में लेने के लिए तैयार है उसको ४६०० रुपये में दे दिया। जब कि डाइरेक्टर इंडस्ट्रीज कहता है ठेके होंगे, लेकिन दूसरे नोट लिखवा दिये जाते हैं और मिनिस्टर यह कहता है कि पांच साल के लिए ४६०० में रिन्यू किया जाता है। आपने राज्य के पैसे को अपना पैसा समझ लिया है। चाहे जो ऑर्डर कर दो, चाहे जिसकी दरख्वास्त ले लो और हाईकोर्ट को भेज दो। सॉल्ट पीटर का है कंवर लाल मोतीलाल। रिट पेन्डिंग है।

मैं निवेदन करना चाहता हूं कि मुख्य मंत्रीजी आप करप्शन को शील्ड कर रहे हैं। आप करप्शन को शील्ड करने में मास्टर हो गए हैं। हिन्दुस्तान में आपका कोई मुकाबला नहीं कर सकता करप्शन को शील्ड करने में। आपकी हिम्मत नहीं एक्शन लेने की। आप एक्शन कैसे लेंगे ? आपके रिश्तेदारों को जमीनों की फाइल कुम्भारामजी के यहां पेन्डिंग है और उन की गुड़ की फाइल, १ करोड़ २० लाख के घोटाले की फाइल मुख्य मन्त्रीजी आपके पास पेन्डिंग है। कौन

(श्री मानिकचन्द सुराणा)

एक्शन लेगा ? मुख्य मन्त्रीजी लेंगे या कुम्भारामजी ? जो एक्शन पहले लेगा उसके खिलाफ दूसरा फैसला होने वाला है। इसलिए न यह एक्शन लें और न वह एक्शन लें। राजस्थान में खुले हाथों गैंग बना रखा है कि राजस्थान के, पब्लिक के धन को मर्जी आए जो लूटे। इन सारे मामलात को बहुत बार रखा गया है।

श्री रामानन्द अग्रवाल : कॉमन साथी दोनों नजदीक आ गये हैं।

श्री मानिकचन्द सुराणा : इन्हीं कारणों से जहां सेन्टर के वित्त मन्त्री श्री कृष्णामाचरी को इस्तीफा देना पड़ा, इन्हीं कारणों से श्री सुब्राम्हण्म को पी०ए०सी० के सामने एक्सप्लेनेशन के लिए जाना पड़ा। वे मंत्री पी०ए०सी के पास एक्सप्लेनेशन के लिए जा सकते हैं लेकिन राजस्थान का कोई मन्त्री नहीं जा सकता। राजस्थान का मन्त्री यह नहीं कहता कि यह झूठ है। चाहे पांनरवा का कांड हो, अमृतलालजी यादव नहीं गये। सेक्रेटरी बयान देता है कि यह ऑर्डर सरकार का है हमारा नहीं है। आज एक मंत्री पी०ए०सी की रिपोर्ट को चैलेन्ज करने के लिये तैयार नहीं। मछलियों के मामले में गैर-कानूनी तरीके से नाथूरामजी मिर्धा रिव्यू कर दें और मच्छियों के ठेकेदारों को लाखों रुपयों का फायदा पहुंचा दें उससे मुख्य मन्त्री का कोई ताल्लुक नहीं है।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

उपाध्यक्ष महोदय, यह सदन आज ही समाप्त हो रहा है। हो सकता है कि अगली बार हम नहीं आयें और आप न आयें। आपका हमारा मिलन दस पन्द्रह मिनिट चलने दिया जाये ताकि मैं अपनी बात कह सकूं।

श्री उपाध्यक्ष : समय को सीमित किया गया है।

श्री रामकिशन : यह पांच साल का प्रश्न है।

श्री मुकुटबिहारीलाल गोयल : बहुत तथ्यपूर्ण जानकारी आ रही है उपाध्यक्ष महोदय, आने दें।

श्री उपाध्यक्ष : ११ बजे से माननीय मुख्य मंत्रीजी जवाब देंगे।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : ११॥ बजे से।

श्री मानिकचन्द सुराणा : हम अपना लन्च का समय दांट लेंगे। घन्टे भर में लन्च कर लेंगे।

तो उपाध्यक्ष महोदय, ये जमीनों के मामले ऐसे चलते हैं कि आज इन्होंने राजस्थान में अपनी नई जागीरदारियां कायम कर दी हैं और उन जागीरदारों में कौन कौन हैं, यह भी मैं बता देना चाहता हूं।

श्री उपाध्यक्ष : मैं फिर निवेदन करूंगा कि थोड़ा संक्षेप में करें, नहीं तो बोलते जावेंगे तो लम्बा बढ़ेगा यह तो।

श्री मानिकचन्द सुराणा : मैं दस मिनिट की इजाजत और लूंगा।

श्री उपाध्यक्ष : पांच मिनिट । आप बीस मिनिट तो बोल चुके हैं ।

श्री मानिकचन्द सुराणा : आप कहें तो बैठ जाऊं । अगर दस मिनिट की इजाजत हो तो बोलूं । इससे कम में मैं ठीक बात नहीं कह पाऊंगा ।

श्री उपाध्यक्ष : और बहुत हैं बोलने वाले ।

श्री मानिकचन्द सुराणा : बोलने वाले हैं, मैं नहीं कह रहा हूं कि नहीं हैं । और इस विवाद में यह समय भी व्यर्थ जा रहा है । मैं अब थोड़ा कह कर बैठ जाता हूं ।

श्री उपाध्यक्ष : आप १०।। तक बोल लें ।

श्री मानिकचन्द सुराणा : मैं यह कहना चाहता हूं कि जमीन के मामलों में इन्होंने नई जागीरदारियाँ कायम की हैं । नई जागीरदारियां कायम हो रही हैं । अब अब ये कैसे हो रही हैं ?

सिचाई विभाग के चीफ इन्जीनीयर हैं । उन्होंने उस जगह सबसे अच्छी जमीन अपने रिश्तेदारों को दे दी जिस जगह सबसे ज्यादा पानी आता हो । उन जमीनों के लेने के लिये ये रिश्तेदार भूमिहीन किसान बन जाते हैं, लैंडलैस टीनेन्ट की कैटेगरी में आ जाते हैं । उस जगह के वाशिन्दा बन जाते हैं, झूठे, फर्जी सर्टीफिकेट वहां के निवासी होने के दिये जाते हैं और वे जमीनें उनको अलॉट हो जाती हैं । मैं चुनौती के साथ कहता हूं कसवा, तहसील सांगरिया, जो पहले हनुमानगढ में थी ? उनमें सात ऐसे चीफ इन्जीनियर के रिश्तेदारों को जमीनें दे दी गईं । उनके नाम मैं पढ देता हूं:–

(१) कानाराम वल्द हेमाराम, जाट साकिन ढाबा, तहसील हनुमानगढ़ ।

(२) श्री मंगलराम वल्द गोकुलराम जाट, भूमिहीन किसान साकिन ढाबा, तहसील हनुमानगढ़ ।

इनको पचास पचास बीघा, दो दो मुरब्बा जमीन लैंडलैस टीनेन्ट के नाम से दी हैं ।

ये सारे रामनारायण चौधरी, चीफ इन्जीनियर, राजस्थान कैनाल प्रोजेक्ट के रिश्तेदार हैं और ढाबा में यह अपनी उम्र में तो कभी रहे नहीं, इन रामनारायण जी चौधरी के एक लड़के की शादी हुई थी उस शादी में ये जरूर आये और चूंकि उस शादी में आ गये इसलिये वहां के सरपंच चौधरी हेतराम ने वहां के निवासी होने का फर्जी सर्टिफिकेट दे दिया । न उनका वहां किसी भी वोटर लिस्ट में नाम है, न कभी था, इनको सिर्फ उस बारात में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और ये लैंडलैस टीनेन्ट बनकर जमीन लेने में कामयाब हो गये ।

दो नाम बता दिये । बाकी नाम इस प्रकार हैं :

(३) श्री बनेसिंह वल्द उम्मेदसिंह, साकिन ढाबा, तहसील हनुमानगढ़ ।

(४) श्री रामचन्द्र पुत्र सूरजमल जाट, साकिन ढाबा, तहसील हनुमानगढ़ ।

(५) गणपतराम पुत्र उम्मेदसिंह, भूमिहीन, साकिन ढाबा, तहसील हनुमानगढ ।

(श्री मानिकचन्द सुराणा)

(६) मोतासिंह, पुत्र भूदेवसिंह जाट, भूमिहीन, साकिन ढावा, तहसील हनुमानगढ़।

(७) केसरीसिंह, पुत्र बलदेवसिंह, जाट, भूमिहीन, साकिन ढाबा, तहसील हनुमानगढ़।

इनमें कितनी जमीन गई ? साढे इक्तीस सौ बीघा जमीन गई । चार सौ बीघा जमीन अपने छोटे लड़के के नाम से खरीद ली।

सारी डिस्ट्रियूटरीज़ पर गड़बड़ियां हैं, पानी मिलता है नहीं मिलता है, कोई स्थिरता नहीं, कोई भरोसा नहीं, पर आठ ए. पी. डी. में जहां इनकी जमीनें हैं वहां पानी निश्चित रूप से बराबर पहुंचाया जाता है क्योंकि यहां इन्जीनियर साहब के लड़कों की जमीनें हैं, उनके रिश्तेदारों की जमीनें हैं ।

मेरी यह सरकार को चुनौती है अगर इस सरकार में हिम्मत हो तो इस तरह से गलत तरीकों से दी गई जमीन को वापिस ले और जिसने इस तरह की गलती की है उनको सजा दे। पर इस सरकार में यह हिम्मत नहीं कि आज भी इस तरह से गलत रूप से हथियाई गई, भूमिहीनों के नाम से फर्जी सर्टीफिकेट लेकर दी गई इन जमीनों को छीन सके उनसे । इस जमीन की एक एक मुरब्बे की कीमत एक एक हजार से कम नहीं है, इस तरह कुल जमीन तीन चार लाख की बनती है जो इन चीफ इन्जीनियर साहब ने हथिया ली है। सरकार लीपापोती पसन्द करती है। यह लीपापोती आज से नहीं बरसों से चली आ रही है । पहले रेवेन्यू मिनिस्टर दूसरे थे, आज दूसरे हैं। पहले वालों के पास लोग गये। उन्होंने मन्नालाल गोयल के रिश्तेदारों को जमीन अलॉट कर दी दामोदरलालजी व्यास ने ।

आपके ही पैटर्न पर चल कर कुम्भारामजी आर्य ने भी कइयों के नाम की दरख्वास्तें मंगवा कर सीधी जमीन उनको अलॉट कर दी। ये दामोदरलालजी आपका अनुकरण कर रहे हैं, या आप उनका कर रहे हैं मेरी समझ में नहीं आता। भ्रष्टाचार में कौन किसका अनुकरण कर रहा है यह पता नहीं लगता । सभी गैर-कानूनी काम करते हैं। पर इनको रद्द करने वाला कोई नहीं है।

सहकारिता भण्डारों को आपने अलादीन का चिराग मान रखा है। ढोल पीटा गया कि महगाई रोकने के लिये सस्ती दरों पर चीजें मुहय्या करने में केवल सहकारी स्टोर ही समर्थ हैं और उनकी स्थापना जगह जगह की जायेगी । पाकिस्तान का आक्रमण हो और भाव ऊंचे हो जावें तो सहकारी भंडार खोलने की रट लगाओ। डिवेल्यूएशन हो गया रुपये का और महगाई बढने लगी तो फिर नारा लगाया इन्हीं सहकारी भंडारों का ।

आपके निर्णय के अनुसार सारे देश भर में २०१ होल सेल स्टोर, सुपर-बाजार और सहकारी भंडार खोलने थे। इसी बेसिस पर राजस्थान में भी तीन का नम्बर था, एक अजमेर में, एक जयपुर में और तीसरा जोधपुर में ।

Page No.37

(श्री माणिकचन्द सुराणा)

इन तीन स्टोरों को खोलने का ऑल इण्डिया पैटर्न यह है कि जो उपभोक्ता होलसेल भंडार इस समय काम कर रहे हैं उनके तहत ये सुपर-मार्केट खोले जायें। जयपुर के होलसेल उपभोक्ता भंडार से हो सकता है कि आपको शिकायत हो।

पर उपाध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जो से कहना चाहूंगा, सहकारी मन्त्रीजी से, कि सन् ६५ के जून मास तक जबतक इसे थोड़ा बहुत काम करने का मौका दिया गया ६६ हजार का फायदा था, मेरे पास ऑडिटेड बैलेन्स शीट इसका है। उस पर मैं यह कह रहा हूं। ६६ की फरवरी, मार्च से लेकर आज तक आपने इस भंडार को भंग करने के लिये, इसके बोर्ड ऑफ डाइरेक्टर को भंग करने के लिये तीन बार नोटिस दिये। दो नोटिस दिये गये पहले जिनके लिये राजस्व मंडल में मामला गया और उसने निर्णय दिया कि ये गैर-कानूनी हैं। इसके बाद तीसरा नोटिस आपने इनको और दिया और इनका ऑपरेशन ऑफ अकाउन्ट आपने बन्द कर दिया। जो आज भी बन्द है। आप कहना चाहते हैं ६५ के बाद ६५ की जून के बाद काम नहीं किया। पर मैं निवेदन करना चाहता हूं कि क्या ऐसा कारण है कि सारे हिन्दुस्तान का जो पैटर्न है उसको आप जयपुर में बदलना चाहते हैं? नया भंडार आप खोलना चाहते हैं। खुले तो इसमें मुझे कोई ऐतराज नहीं। पर उसमें भी आप किसको ला रहे हैं?

हरिनारायण जो राठी को लिया है एक तो आपने, दूसरे महेशचन्द्र शर्मा को आपने चुना है। आपने इनको जो रक्खा है, इनकी जरा पुरानी हिस्ट्री शीट तो मालूम करिये। महेशचन्द्रजी शर्मा के खिलाफ मुकदमा दर्ज हुआ है कि इन्होंने कोऑपरेटिव भंडार को ठेके पर दे दिया। इन जैसे ब्लेकमार्केटियरों को आप इन सहकारी भडारों के संयोजक बना रहे। हरिनारायणजी राठी और महेशचन्द्रजी शर्मा सरीखे ही आपको मिले हैं क्या? आप ऐसों को बनाते हैं तो फिर चाहते क्या हैं आप? इसी बलबूते पर आप इन भंडारों में नाम कमायेंगे आपकी इन्टेग्रिटी पर डाउट होता है।

श्री परसराम मदेरणा : बोर्ड ऑफ डाइरेक्टर्स ने नोमीनेट किया है। इसको रजिस्टर कराया जावेगा। इसका संबंध बोर्ड ऑफ डाइरेक्टर्स से है।

ऑडिटेड बैलेन्स शीट की आप ने बात कही। उस पर सदन को मैं पूरी तरह से कॉन्फिडेन्स में लेकर कहना चाहता हूं कि जून, ६६ की ऑडिटेड रिपोर्ट में २५ हजार का नेट लॉस बताया गया है और जो असैट्स दिखाये गये है वे बिल्कुल गलत दिखाये गये हैं। तो इस तरह से अगर देखा जावे तो कुल लॉस १२१ हजार के करीब है। ऐसे भंडार को यह जिम्मेदारी देकर मैं कन्ज्यूमरों के साथ में गद्दारी करूं, मैं किसी भी सूरत में यह नहीं करने वाला हूं।

श्री मानिकचन्द सुराणा : माननीय मंत्रीजी....

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : ऐसे गद्दार गद्दारी करने की बात कह रहे हैं तो राजी

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल)

नामे की बात क्यों चलाई ? नाथूरामजी पंच क्यों बने ? फैसला करा देने के लिए उनको क्यों कहा गया ? अगर वे समझौता करा देते तब तो यह गद्दारी कर सकते थे राजस्थान की जनता के साथ और कन्ज्यूमर्स के साथ भी। वहां सौदा नहीं पटा, उनका पंचपना नहीं चला, मध्यस्थता उनकी नहीं पटी तो वहां कहने लगे हैं कि गद्दारी नहीं करना चाहता । खूब रही यह ।

श्री परसराम मदेरणा : वे मध्यस्थता करें या न करें, वह सफल हो या न हो, डिपार्टमेंट का एटीट्यूड इस मामले में प्रारम्भ से एक रहा है । मैं उससे विचलित नहीं हुआ हूँ । मध्यस्थता कोई करे, हरेक व्यक्ति का हक है । पर हम उससे बन्धे नहीं हैं ।

नया स्टोर हम खोलने जा रहे हैं, नया डिपार्टमेंट स्टोर है, यानि होल सेल भण्डार जिसकी वर्किंग कैपेसिटी चालीस लाख तक होने वाली है । जिसमें ऑल इण्डिया पैटर्न के मुताबिक ६॥ लाख के शेयर भारत सरकार लेने वाली है, जिसकी गारन्टी राजस्थान सरकार देने वाली है । ऐसी सूरत में कम से कम यह देखकर हमें चलना पड़ेगा कि कहीं इसमें कोई गड़बड़ी न हो जाय । सभी से फगार्ड लेने पड़ेंगे जिससे यह डिपार्टमेंट ठीक तरह से चले और इस मंहगाई के जमाने में कन्ज्यूमरों को सही दाम पर उनकी आवश्यकता की दैनिक चीजें मिल सकें । हम अभी ११ चीजें देने जा रहे हैं ताकि डिवेल्यूशन और इससे उत्पादन मंहगाई के बाद उसका असर कम करने के लिए यह बहुत बड़ा स्टैप लिया जा रहा है, तो हमें वे सारे प्रिकॉशन्स लेने होंगे जिससे इसकी सप्लाई लाइन और लाइफ लाइन न टूट सके ।

श्री मानिकचन्द सुराणा : उपाध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्रीजी ने जो जवाब दिया है मैं यह निवेदन करना चाहूँगा कि उसका जवाब तो वह और बड़े विस्तार से दें लेकिन मेरा आपसे, उपाध्यक्ष महोदय, यह कहना है कि मेरे पास यह बैलेन्सशीट है ऑडिटेड जून, ६५ तक की जिसमें ६९ हजार का प्रोफिट दिखाया है और इस बैलेंस शीट को सारे कागजों में से निकाल कर सदन की मेज पर रखूंगा । हो सकता है जून, ६६ में २५ हजार का घाटा हो लेकिन उपाध्यक्ष महोदय, एक भण्डार में यदि घाटा है तो आप उसको बन्द कर देंगे । बीकानेर के होलसेल स्टोर्स का क्या हाल है ? मैं निवेदन करना चाहता हूं उस अकेले भण्डार में १। लाख का घाटा है । लेकिन उसकी जो अध्यक्षा हैं श्रीमती कान्ता खतुरिया उसका आप कुछ नहीं बिगाड़ सकते....

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : सुराणाजी यह झगड़ा तो औरतों का ही है । जयपुर में पुष्पा शर्मा से झगड़ा हो गया तो उसको भण्डार नहीं दिया और बीकानेर में कान्ता खतूरिया से सुखाड़ियाजी की पट रही है तो उनको भण्डार दे दिया । यह राजस्थान सरकार तो चलती है इस बूते पर है । यह निकम्मी सरकार, चरित्रहीन सरकार इससे ज्यादा निकम्मी सरकार, चरित्रहीन सरकार हिन्दुस्तान के किसी कौने में नहीं मिलेगी ।

श्री मानिकचन्द सुराणा : उस भण्डार में १। लाख का घाटा है। मैं उसकी दूसरी गहराई में नहीं जाना चाहता हूँ जैसा कि माननीय सतीशचन्द्रजी कह रहे हैं....

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : मैं क्या कहता हूं, राजस्थान के सारे डाक बंगले कह रहे है, सर्किट हाउस कह रहे हैं। पहले तो लालजी कोई कोई हुआ करते थे और इनके लालजी तो राजस्थान की गली गली में फिरते हैं।

श्री मानिकचन्द सुराणा : इस तरीके से एक महिला जयपुर में और एक महिला बीकानेर में ; जयपुर की महिला के साथ इस प्रकार का व्यवहार और बीकानेर की महिला के साथ इस प्रकार का व्यवहार। मैं कहना चाहता हूँ कि भारत सरकार की नीति है कि सहकारी समितियों में २५ प्रतिशत महिलायें आनी चाहिए। सुप्रीम कोर्ट में पुष्पा शर्मा का एवीडेन्स दिया हुआ मेरे पास है। इस महिला के विरुद्ध सरकार ने इम्मोरल ट्रेफिक का मुकदमा किया। सुप्रीमकोर्ट में ट्रान्सफर की दरख्वास्त लगने के बाद राजस्थान के मजिस्ट्रेट ने मुकदमा फौरन खारिज कर दिया क्योंकि इस एफीडेविट में इतनी गम्भीर बातें हैं कि हो सकता है यह एफिडेविट यदि सारे हिन्दुस्तान के अखबारों में प्रकाशित हो जाता तो पता नहीं क्या हो जाता....

श्री रामानन्द अग्रवाल : क्या है ?

श्री मानिकचन्द सुराणा : यह शासन की व्यवस्था चल रही है, मैं निवेदन करूंगा सुखाड़ियाजी से कि आपके राज्य में कहीं अलाउद्दीन खिलजी पनप रहे हैं, कहीं घनश्यामदास ताम्बी पनप रहे हैं और बड़े बड़े आदमी नौकरशाही के पनप रहे हैं, नगरसेठ पनप रहे हैं, नेता पनप रहे हैं कांग्रेस के. लेकिन सुखाड़ियाजी आप नौकरशाही पनपा रहे हैं नगरसेठ और नेताओं को पनपा रहे हैं और यह इतनी बुरी तरह से पनप रहे हैं कि यदि आप अपने कार्यों से ठोस कदम नहीं ले सकते हैं तो मैं निश्चित रूप से कह सकता हूं कि इस राजस्थान सरकार को कोई बचाने वाला नहीं होगा।

श्री उपाध्यक्ष : श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल।

श्री दामोदरलाल व्यास (पंचायत मंत्री) : समय का क्या होगा ? मुझे भी बोलना है।

श्री उपाध्यक्ष : ११ बजे तक निश्चित किया गया था अध्यक्ष द्वारा कि ११ बजे सरकारी पक्ष की ओर से जवाब दिया जायेगा।

श्री मानिकचन्द सुराणा : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह समय तो १॥ बजे तक का हो जाये, हम लंच में से एक घन्टा काट कर मुख्य मंत्रीजी को दे देते हैं और २से ३ बजे तक लंच हो जावेगा।

श्री हरिश्चन्द्र (उद्योग मंत्री) : उपाध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्यों ने सॉल्ट पीटर के बारे में रेफरेन्स किया है मैं उसका स्पष्टीकरण करना चाहूंगा और इसके लिए मुझे भी समय मिलना चाहिए।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : मिल जावेगा बाद में।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : उपाध्यक्ष महोदय, थोड़ा समय और बढ़ा दिया जाये।

श्री उपाध्यक्ष : ११।। बजे निश्चित रूप से मुख्य मंत्रीजी अपना भाषण आरम्भ कर देंगे।

श्री दामोदरलाल व्यास : आपके बाद में मुझे बोलना है। तो समय को ऐसा रेग्युलेट कीजिये कि मुझे भी समय मिल जाये।

श्री उपाध्यक्ष : ११।। बजे से पहले सब हो जाये।

श्री दामोदरलाल व्यास : तो आप समय रेगुलेट कीजिये।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : मेरा निवेदन है कि १२ बजे तक समय बढ़ा दें और मुख्य मन्त्रीजी का भाषण १ घन्टे का हो जाये और उसके बाद में २०-२५ मिनट में मेरा राइट ऑफ रिप्लाई है उसको भी मैं एक्सरसाइज करूंगा। २ बजे तक सदन का समय बढ़ा लीजिये।

श्री उपाध्यक्ष : ११।। बजे मुख्य मन्त्री अपना जवाब शुरू कर देंगे।

कुछ माननीय सदस्य : १२ बजे।

श्री उपाध्यक्ष : मुख्य मन्त्रीजी जवाब देंगे तो उसमें १ या १।। घण्टा लगेगा उसके बाद में राइट ऑफ रिप्लाई रहेगा।

श्री दामोदरलाल व्यास : तो उसमें और ज्यादा समय लग सकता है।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : देखा जायेगा।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : मेरा अधिकार है तो उसको कम से कम मैं एक्सरसाइज करूंगा ही।

श्री उपाध्यक्ष : मैं ऐसा समझता हूँ कि ११।। बजे से मुख्य मन्त्रीजी उत्तर प्रारम्भ कर दें तो उसके बाद में राइट ऑफ रिप्लाई २०-२५ मिनट तक जो एक्सरसाइज करना चाहें तो कर सकते हैं।

कुछ माननीय सदस्य : १२ बजे।

श्री उपाध्यक्ष : फिर तो बहुत ज्यादा समय बढ़ जायेगा। इसलिए मैं कह रहा हूँ कि ११।। बजे तक एकोमोडेट कर लें तो अच्छा रहेगा।

कुछ माननीय सदस्य : १२ बजे तक चला लें तो अच्छा रहेगा। उसके बाद मुख्य मन्त्रीजी उत्तर दे दें।

श्री उपाध्यक्ष : श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल (जौहरी बाजार, जयपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, पिछले ३ दिनों से इस सदन में वर्तमान मन्त्री-मण्डल के विरुद्ध जो अविश्वास का प्रस्ताव पेश किया है उस पर बहस चल रही है। इस बहस के दौरान अनेक माननीय सदस्यों ने इस सरकार के ऊपर जिस प्रकार के गम्भीर आरोप लगाये हैं, सरकार की असफलता का जो चित्रण किया है, राज्य की गिरती हुई आर्थिक व्यवस्था का जो नक्शा पेश किया है और भ्रष्टाचार के एक नहीं अनेकों मामले इस सदन में जो पेश किये हैं जिनमें से अधिकांश का जवाब यह सरकार इस सदन

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल) (११.०० म. पू०)

में आज तक भी नहीं दे पायी। मैं समझता हूं उपाध्यक्ष महोदय, कि आज कुछ और अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। समय की सीमा और इतने अधिक तथ्य सदन के सामने आये हैं कि जिनके प्रमाण की भी आवश्यकता नहीं है। जिनसे कोई भी साधारण और सामान्य बुद्धि का व्यक्ति इस नतीजे पर पहुंच सकता है कि यह वर्तमान मन्त्रिमण्डल जिस प्रकार का गठित है इसमें सदन का विश्वास नहीं है। पिछले १६ सालों से हिन्दुस्तान में और राजस्थान में कांग्रेस की हुकूमत है। विकास के सम्बन्ध में अनेक आंकड़े यह सरकार पेश करेगी। आंकड़ों के नाम पर इस देश की जनता को गुमराह करने की कोशिश यह सरकार करती आई है। जो आंकड़े इनके अनुकूल हैं उन आंकड़ों के सम्बन्ध में यह हमेशा कहती आई है और उनको सदन में पेश भी करेगी। लेकिन जो आंकड़े इनके प्रतिकूल हैं उन आंकड़ों के संबंध में यह सरकार अनेक प्रकार की धारणायें सदन में पैदा करने की कोशिश करती है। उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान के सभी तरफ ध्यान लगाकर देखा जाये जिस प्रकार का चित्र हमारे सामने है, आज राजस्थान में जिस प्रकार की परिस्थितियां हैं, पिछले कुछ सालों में राजस्थान के इस मन्त्री परिषद् ने जिस प्रकार के काले कारनामे किये हैं उन सब को देखने के बाद कुछ ऐसा लगता है कि यह राजस्थान की सरकार जनता के हित में कोई भी कदम नहीं उठाना चाहती है।

उपाध्यक्ष महोदय, कितने ही बड़े भारी मामले इस सदन में रखे जायं, प्रमाण सहित इस सदन में आरोप लगाये जायं, एक एक मंत्री और एक एक अधिकारी के सम्बन्ध में इस सदन में कहा जाय, लेकिन उन सब के बावजूद आज यह सरकार उनका कोई जवाब न दे सके और केवल यह कह कर बचने की कोशिश करे बहमत के आधार पर कि यह आरोप निराधार हैं ये आरोप मिथ्या हैं, ये आरोप तथ्यहीन हैं, मैं समझता हूँ कि इस तरह से कहना वाकयात से मुंह मोड़ना है।

उपाध्यक्ष महोदय, सरदार प्रतापसिंह कैरों जिस समय पंजाब में मुख्य मंत्री थे, उस समय भी उन पर इसी प्रकार के आरोप लगाए गए थे और जो रवैया अख्तियार किया गया था वही रवैया यह मंत्री-मण्डल अख्तियार कर रहा है राजस्थान में, और जिस समय बख्शी गुलाम मोहम्मद के विरुद्ध काश्मीर की विधान सभा में इसी प्रकार के आरोप लगाए गए तो उस समय भी इसी तरह का जवाब दिया गया जो आज राजस्थान के ये मंत्री देते हैं, और जिस समय उड़ीसा के मुख्य मंत्री, बीजू पटनायक पर चार्जेज लगाये गये तो उनका भी वही जवाब था जो आज राजस्थान के मंत्री-मण्डल का जवाब है, राजस्थान की सरकार का जवाब है। लेकिन, उपाध्यक्ष महोदय, हमारे सामने नतीजे साफ आए, वहीं प्रतापसिंह कैरों और बख्शी गुलाम मोहम्मद और बीजू पटनायक जैसे अनेक मंत्रियों की पालना करने वाली यही कांग्रेस की केन्द्र की हुकूमत ने जनता और पब्लिक के विरोध के फलस्वरूप इनके विरुद्ध कमीशन बैठाया तो क्या हालत हुई ? सरदार प्रताप-

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल)

सिंह की क्या हालत हुई ? जब प्रतापसिंह कैरों, बख्शी गुलाम मोहम्मद आदि के बारे में आरोप लगाए जाते थे तो उनको निराधार और मिथ्या और तथ्यहीन कहा जाता था। हमारे माननीय गृह मंत्री कहते थे कि वे मिथ्या हैं, लेकिन उनका परिणाम क्या निकला ? काश्मीर की विधान सभा में जब बख्शी गुलाम मोहम्मद के बारे में कहा जाता था तो उस समय कांग्रेस के एम० एल० एज० ऐसे ही तालियां बजाते थे जैसे आज राजस्थान की विधान सभा में इन मंत्रियों पर आरोप लगाए जाते हैं और ये कांग्रेस के सदस्य तालियां बजाते हैं। लेकिन तालियां बजाने से बख्शी गुलाम मोहम्मद बच नहीं सके, बीजू पटनायक बच नहीं सके और मैं फिर कहता हूं कि तालियां बजाने से ये राजस्थान के भ्रष्ट मंत्री भी बचाये नहीं जा सकेंगे। इनकी भी वही हालत होने वाली है जो बख्शी गुलाम मोहम्मद की हुई, इनकी भी वही हालत होनी वाली है जो बीजू पटनायक की हुई। ये भी उसी रास्ते पर जाने वाले हैं जिस रास्ते पर प्रतापसिंह कैरों गए।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं पूछना चाहता हूं कि राजस्थान के इस मंत्रीमण्डल में सोलह मंत्री है और ८ उप मंत्री हैं। ८ उप मंत्रियों को मैं इस समय छोड़ना चाहता हूं........

श्री हरिराम चौहान : रहने के काबिल हैं।

श्री भैरोंसिंह : इनमें से कुछ को तो नौ महीने भी नहीं हुए हैं, ७–८ महीने ही हुए हैं, अभी ये अधकचरे हैं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : मैं इन १६ मंत्रियों के सम्बन्ध में ही, उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से इन सबको, इन १६ मंत्रियों को कहना चाहता हूं कि सुखाड़िया साहब आप १६ मंत्रियों से पूछें कि कोई भी खड़ा होकर यह कह दें कि जिसके ऊपर इस सदन में प्रमाणों के सहित कोई आरोप भ्रष्टाचार का नहीं लगाया गया। एक मंत्री भी खड़ा होकर कह दे.......

श्री नाथूराम मिर्धा (कृषि मंत्री) : मैं कहता हूं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : तो ठीक है, मैं श्री गणेशाय नमः, उपाध्यक्ष महोदय, श्री नाथूरामजी से ही करता हूं।

श्री रामानन्द अग्रवाल : और तो चैलेंज को मानने को तैयार नहीं हैं।

श्री भैरोंसिंह : और तो चार्जेज मानते हैं।

श्री हरिराम चौहान : यह तो मान लिया कि मेरे सिवाय बाकी के लोग भ्रष्टाचारी हैं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : देखिए, उपाध्यक्ष महोदय, इस मंत्री परिषद के १६ मंत्रियों में से एक मंत्री ने इस बात को चुनौती दी है। मैं उनके सम्बन्ध में ही कहूंगा और बाकी के लिए कहने की अब आवश्यकता नहीं है। By omission, by implication, that goes without saying.

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल)

उपाध्यक्ष महोदय, मैं माननीय नाथूरामजी मिर्धा, इनके मामले में न तो उस फिशरीज कॉन्ट्रेक्ट के सवाल को लेता हूं जो पुराना हो चुका है, इसमें उन्होंने कितने घोटाले किये, न उस विश्नोई कमेटी की बात को जो एडीशनल रजिस्ट्रार हैं और उनके स्वयं के अधीनस्थ अधिकारी हैं, उन्होंने लिखा है कि राजस्थान क्रय विक्रय सहकारी संघ ने रेल्वे को ८ लाख रुपये की रिश्वत, उस क्रय विक्रय सहकारी संघ के अध्यक्ष श्री कुम्भारामजी आर्य जो उस समय अध्यक्ष थे, उन्होंने फूड मिनिस्टर नाथूरामजी को कह दिया था और उनकी जानकारी में यह आठ लाख रुपया रिश्वत का दिया गया। मैं उन मामलों को आज नहीं उठाऊंगा........

श्री भैरोंसिंह : वह मामला भी नहीं उठाना कि भारत सरकार के आदेशों के अनुसार इनसे ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट लिया गया था।

श्री नाथूराम मिर्धा : ये जितनी अप्रामाणिक बातें कही जाती हैं मैं उनका कई दफा जवाब दे चुका हूँ। आपको जवाब तो समझ में आता नहीं है और कहते जाइए और तालियां बजवाते जाइए।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : मैं उस ट्रांसपोर्ट के सवाल को भी नहीं लेता जो केस अदालत में गया और जिसमें खुल्लमखुल्ला अदालत में यह आरोप लगाया गया कि राजस्थान का ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर नाथूराम करप्ट है, मैं इसका भी हवाला नहीं देता........

श्री नाथूराम मिर्धा : कौन सी अदालत का फैसला है, आप तो किसी कुरान की आयतें कह दें तो क्या हो जाएगा ?

श्री भैरोंसिंह : मैं इनको एक बात के लिए और सावधान कर देना चाहता हूँ। ओम ट्रेडिंग कॉर्पोरेशन को झुंझुनूं से फूड ग्रेन्स ट्रांसपोर्ट करने का जो कॉन्ट्रेक्ट का मामला है और जिसके बारे में विजिलेंस कमीशन की रिपोर्ट में लिखा है उसका जिक्र भी मत कर देना।

श्री नाथूराम मिर्धा : आप अपनी मन घड़न्त बातें कहते जाइए, मन घड़ंत बातों का कोई जवाब नहीं है ! मैं तो खेतान ट्रांसपोर्ट को जानता ही नहीं श्रीमानजी।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : मैं श्री नाथूरामजी के खिलाफ विरोधी दल के आरोपों की बात नहीं करता बल्कि उन्हीं की पार्टी के, कांग्रेस पार्टी के रूपवास से आने वाले माननीय सदस्य श्रीभानजी के द्वारा सन् १९५७ से लेकर १९६२ के दौरान कोई सत्र और कोई दिन ऐसा नहीं गया जिसमें इनके खिलाफ गम्भीर आरोप नहीं लगाये गए हों, मैं उन आरोपों को भी दोहराना नहीं चाहता हूँ....

श्री नाथूराम मिर्धा : वह तो चले गए आरोप लगाने वाले और आरोप लगने वाला यहीं बैठा है।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा (रायसिंहनगर) : यही देश का दुर्भाग्य है।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान के ही नहीं, हिन्दुस्तान

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल)

के तीन हजार एम० एल० एज० और हिन्दुस्तान के साढ़े सात सौ पार्लियामेंट के मेम्बर, चार हजार एम० एल० एज० और एम० पीज० हैं उन सब में आपका जैसा हाल इस सदन में र ा है जो व्यवहार और शिष्टाचार का हाल इन फूड मिनिस्टर साहब का विधान सभा के प्रति रहा है ...

श्री नाथूराम मिर्धा : विरोधी दल की तरफ बैठने वालों की हालत तो रोज ही देखते हैं कि उनका कैसा व्यवहार रहता है ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : उपाध्यक्ष महोदय मैं इस समय इस सारे व्यक्तिगत प्रश्नों को नहीं उठाना चाहता हूं । जिस प्रकार के व्यक्तिगत चार्जेज़ कौल साहब के साथ चरित्र सम्बन्धी चार्जेज़ उठाए गए थे, मैं व्यक्तिगत रूप से उनको अच्छा नहीं समझता । लोग कहते हैं, चर्चा करते हैं, नाम लेते है, मैं उनको अच्छा नहीं समझता, ये उनकी व्यक्तिगत बातें हैं, लेकिन उपाध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मुख्य मन्त्री महोदय से केवल एक प्रश्न पूछना चाहता हूं । राजस्थान सरकार से कोई आदमी पचास लाख रुपये मांगे कि मेरे पचास लाख रुपये दीजिये.......

श्री नाथूराम मिर्धा : नाथूराम तो खत्म हो गया आपकी चौपड़ी में से ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : इसी में से नाथूरामजी निकलेंगे ।

श्री नाथूराम मिर्धा : उंदरियां निकलेगी, पहाड़ खोदते हैं और उंदरियां निकलती हैं ।

श्री भैरोंसिंह : विजिलेंस कमीशन की रिपोर्ट को पढ़कर सुना देता हूं ।

श्री उपाध्यक्ष : माननीय श्री अग्रवाल बोल रहे हैं ।

(शोरगुल–व्यवधान–अश्रव्य)

श्री जोधसिंह चौहान (गिरवा) : इतना बड़ा हाउस इसको सुनना चाहता है ।

श्री उपाध्यक्ष : सदन में इस समय श्री अग्रवाल बोल रहे हैं

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : ऐसी बहुत सी रिपोर्टे हैं क्या फायदा ।

(श्री भैरोंसिंह द्वारा श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल को रिपोर्ट की प्रति दी गई) ।

कई बातें कही गई हैं । मैं इस रिपोर्ट की सदन की मेज पर कापी रख दूंगा । मैं समझता हूं कि काफी हो जायेगा इससे ।

"It was proposed that the comments of the Collector, Jhunjhunu, might be obtained before passing final orders. The Minister for Food on 1. 7. 64 passed an order that since the tender of M/s Om Trading Co. was admitted to be the lowest, the entire contract might be given to M/s Om Trading Co., pending the final enquiry by the Food Secretary on certain points raised by the minutes of the Minister.

विजिलेंस कमीशन ने कहा कि ओम ट्रेडिंग को नहीं मिलना चाहिए था वह परसराम खेतान को मिलना था..., ...

श्री नाथूराम मिर्धा : कोई आदमी शिकायत करे....

श्री भैरोंसिंह : और आप बिना देखे ही हुक्म कर दें।

श्री नाथूराम मिर्धा : आप सुनिये मेरी बात। विजिलेंस कमीशन क्या कहता है, यह तो जब मेरे सामने मामला आएगा तब मैं देखूंगा। लेकिन इसमें मेरा मेला फाइडी क्या है? कोई आदमी कहे कि मेरा लोएस्ट टेन्डर था यह कॉन्ट्रेक्ट मुझे मिलना चाहिये था और जो दूसरे को कान्ट्रेक्ट दिया जा रहा है वह लोस्ट नहीं है, तो जब तक मैं उस सारे मामले को देख न लूं तब तक के लिए अगर में उस हुक्म को रोक देता हूं तो उसमें क्या गुनाह करता हूं? कल को आप ही कहते कि आपके पास शिकायत आई और आपने कार्यवाही नहीं की।

श्री भैरोंसिंह : इसका मतलब है कि जिसका लोएस्ट टेन्डर था उसको कॉन्ट्रेक्ट नहीं मिला और दूसरे को मिला?

श्री नाथूराम मिर्धा : मैंने कभी नहीं कहा कि इसको दिया जाय या उसको दिया जाय।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : विजिलेन्स कमीशन ने कहा है।

श्री नाथूराम मिर्धा : आप गलत कहते हैं। विजिलेन्स कमीशन ने ऐसा नहीं कहा है यह मेरी जानकारी में है। आप खोदते पहाड़ हैं और निकलती ऊंदरियां हैं और वह भी मरी हुई निकलती हैं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : उपाध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन कर रहा था कि राजस्थान सरकार पर एक व्यक्ति ने इस बात का दावा किया कि मुझे राजस्थान सरकार से ८० लाख रुपये लेने हैं। राजस्थान सरकार ने कहा कि हम से नहीं लेने हैं। मामला पंच फैसले को सौंपा गया। मैं संक्षेप में निवेदन करने का प्रयत्न करूंगा। पंच फैसले में सवाल खड़ा हुआ कि राजस्थान सरकार नट रही है और कह रही है कि ८० लाख रुपये नहीं देने हैं। राजस्थान सरकार ये ८० लाख रुपये बचा सकती थी यदि राजस्थान के मुकदमे की पैरवी करने वाले वकील ने जो यह कहा था कि राजस्थान सरकार को यह पोइन्ट उठाना चाहिये कि हमारा उस पार्टी के साथ कोई कॉन्ट्रेक्ट कोई लिखित में नहीं हुआ है जो विधान के अनुसार होना चाहिये था, यदि यह पोइन्ट उठती तो राजस्थान सरकार बच सकती थी। वकील ने कहा कि यह पोइन्ट उठाया जाय कि ८० लाख की देनदार सरकार नहीं है क्योंकि उस पार्टी के साथ अन्डर कॉन्सटिट्यूशन एग्रीमेन्ट नहीं है, यदि यह पोइन्ट सरकार उठाती तो ८० लाख रुपये बच सकते थे। लेकिन उस पार्टी को ८० लाख रुपये दिलवाने थे इसलिए राजस्थान सरकार ने आदेश दिया और वकीलों से यह कहा कि यह कानूनी मुद्दा आर्बिट्रेशन के सामने नहीं उठाया जाय कि हमारा कॉन्ट्रेक्ट नहीं हुआ है और राजस्थान सरकार देनदार नहीं है। जो ८० लाख रुपये बच सकते थे वह पोइन्ट आप नहीं उठा सकते...

श्री नाथूराम मिर्धा : आप क्या राणाप्रतापसागर की मोडर्न कन्स्ट्रक्शन कंपनी की बात कह रहे हैं?

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : जी हां, उसमें खाये हैं ५ लाख, रुपया खाए हैं और ५ लाख खाने वाले खड़े होकर बोलें यह ऊंदरी है या ऊंदरा है । ८० लाख रुपये दिला दिये और ५ लाख खा गये, किस मुंह से बोलना चाहते हैं ।

श्री नाथूराम मिर्धा : मैं आपसे, उपाध्यक्ष महोदय, निवेदन करना चाहता हूँ कि मोडर्न कंस्ट्रक्शन कंपनी की बात कही जा रही है, चम्बल कन्ट्रोल बोर्ड बना हुआ है, भारत सरकार के मिनिस्टर उसके चैयरमेन हैं। उसके साथ साथ भारत सरकार की फाइनेन्स मिनिस्टरी के नुमायन्दे हैं, सी. पी. सी. जो हाइयेस्ट बॉडी कन्ट्री की है उसके मेम्बर हैं, मध्य प्रदेश गवर्नमेंट के नुमायन्दे उसमें हैं, राजस्थान सरकार के फाइनेन्स डिपार्टमेन्ट और दूसरे सारे सम्बन्धित लोग उसके नुमायन्दे हैं, उसमें इरिगेशन मिनिस्ट्री के भी मेम्बर हैं, यह मामला उस चम्बल कंट्रोल बोर्ड के द्वारा डील विद् हुआ है। हाइयेस्ट लीगल और फाइनेन्शियल एडवाइज़र्स के सामने जो मामला गया और उनके द्वारा आर्बिट्रेशन के सामने रखा गया था उसके बारे में क्या जवाब दिया, क्या लाइबेलिटि होती क्या नहीं, उसके बारे में राज्य सरकार के सिंचाई मंत्री का कोई लेना देना नहीं है। जो भी फैसला है वह चम्बल कंट्रोल बोर्ड ने किया है इसलिये ५ लाख रुपये लेने की बात कहना झूठा प्रचार है, गंदा प्रचार है, नीचे दर्जे का प्रचार है ...

श्री भैरोंसिह : आप स्पष्टीकरण के लिये कह दें कि जब गवंनमेन्ट एडवोकेट ने आर्बिट्रेशन के सामने यह प्ली ली कि गवर्नमेन्ट और पार्टी के बीच में एग्रीमेन्ट नहीं है तो आपके इरिगेशन विभाग ने गवर्नमेन्ट एडवोकेट को टेलिफोन किया और बाद में कन्फर्म करते हुए लैटर लिखा गया....

श्री नाथूराम मिर्धा : यह बिल्कुल असत्य बात है। मैं कहना चाहता हूं कि यहां के सिंचाई विभाग ने गवर्नमेन्ट एडवोकेट को आर्गुमेन्टस के बारे में कोई निर्देशन नहीं दिया। जो कुछ निर्देशन गवर्नमेन्ट एडवोकेट को दिया है तो चम्बल कंट्रोल बोर्ड है उसकी जो स्पेशल कमेटी बनी थी, जो कुछ हिदायतें दी गई उस कमेटी की तरफ से दी गई, राजस्थान गवर्नमेन्ट का इसमें कोई हाथ नहीं है ।

श्री भैरोंसिह : मैं समझता हूं गवर्नमेन्ट एडवोकेट को इरिगेशन विभाग ने कोई चिट्ठी दी या नहीं, इस बारे में कुछ नहीं कह कर उनका जो नोट है ...

(शोरगुल)

गवर्नमेंट एडवोकेट का नोट, गवर्नमेंट एडवोकेट की फाइल, गवर्नमेन्ट एडवोकेट को इरेंगेशन विभाग द्वारा लिखी गई चिट्ठियें सारी सदन की मेज पर फाइल के साथ रखवादी जावें। मंत्रीजी कह रहे हैं कि इरिगेशन विभाग की तरफ से कोई निर्देश नहीं दिया गया यदि उनका कहना सही है तो हम इस्तीफा देंगे वर्ना वे दें ।

श्री नाथूराम मिर्धा : कोई फाइल और सारे कागजात आपके उठ कर कह देने से कि सदन की मेज पर रख दिये जावें तो यह कोई रखने का तरीका नहीं है ।

(शोरगुल)

(श्री नाथूराम मिर्धा)

मैं महोदयजी, अध्यक्ष महोदय, और उपाध्यक्ष महोदय को कॉन्फीडेन्स में लेकर जो कुछ देखना चाहें दिखाने को तैयार हूं।

श्री भैरोंसिंह : उपाध्यक्ष महोदय, इतना कर दिया जाय कि इस सदन को कल के लिये स्थगित कर दिया जाय और इनके आदेश की सर्टिफाइड कॉपी सदन की मेज पर मैं रखूंगा।

श्री नाथूराम मिर्धा : मैंने अध्यक्ष और उपाध्यक्ष महोदय को कॉन्फीडेन्स में लेकर फाइल दिखाने का कहा है।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : ओन ए पोइन्ट ऑफ ऑर्डर सर, इस सदन में जितने भी जवाब हमारी तरफ से उठाये गये मुद्दों पर मंत्रीजी देते हैं और हम जितनी बातें स्पष्ट कराना चाहते हैं फाइल के आधार पर साबित करने को तैयार हैं, मंत्रीजी जो असत्य बातें कहते हैं उनके बारे में आप फाइल मंगाकर देख लें उसके बाद पता चल जायगा कि वास्तविकता क्या है।

श्री नाथूराम मिर्धा : आप जबानी बात कह रहे हैं।

श्री मानिकचंद सुराणा : मैं प्रिविलेज का प्रश्न आपके सामने उठाना चाहता हूं मैं उसको लिख कर दे रहा हूं। नाथूरामजी ने जो यहां पर बयान दिया है वह बयान सदन को गुमराह करनेवाला है, असत्य बयान दिया है. हाउस को जानबूझ कर गुमराह करने की कोशिश की है, इसलिये मैं उनके खिलाफ एक विशेषाधिकार का प्रस्ताव पेश करना चाहता हूं। दोनों तरफ की बहस सुनने से साफ है कि इरिगेशन विभाग ने आदेश दिया है कि यह प्ली नहीं ली जाय कि एग्रीमेन्ट नहीं हुआ है, कान्ट्रेक्ट साइन नहीं हुआ है। यह फाइन्डिंग नहीं है कि ८० लाख रुपये दिये गये या नहीं दिये गये, लेकिन इन्होंने कहा कि हमने निर्देश नहीं दिया जबकि वास्तव में निर्देश दिया है। इनका यह सारा बयान असत्य है, सदन को गुमराह करने वाला और सदन की प्रतिष्ठा को गिरानेवाला है इसलिये मैं प्रस्ताव दे रहा हूं उसे प्रिविलेज समिति को भेजा जाय ताकि सारे डॉक्यूमेन्ट्स देख कर रिपोर्ट दी जा सके।

(शोरगुल)

श्री नाथूराम मिर्धा : मैं आपकी धमकी से डरनेवाले नहीं हूं। फैसला करेंगे तो श्री मानजी आप (उपाध्यक्ष) करेंगे। आप एक एक नहीं सौ लिख कर दीजिये।

एक माननीय सदस्य : आप उनको दबाना चाहते हैं?

श्री मानिकचंद सुराणा : एक ब्रीच ऑफ प्रिविलेज सदन में....

श्री रघुनाथ बिश्नोई (सांचोर) : क्या रखा है? कागज रखो पहले फिर बाद में देखेंगे।

श्री उपाध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : अब चूंकि इस सम्बन्ध में, जो सारा विवाद आर्बिट्रेशन के सम्बन्ध में राज्य सरकार की ओर से एडवोकेट जनरल को क्या हिदायत दी गई

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल)

और वहां से क्या लेटर आया– इस सारे मामले की आर्बिट्रेशन के सामने प्रोसीडिंग्स चल रही हैं, इस मामले में विरोधी दल के नेता ने अपनी तरफ से ऑफर दी है, इस सम्बन्ध में मेरी भी ऑफर है और मैं चाहता हूं कि आप भी अपनी तरफ से ऑफर दे दें....

श्री नाथूराम मिर्धा : क्या ?

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : कि इस गवर्नमेंट ने इन्स्ट्रक्शन नहीं दिये कि प्लो को एबन्डन किया जाय ।

श्री नाथूराम मिर्धा : यह आपने कहा कि मैंने उसके बारे में हुक्म जारी किया है ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : हुक्म का मतलब सरकार होता है, अभी सुबह ही अध्यक्ष महोदय ने कहा कि हुक्म का मतलब मंत्री नहीं होता, गवर्नमेंट होती है । अगर इस सारे मामले में सेक्रेटरी का ऑर्डर है कि इस प्ली को एबन्डन कर दिया जाय तो यह आदेश नाथूरामजी ! आपका आदेश माना जायगा । जिस तरह से भूतिलगम का केस हुआ, सुब्रामण्यम का केस हुआ, भूतलिंगम के मामले में सुब्रामण्यम की जिम्मेदारी होने का मामला हुआ उसी प्रकार से जिम्मेदारी आपकी है । अगर सेक्रेटरी इसके लिए जिम्मेदार है तो आपकी जिम्मेदारी है और अगर सेक्रेटरी का ऑर्डर इस सम्बन्ध में है तो वह मंत्री का ऑर्डर माना जायगा और लीगली जो एक्शन सेक्रेटरी का है वह आपका माना जायगा....

श्री नाथूराम मिर्धा : आपके कहने से मैं यह समझूं कि नाथूराम का तो कोई हुक्म नहीं है तो नाथूराम ने पांच लाख किस बात के लिए ?

श्री भैरोंसिंह : हुक्म तो आपके गांव में भी नहीं चलता है ।

श्री नाथूराम मिर्धा : अब आप कहते हैं कि सेक्रेटरी ने हुक्म दिया ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : सेक्रेटरी के हुक्म का मतलब राजस्थान सरकार का हुक्म होता है ।

श्री नाथूराम मिर्धा : अभी आप कहते हैं सेक्रेटरी ने दिया । फिर इस पर आ जायेंगे कि डिप्टी सेक्रेटरी ने दिया और फिर असिस्टेन्ट सेक्रेटरी पर आ जायेंगे ।

श्री मानिकचन्द सुराणा : यों निकलने की, भागने की कोशिश मत करिये । सेक्रेटरी का हुक्म होता है वह आपका हुक्म माना जायगा ।

श्री नाथूराम मिर्धा : मैंने कहा, न तो जबानी हुक्म मैंने दिया है और न जबानी हुक्म को सेक्रेटरी से मनाने की आदत मैं रखता हूं, और न इस प्रकार की परम्पराएं मैं प्रजातन्त्र में डालना चाहता हूं । यह आपका कयास है और आपका ख्याली पुलाव है-यह सब बेनकाब हो जायगा । आप इसको समझें ।

श्री मानिकचन्द सुराणा : यदि आपके सेक्रेटरी ने बयान दे दिया कि यह जो हुक्म दे दिया है, यह हुक्म नाथूरामजी के आदेश

(श्री मानिकचन्द सुराणा)

से दिया है तब आप मानेंगे और तब आप इस्तीफा देंगे ।

श्री नाथूराम मिर्धा : पहले नाथूराम के लिए कह रहे थे । अब नाथूराम के लिए नहीं सेक्रेटरी के लिए कह रहे हैं । मैं फाइल मंगा रहा हूँ, यह भी मैं आपको बताऊंगा ।

श्री मानिकचन्द सुराणा : बड़े अफसोस की बात है, उपाध्यक्ष महोदय,....

श्री भैरोंसिंह : मैं यह निवेदन कर दूं....

श्री नाथूराम मिर्धा : जो कमेटी बनी हुई है, यह उस कमेटी का हुक्म है ।

श्री भैरोंसिंह : मैं निवेदन कर दूं कि माननीय मन्त्री महोदय दस-बारह साल से मन्त्री हैं, फिर यह कैसे कहते हैं कि मन्त्री का हुक्म नहीं है ? कोई सेक्रेटरी हुक्म करता है तो ओन बिहाफ ऑफ गवर्नमेंट– यह दो शब्द होते हैं । जब भी सेक्रेटरी कोई लैटर लिखते हैं तो उसमें लिखते हैं "I am directed to convey such and such" या फिर यह कि "The Government has been pleased to such and such. यह नहीं लिखते हैं कि "Nathu Ramji has been pleased" या कि "Nathu Ramji has directed to convey such and such"; यह नहीं लिखा जाता है । गवर्नमेंट का एक मेन्युअल है, गवर्नमेंट का एक प्रोसीजर है कि सेक्रेटरी के नाम से ऑर्डर जायगा और मिनिस्टर के दस्तखत केवल फाइल पर होंगे । और कहीं भी लैटर में, मिनिस्टर ने उस बारे में क्या कहा है, इस बारे में रेफरेन्स नहीं होता है । और सेक्रेटरी का जो ऑर्डर होता है वह गवर्नमेंट का ऑर्डर समझा जाता है और गवर्नमेंट का ऑर्डर है वह कन्सर्न्ड मिनिस्टर का ऑर्डर होता है ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : मैं समझता हूं कि इसका कॉन्स्टीट्यूशन में भी प्रोवीजन है, लेकिन मैं अधिक विवाद में नहीं जाना चाहता । हाईकोर्ट की यह रूलिंग हो चुकी है कि मिनिस्टर डाइरेक्टली ऑर्डर नहीं लिखता है । वह आर्डर भी देता है तो सेक्रेटरी उस ऑर्डर को निकालता है और वह ऑर्डर गवर्नमेंट की तरफ से निकलता है ।

श्री नाथूराम मिर्धा : यह तो मान गये कि वह सेक्रेटरी से निकला है ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : आप यह तो बता दीजिए कि वह जो ऑर्डर दिया है प्ली को एबन्डन करने के बारे में वह डिप्टी सेक्रेटरी ने दिया है या सेक्रेटरी ने दिया है ।

श्री नाथूराम मिर्धा : मैं समझ गया ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : अब फिर समझ लीजिये दुबारा ।

श्री नाथूराम मिर्धा : यह फैसला या प्ली एडवोकेट जनरल को लेनी चाहिये या क्या लेनी चाहिये, इसके लिए मैं निवेदन करूं कि आर्बिट्रेशन में जिस तरह से कानूनी व्याख्याओं के कारण केस लम्बा होता जा रहा था उससे कन्सट्रक्शन के प्रोग्राम के अन्दर दिक्कत आ रही थी । सीमेन्ट कॉन्क्रीट। इजेशन की जो पुरानी क्वान्टिटी थी, तादाद

Page No.50

(श्री नाथूराम मिर्धा)

थी वह खत्म होती जा रही थी और खत्म हो जाने के पहले पहले प्रबन्ध करना था, इस सारे मामले पर विचार करने के लिए चम्बल कन्ट्रोल बोर्ड ने सारे मामले में डिटेल्स में छान बीन की और एक चम्बल कन्ट्रोल बोर्ड की एक कमेटी बनी। उस कमेटी ने कहा कि इस मामले को आर्बिट्रेशन के मामले को निपटाया जाय और क्या वाजिब है और क्या गैर-वाजिब है इन सारे मसलों का फैसला उस कमेटी ने किया। और उसने प्रेसीडेन्ट को अधिकार दिया कि बोर्ड के जो पॉवर्स हैं, बोर्ड की एब्सेंस में उनके ऊपर क्या वाजिब आप समझते हैं उसके अनुसार प्रेसीडेंट फैसला कर सकते हैं। उन्होंने जो फैसला किया और उनकी तामील में जो कुछ इम्प्लीमेंटेशन यहां से हुआ उससे राजस्थान गवर्नमेंट के सेक्रेटेरियट, राजस्थान गवर्नमेंट के सेक्रेटरी और मिनिस्टर से कोई ताल्लुक नहीं है। क्योंकि यह निर्णय लिया गया है वह चम्बल कन्ट्रोल ऑथोरिटी की हाइएस्ट लेवल पर हुआ है और वहां जो हुआ है उसका इम्प्ली-मेंटेशन अगर यहां इरिगेशन डिपार्टमेंट उन हुक्मों के आधार पर करता है तो वह हुक्म गवर्नमेंट का नहीं है, या सेक्रेटरी का नहीं है। यह चम्बल कन्ट्रोल बोर्ड, जो हाइएस्ट ऑथोरिटी है, जो इस प्रोजेक्ट को डील करती है, उसका हुक्म है और उसको पूरा करना गवर्नमेंट का फर्ज है।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस सम्बन्ध में ज्यादा नहीं कहना चाहता किन्तु इस मामले को आप थोड़ा समझ लीजिये। नाथूरामजी जो कह रहे हैं वह आर्बिटेशन में जाने के पहले का कह रहे हैं कि चम्बल कन्ट्रोल बोर्ड ने उस पर विचार किया, उसके बाद में चम्बल कन्ट्रोल बोर्ड की एक कमेटी बनी और उसने उस पर विचार किया और फिर मैटर रेफर किया। मैं उस समय के लिए नहीं कह रहा हूँ, मैं उसके बाद की बात कह रहा हूं। आर्बिट्रेशन में इस मामले का रेफरेन्स हुआ, आर्बिट्रेशन में मॉडर्न कन्स्ट्रक्शन कम्पनी और राजस्थान गवर्नमेंट जाती है और आर्बिट्रेशन में यह मामला चलता है। उस वक्त राजस्थान गवर्नमेंट की तरफ से यह प्ली उठाने की बात आती है कि मॉडर्न कन्स्ट्रक्शन कम्पनी से राजस्थान गवर्नमेंट का एग्रीमेंट हुआ नहीं, अगर यह प्ली दे गवर्नमेंट एडवोकेट तो राज्य सरकार के अस्सी लाख रुपये बच सकते है। यह स्थिति है, यह आर्बिटेशन के सामने मामला आने के बाद की बात है। तब गवर्नमेंट से लेटर जाता है कि इस प्ली को मत उठाओ। अगर यह प्ली उठाई गई और उसके बाद में मॉडर्न कन्स्ट्रक्शन कम्पनी हाई कोर्ट में गई तो वहां हार जायगी और उसको अस्सी लाख रुपये नहीं मिलेंगे। मैं आर्बिट्रेशन में मामला जाने के पहले की बात नहीं कह रहा हूं, जिस चम्बल कंट्रोल बोर्ड, कमेटी और जांच की बात आप कह रहे हैं, वह नहीं कह रहा हूँ। मैं आर्बिट्रेशन में जाने के बाद की बात कह रहा हूं। यह राजस्थान गवर्नमेंट के लिए प्ली लाभदायक है, वह प्ली उठाने की बात है उसको नहीं उठाने के बारे में ऑर्डर दिया है जब कि राजस्थान को आपके वकील ने लिखा कि यह प्ली उठानी चाहिए, इससे राजस्थान गवर्नमेंट का पैसा बचेगा। लेकिन गवर्नमेंट के द्वारा यह आदेश दिया गया कि इस प्ली को वहां नहीं उठाया जाय। इस प्ली के बारे में मैंने कहा और कुछ नहीं कहा।

Page No.51

श्री मानिकचन्द सुराणा : उपाध्यक्ष महोदय, इस मामले में लिखित में ब्रीच ऑफ प्रिवलेज का मोशन भेज दिया गया है। मेरी मांग यह है कि इसके ऊपर आप अभी व्यवस्था दें, या घंटे, दो घंटे के बाद में व्यवस्था दें, लेकिन इसके ऊपर निश्चित रूप से व्यवस्था दी जानी चाहिए। इस ब्रीच ऑफ प्रिवलेज के बारे में ऐसा नहीं हो कि यह सदन समाप्त होने को है और यह मामला अभी पेंडिंग रह जाय और फिर यह घोषणा कर दी जाय कि ब्रीच ऑफ प्रिवलेज का मोशन लेप्स हो गया है। इस मोशन पर आपको व्यवस्था देनी चाहिए।

श्री उपाध्यक्ष : इस मामले में माननीय अध्यक्ष व्यवस्था देंगे।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : उपाध्यक्ष महोदय, मेरा बहुत समय ले लिया है, मुझे बोलने का मौका दिया जाय।

श्री उपाध्यक्ष : इस मामले में अध्यक्ष महोदय व्यवस्था देंगे।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : मेरा आधे से ज्यादा समय आपने ले लिया है और मैं एक चौथाई भी नहीं बोल पाया हूँ।

श्री उपाध्यक्ष : आप जरा स्पीडीली रखें।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : अभी तो एक की पूजा हुई है, अभी सोलह हैं।

श्री उपाध्यक्ष : मैं निवेदन कर दूं....

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : क्योंकि इन्होंने मुझे चैलेंज किया इसलिए मैंने कहा है, बाकी के बारे में अभी नहीं कहा है।

श्री उपाध्यक्ष : एक मिनिट ! इसके लिए साढ़े ग्यारह बजे तक का समय निर्धारित किया था।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : अब जल्दी करूंगा।

श्री योगेन्द्रनाथ हाण्डा : १२ बजे तक का रखें, उपाध्यक्ष महोदय।

श्री उपाध्यक्ष : तो बारह बजे का फाइनल रखना है क्योंकि इसमें माननीय मंत्री भी बोलना चाहते हैं।

श्री नाथूराम मिर्धा : और भी बोलेंगे।

श्री उपाध्यक्ष : तो इसलिए समय की सीमा रहनी चाहिए।

श्री गिरधारीलाल व्यास (आसीन्द) : मैं भी बोलूंगा, उपाध्यक्ष महोदय।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : उपाध्यक्ष महोदय,....

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : यह हुकूमत पकड़ में आ रही है, क्या बोलेंगे।

श्री मोहनलाल सारस्वत (रतनगढ़) : कांई बोलेगा, मंत्रि–मण्डल में नाथूरामजी केवल एक है जो बोले है।

श्री नाथूराम मिर्धा : कांई कहो ! आपकी बात सुनी कोनी।

श्री मोहनलाल सारस्वत : सुखाड़िया साहब जब हटेगा थाने सौर कर जावेगा।

श्री उपाध्यक्ष : देखिये, आपका सहयोग होगा और पांच पांच मिनिट बोलेंगे तो बहुत माननीय सदस्य बोल सकेंगे, आप भी बोल सकेंगे।

श्री भैंरोंसिंह आपका भी सहयोग चाहते हैं इस अविश्वास प्रस्ताव में।

श्री मोहनलाल सारस्वत : हटाम्रो, उपाध्यक्ष महोदय, बहुत बड़ो कलंक है यह सरकार, ईने हटाम्रो जल्दी।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : उपाध्यक्ष महोदय, बनेड़ा से आने वाले माननीय सदस्य ने और अनेक माननीय सदस्यों ने जमीन के एलॉटमेंट में हुई अनियमितताओं की बात इस सदन में की। ऐसे मामले और कोटा–परमिट देने के अन्दर गड़बड़ी के अनेक मामले इस केबिनेट के मिनिस्टर्स के खिलाफ, खास तौर से जैसा मैंने निवेदन किया, इसमें मैं डिप्टी मिनिस्टर्स को छोड़ कर चल रहा हूँ, उठाये गये हैं। और कोई भी ऐसा मिनिस्टर नहीं है जिसके खिलाफ मामले न हों, मोटे तौर से, यह बात दूसरी है कि किसी के खिलाफ हल्के मामले हों, किसी के खिलाफ भारी मामले हों, किसी के खिलाफ दो मामले हों और किसी के खिलाफ दस मामले हों। लेकिन, उपाध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि दामोदरलालजी व्यास या सुखाड़ियाजी इस सारे मंत्रि–मण्डल के अन्दर रिंग लीडर हैं, अब नाथूरामजी, मथुरादास माथुर, हरिश्चन्द्र, कौल साहब, भीखाभाई, हरिभाऊजी, हरिभाऊजी तो चले गये, कुम्भारामजी, दामोदरलाल व्यास बरकतुल्ला खां, वृजसुन्दर, अमृतलाल यादव और उसके बाद में चार बने है–निरंजननाथ आचार्य, परसराम मदेरणा, रामप्रसाद लड्ढा, चन्दनमल वैद। उपाध्यक्ष महोदय, मेरे पास यह नाम लिखे हैं और उनके सामने कुछ चार्जेज लिखे हैं और यह सारे कागजात मेरे पास हैं लेकिन समयाभाव के कारण मैं उन सबके सम्बन्ध में कुछ कह सकूंगा–ऐसा सम्भव नहीं है। लेकिन इस सदन की दीवारें इन सारी कार्यवाहियों के बारे में गूंज गूंज कर बोल रही हैं (श्री रघुनाथ विश्नोई के व्यवधान डालने पर) रघुनाथ जी, इस सदन में मामला उठाया गया था प्रदेश कांग्रेस के उस समय के अध्यक्ष श्री हरिदेव जोशी का जो जयपुर से पांच मील दूर सांसी और कंजरों की जमीन खा गये। उसके सम्बन्ध में जांच करने का आश्वासन सुखाड़ियाजी ने दिया था, क्या वह इस सदन को जानकारी देंगे कि क्या हुआ उस मामले का? कहां है वह जांच जिसके लिए आपने आश्वासन दिया था? उस समय के रेवेन्यू मिनिस्टर और चीफ मिनिस्टर ने हाउस को यह आश्वासन दिया था कि मैं जांच कराऊंगा और सदन को जानकारी दूंगा। मैं रेवेन्यू मिनिस्टर से इसके लिए जानना चाहता हूं और पूछना चाहता हूं कि वह फाइल कहां है, श्री हरिदेव जोशी की फाइल कहां है? फाइल गायब है और मिल नहीं रही है। यह तो मन्त्रियों के मामलों की बात है। मैं कहूँगा कि अगर राजस्व मन्त्री यहीं हैं तो वे इसका जवाब देंगे कि हरिदेव जोशी ने सांसी-कंजरों की जमीन, महिलाओं को अलॉट की गई थी उस पर अपना कब्जा करके बंगला बनाया और कब्जा कर के बैठ गये। महिला सदन की जमीन पर भी कब्जा कर लिया। आप महिलाओं का भी इस

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल)

...तरह से आदर नहीं करें, यह तो बड़े शर्म की बात है....

श्री भैरोंसिंह : उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन करूंगा कि ये तो बंगलों की योग्यता पर ही मन्त्री हैं योग्यता से मन्त्री थोड़े ही हैं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : उपाध्यक्ष महोदय, क्या हुआ, शराब के ठेकों के मामलों का, अंग्रेजी और देशी शराब के मामले। उन सारे मामलों को उठाया। और वह भी किसने, कांग्रेस के महामन्त्री श्री ज्वाला-प्रसादजी ने फक्र के साथ उठाया। उस पर जांच का आश्वासन दिया गया। क्या हुआ उस जांच के आश्वासन का ? शराब के ठेकेदारों में आपकी बकाया है उसको आप वसूल नहीं कर सकते हैं। जमीन के अलॉट-मेंट के मामले आपके सामने कितने आये और किन किन के, चाहे किसी तरीके के हों, किसी के कम और किसी के ज्यादा, उन सब प्रमाणों के सहित इस सदन में पेश किए।

आज उपाध्यक्ष महोदय, एक मामला सदन में आया, सोने का मामला। इस पर मैं कुछ नहीं कहना चाहता। बनेड़ा से आने वाले माननीय सदस्य इस पर प्रकाश डालेंगे, मैं श्री बृजसुन्दरजी जो बूंदी से आने वाले माननीय सदस्य हैं उनके बारे में पूछना चाहता हूँ और उनसे ही पूछना चाहता हूँ कि आपके खिलाफ ४२० का मामला चल रहा है उसका क्या हुआ ? उसके बाद आप मंत्री बन गए।

श्री बृजसुन्दर शर्मा (शिक्षा मन्त्री) : कौनसा मामला ?

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : मैं यह बृज-सुन्दरजी से पूछ रहा हूं। आप फिर मंत्री बन गए, सुखाड़ियाजी ने कहा कुछ परवाह नहीं, तेरे पर मुकदमा चल रहा है और मेरे पर भी चल रहा है। हम दोनों एक दूसरे के साथ हैं। मैं उनके बारे में कुछ नहीं कहना चाहता मगर सोने की बात उठाई जाती है तो कहता हूँ। एक आदमी के बयान हैं जिसको आपने तीन बार फंसाना चाहा। एक आदमी सोना बनाता था और बेचता था और उसमें हमारे कांग्रेस के कई माननीय मित्र उसके साथ थे। उन्होंने उसको पूछा कि इसका फॉर्मुला क्या है यह बता दो तो उसने उसको बताने से इन्कार कर दिया।

श्री नाथूराम मिर्धा : आप भी बनावेंगे।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : मेरे पास सभी के लिए मसाला मौजूद है।

खाद्य मन्त्रीजी जरा शर्म करें। राज-स्थान की जनता भूखों मर रही है। उपाध्यक्ष महोदय, आपने कभी गेहूँ के खेतों और बाजरे के खेतों में जाकर देखा है। कभी गए हैं। गए हैं तो सारा खा जाते हैं। जनता को जो अन्न दिया जाता है वह किस प्रकार का है, जरा आप खा कर देखें तो सही। आप एक चम्मच अन्न इसमें से निकाल कर तो खाओ।

(एक अनाज की थेली श्री नाथूराम मिर्धा के सामने मेज पर रखी गई)

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल)

आप इसमें से एक चम्मच अनाज तो खाओ : खाओ, खाओ, खाओ । इसमें से आप १० या २० दाने तो कम से कम खा कर देखो कि किस तरह का अनाज जनता को खिलाते हैं ।

श्री भैरोंसिह : अगर इसमें से खा जावें तो अपका खाया–पिया सब वापिस निकल जाए ।

श्री नाथूराम मिर्धा : दो नमूने और आये ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : फिर राजस्थान सरकार कहती है कि हम मुनाफाखोरी को रोकना चाहते हैं । इसके बारे में तो मैं बाद में बताऊंगा । मैं सोने का किस्सा बता रहा था । मन्त्री महोदय ने कहा कि इसका फॉर्मुला बता दिया जाए । उसने उसको बताने से इन्कार कर दिया । आपने उसको परेशान करना शुरू किया और उस व्यक्ति पर झूठे मुकदमें बनाये और कोर्ट में उसको फंसाया । कोर्ट में उसके बयान हुए हैं उसमें उसने लिखा है कि मैं अपने बयान लिखित में पेश करूंगा । उसने अपने बयानों में कहा है कि बृजसुन्दरजी मेरे साथ जुलाई, ५६ से थे और चांदी बनाई उसको ये बाजार में सप्लाई किया करते थे । मैंने जुलाई, ५८ में....

श्री नाथूराम मिर्धा : एक कागज दूसरा है जिसमें लिखा था सतीशचन्द्रजी भी साथ थे ।

श्री भैरोंसिह : एक बात तो इससे स्पष्ट हो गई । अभी नाथूरामजी ने जो जबान से कहा है कि उन्होंने उस कागज को पढ़ा है । बृजसुन्दरजी यह काम करते हैं उस कागज में सतीशचन्द्र का नाम भी है....

श्री नाथूराम मिर्धा : आप नहीं हम सब थे ।

श्री भैरोंसिह : मन्त्रीजी इतने हलके हैं कि वे इतने हलकेपन से बात करते हैं; आप नहीं हम दोनों थे । मैं यह निवेदन करूंगा कि मंत्रीजी जो बात कहते हैं वह अबकी बार फिर रिपीट करें तो उचित होगा ।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : अब मन्त्रीजी बोलते क्यों नहीं है ? आपको सांप क्यों सूंघ गया है ?

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन के सामने जो कुछ भी कह रहा हूँ वह बहुत ही गम्भीरता से कह रहा.हूँ और सदन को कागजों के आधार पर कहता हूं । अगर आप उस कागज में मेरा नाम बता दें तो मैं सदन से इस्तीफा देने को तैयार हूं अन्यथा आप....

श्री नाथूराम मिर्धा : क्या ऑथोरिटी है ? आप लिख कर ले आवें तो मैं क्या करूं ।

श्री बृजसुंदर शर्मा : ये तो मुलजिम के बयान हैं ४२० के केस में ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : माननीय नाथूरामजी साहब अगर इस केस में मेरे खिलाफ बृजसुन्दरजी के बयानों में, मुलजिम और मुस्तगीस और कोर्ट की फाइल में कहीं

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल)

भी मेरा नाम हो तो मैं आज इस्तीफा ही सदन से नहीं दूंगा बल्कि पोलिटिक्स छोड़ दूंगा और अगर मेरा नाम नहीं मिला तो इस प्रकार की झूंठी बात सदन से कहने का क्या दण्ड भुगतोगे ? मैं मुख्य मन्त्री से कहना चाहता हूँ कि जो यहां पर बात कही जावे गम्भीरता से कही जावे और मैं यह समझता हूं कि आपको इसीलिए सुखाड़ियाजी ने पहचाना और आपको भेड़ और बकरी का विभाग दिया और देखा कि ये भेड़ों के काबिल हैं। ये अपोइन्टमेंट डिपार्टमेंट के काबिल नहीं, गृह के काबिल नहीं और इसी लिए आपको भेड़ों और सिंचाई के मन्त्री रखा। और होम और अपोइन्टमेंट नहीं दिया, जी० ए० डी० नहीं दिया। सुखाड़िया साहब ने आपको अच्छी तरह पहिचाना....

श्री नाथूराम मिर्धा : मुझे इसमें कोई नाराजगी नहीं है। जो काम मिला वह ठीक है, आप इस प्रकार लड़ाने की कोशिश नहीं करें। इससे कोई मतलब नहीं है।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : आपको योग्यता के आधार पर ही काम मिलता है श्री नाथूरामजी साहब।

श्री उपाध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज़। आपको काफी समय हो गया है। मैं माननीय सदस्य से निवेदन करूंगा कि आप जल्दी समाप्त करें।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : उपाध्यक्ष महोदय, मैं १० मिनट ही बोला हूँ। उधर से १० मिनट तो श्री नाथूरामजी ने इन्ट्रप्ट किया है।

श्री नाथूरामजी की सुखाड़ियाजी ने क्या गत बनाई है। हर एक के अलग अलग कमरे हैं ....

श्री नाथूराम मिर्धा : यह सदन में कहने की बातें हैं क्या ? आप पुराने इस सदन के माने हुए सदस्य हैं। यह सरकार के प्रति अविश्वास का प्रस्ताव है, आप क्या हल्की बातें कर रहे हैं।....

(शोरगुल)

श्री उपाध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज़।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : बृजसुन्दरजी के सम्बन्ध में कह रहा था। उसने कहा कि जुलाई, ५८ के बाद में यह काम बन्द कर दिया। इन लोगों ने मुझे फॉर्मुला देने के लिए कहा और मैंने देने से इन्कार कर दिया तो मेरे पर झूंठे मुकदमे बनाए; उसने आगे अपने बयानों में कहा है कि बाकी बयान मैं लिखित में पेश करूंगा।

आपको इस ४२० के मुकदमे में, सोना बनाने वाले काम में, थाने में बुलाया गया, बयान लिये गए बृजसुन्दरजी और फिर आपको प्रोमोट किया गया, मन्त्री मण्डल में लिया गया। पांनरवा काण्ड किसी से छुपा नहीं है, पांनरवा में नाथूराम मिर्धा ने, अमृतलाल यादव ने और बृजसुन्दर शर्मा ने क्या क्या किया और इन तीनों पर ऑल इन्डिया कांग्रेस कमेटी में मामला चला....

श्री नाथूराम मिर्धा : वे सब फाइल हो गए।

श्री भैरोंसिंह : यह तो आपके राज़ में होगा ही।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : यह तो गवर्नमेंट बदलेगी तब बतलायेंगे कि किस किस के अगेन्स्ट में क्या क्या मामले चलते हैं, पिछले १५ वर्षों में इस गवर्नमेंट के सभी काले कारनामों के ऊपर, एक एक काले कारनामे पर जांच कराई जायगी....

श्री नाथूराम मिर्धा : अभी कौनसा वह रास्ता बन्द है, आप बैठाओ कमीशन कौन मना करता है ?

श्री भैरोंसिंह : अभी तो भूतलिंगम पकड़े जा रहे हैं, यहां तो राक्षसलिंगम बैठे हैं ।

श्री उपाध्यक्ष : आप जल्दी समाप्त करें ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : हमने मांग की कि जनता को सस्ती चीजें मिलें, मंहगाई को रोका जाय । मंहगाई रोकने के लिए सरकार ने फैसला किया है, पर यह सरकार मंहगाई रोकना नहीं चाहती, यह सब इस सरकार का बड़े बड़े व्यापारियों से पैसा ऐठने का तरीका है, छोटे-छोटे लोगों को मारा जायगा । यह सरकार और नाथूरामजी सुनलें कि इन मुनाफाखोरों से सांठ-गांठ किसकी है ? जयपुर में एक छापा मारा गया, रेड की गई, रेड करने के बाद मिलावट करने वालों, मुनाफाखोरों के फोटो खिचवाए गए, फोटों खींचने के बाद पब्लिक रिलेशन डिपार्टमेंट से अखबारों को फोटोज दी गई । अखबारों में फोटोज छपवानी चाहिये कि कौन मुनाफाखोरी करता है, कौन मिलावट करता है, पर भगवान जानें क्यों इन्होंने फोटुएं वापिस मंगवाली । जयपुर शहर में तो बांटी नहीं गई, पोस्ट ऑफिस में दिल्ली के लिए डाल दिया, फिर ८ तारीख को हो गई छुट्टी तो पोस्ट मास्टर को चिट्ठी लिखी कि मिलावट करने वालों के, मुनाफाखोरी करने वालों के फोटोग्राफ दिल्ली के अखबारों में छपवाने के लिये डाक में डाले थे ये अखबार वालों को डिलीवर नहीं किये जायं, वे वापिस हमें लौटा दिये जायं । क्यों वापिस लिये ? दिल्ली जाते और अखबारों में छप जाते तो सरकार का क्या नुकसान होता ? पर न सरकार मुनाफाखोरों और मिलावट करने वालों के फोटोज छपवाना चाहती है, न उनके खिलाफ कोई कार्यवाही करना चाहती है, बल्कि मिलावट करने वालों, मुनाफाखोरों और रिश्वतखोरी करने वालों से यह सरकार मिली हुई है, सरकार की इन लोगों के साथ सांठ-गांठ है, क्या लेते हैं और क्या देते हैं, यह तो आम चर्चा का विषय है । आखिर आज क्या हालत है राजस्थान की ?....

श्री नाथूराम मिर्धा : उपाध्यक्ष महोदय, मैं सतीशजी से एक मिनिट चाहूँगा कि डिवेल्यूएशन और मंहगाई का आन्दोलन किया था, जनता पर प्रभाव डालने की कोशिश की थी उसमें आपके बारे में एक एक बहुत बड़े इन्डिपेन्डेन्ट जर्नलिस्ट के क्या व्यूज हैं, मैं थोड़ा प्रकाश डालना चाहता हूँ ....

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : मैं इस समय अविश्वास प्रस्ताव पर बोल रहा हूँ, इस संबंध में जो इस सरकार के काले कारनामें हैं उनके सम्बन्ध में जो कहना चाहिये वह कहूँगा । और नाथूरामजी, मैं भी ड्राइवर्स की चिट्ठियां लाऊंगा जो डाक से डाली हैं और हमारे

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल)

पास हैं। पर मैं उन चीजों में नहीं जाना चाहता, जितना कुछ चाहें कहें, सरकार मेरी नहीं है, मेरा हुक्म चलता नहीं, सरकार की पॉलिसी का सवाल है, इसके तौर तरीकों का है। उपाध्यक्ष महोदय, आज किस आधार पर यह कहना चाहते हैं ? यह अमृतलालजी यादव, अखबारों में छपा कि एक कातिल को बचाने में इनका हाथ है, कातिल को बचाने वाले मन्त्री ने क्या आज तक कोई प्रतिवाद किया ?

श्री अमृतलाल यादव (समाज कल्याण मन्त्री) : यह बिल्कुल झूठ और गलत है।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : मध्य प्रदेश की विधान सभा में यह सवाल उठा है।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : जाजूजी के यहां क्यों गये थे ?

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : १६ सितम्बर के समाचार पत्रों में मध्यप्रदेश विधान सभा का विवरण छपा कि राजस्थान के मन्त्री ने कातिल को छुड़ाया, कातिल को भगाया। क्या आपने इसका कोई प्रतिवाद किया ? क्या आपने मध्यप्रदेश की विधान सभा के अध्यक्ष को लिखा ? नहीं लिखा, चुपचाप बैठ कर मौन धारण कर लें तो मानना पड़ेगा कि उसमें आपका हाथ है, कातिल को आपने बचाया है। बचायें न बचायें, आप हरिजनों के मन्त्री हैं, समाज कल्याण विभाग के मन्त्री हैं, गरीब हरिजनों के आंसुओं को पोंछने का काम आपका है, पर मुझे बड़ा अफसोस है कि आपके बंगले के सामने कच्ची झौंपड़ी में रहने वाले हरिजन के बच्चे के आपके लड़के ने बन्दूक का निशाना लगा कर आंख फोड़ दी....

श्री अमृतलाल यादव : उपाध्यक्ष महोदय, यह मामला अदालत में चल रहा है, जो इन्होंने कहा है बिल्कुल झूठ और निराधार है।

(शोरगुल)

सब्जुडिस मामले पर आप नहीं कह सकते। मैं और मेरा लड़का यहां नहीं थे, प्राइममिनिस्टर की कॉन्फ्रेन्स में गया हुआ था....

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : आपके साहिबजादे लॉन पर खेल रहे थे....

श्री अमृतलाल यादव : यह बिल्कुल झूठ है, अदालत में मामला है........

श्री भैरोंसिंह : अगर झूठ है तो आपके लड़के का चालान क्यों हुआ ?

श्री अमृतलाल यादव : मेरे लड़के का चालान नहीं हुआ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : अगर चालान नहीं हुआ तो सब्जुडिस कैसे है, सब्जुडिस नहीं है तो मुझे कहने दिया जाय। चालान हो गया तो मैं नहीं कहूंगा। बताओ क्या आपके साहबजादे का चालान हुआ है ?

वह ७ साल का गरीब बच्चा सड़क पर खेल रहा था, उस समय उपाध्यक्ष महोदय,

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल)

इनके एक छोटे लड़के ने कहा बड़े लड़के से, गोली चलाना जानते हो ? उसने कहा जानता हूं, पूछा निशाना लगाओगे ? कहा लगाऊंगा; पूछा किस जगह लगाओगे, कहा उस लड़के के मुंह पर; कहा नहीं आंख पर, तो बोला आंख पर लगाऊंगा। फिर कहा नहीं आंख में भी काली पुतली पर तो उसने कहा अच्छा आंख की पुतली पर ही लगाता हूँ। उसने टोमी गन चलाई और उस गरीब हरिजन बच्चे की आंख की कालो पुतली फोड़ दी, वह गरीब हरिजन बच्चा लहू-लुहान हो गया, उसकी एक आंख की रोशनी इनके साहबजादे ने हमेशा हमेशा के लिये छीन ली। आपकी मोटर उस गरीब बच्चे को अस्पताल नहीं ले गई, चार दिन बाद हम लोगों को मालूम पड़ा तो हम लोग गये, उस गरीब बच्चे की मां रात–दिन रोती रही.... ...

(११.३८)

(श्री रामनिवास मिर्धा, अध्यक्ष, पुनः पदासीन)

श्री अमृतलाल यादव : मैं यहां नहीं था, मेरा बच्चा यहां नहीं था, यह सब मनगढंत और झूठ बात है।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : मैं और भैंरोंसिंहजी हॉस्पिटल गये, हमने देखा कि पुलिस ने केस क्यों नहीं रजिस्टर किया, हमने डॉक्टर की पर्ची थी उसको जब्त करवाया, बन्दूक को बरामद करवाया, इनके साहबजादे को पुलिस ने गिरफ्तार किया और जमानत पर छोड़ा, चालान नहीं हुआ तो आपका लड़का है इसलिये चालान नहीं हुआ। पर यह बात सही है कि आपके लड़के ने उस गरीब हरिजन बच्चे की आंख फोड़ी। गरीबों के आंसुओं को पोंछने का दम भरने की हिमाकत करने वाले कांग्रेसियों उस गरीब के आंसू नहीं पोंछते, उसकी आंख फोड़ते हो। फिर कहते हो कि हमारी तो कल्याणकारी सरकार है ....

(श्री बृजसुन्दरजी, द्वारा बैठे बैठे ही कुछ बोलने पर)

क्यों बृजसुन्दरजी, और दूसरा चैप्टर खोलूं क्या आपका ? बूंदी में लड़कों को नकल करवा कर, सैकड़ों लड़कों की जिंदगी बरबाद करनेवाले हैडमास्टर का प्रोटेक्शन करने वाले, बोलते हो यहां ? यहां तीन-चार बोरी कागज नकल के मिले लड़कों की जिंदगी बर्बाद कर दी, और लड़कों की जिंदगी बरबाद करने वाला हैड मास्टर तुम्हारी नाक का बाल, सैकन्डरी एज्यूकेशन बोर्ड में गया या नहीं, बोलो ? अब बैठे हो गणपत से। अपनी औरत के नाम से पैट्रोल पम्प की जमीन दबाने वाले बोलते हो ? क्या तौर तरीके बना रखे हैं आपने ? सुखाड़ियाजी आपने एक फौज इकट्ठी कर रखी है। आपतो ऐसे लोग रखना चाहते हैं जो हुक्म है शाह कलन्दर का, जो बैठा दुम हिलाया करता है। जिन मंत्रियों में कोई योग्यता नहीं है, जो हर तरह से पतित हैं, जो हर जगह चर्चा का विषय बने हुए हैं, आज एक एक मंत्री के बारे में कितनी चर्चा चलती है। आज मुख्य मंत्रीजी से कहूंगा कि राजस्थान में क्या किया गया है ? इस विधान सभा में कई मामले उठाये गये।

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल)

आप क्या बयान देते हैं? 'राजस्थान पत्रिका' के बारे में बयान दिया वह झूठा साबित हुआ। फिर आप क्या बयान देते हैं, उसका कोई भरोसा नहीं किया जा सकता। अखबारों में कुछ छपता है, रेकार्ड में कुछ लिखा हुआ है। आखिर यह कौनसा तरीका है? मुख्य मंत्रीजी आपने भ्रष्ट मंत्रियों की फौज इकट्ठी कर रखी है, जैसे ४० चोर और अलीबाबा, आपकी कहानियां राजस्थान में गाई जायेंगी। अब तो राजस्थान को बख्शो, गरीब जनता आपसे छुटाकारा चाहती है। पिछली बार सितम्बर में जो भारत-पाकिस्तान युद्ध हुआ उसमें हर जगह भारत माता के माथे पर विजय का टीका लगा। उसमें कहीं काला टीका लगा तो वह राजस्थान-पाकिस्तान बोर्डर पर। आप सीमाको सुरक्षित रखने में असफल रहे। राजस्थान की गरीब जनता पर ३५० करोड़ रुपयों का कर्जा लादा। राजस्थान के कर्मचारियों की दुदर्शा क्या है? कर्मचारी इस सरकार से असंतुष्ट हैं, कब तक इनका इस तरह पतन होता रहेगा।

मैं अन्त में केवल एक बात कहूंगा। आप आंकडों की बात करते हो। राजस्थान की आर्थिक स्थिति और विकास के बारे में सदन को केवल एक बात बताना चाहता हूं इस समय, बाकी बातें छोड़ देता हूं। राजस्थान की प्रति व्यक्ति आय, रूरल इन्डेटेडनैस राजस्थान के गरीब लोगों को रोजाना की आमदनी जो सात आने और १० आने कही जाती है वह बिल्कुल झूठ है। राजस्थान सरकार ने सर्वे कराया, सारे जिलों का सर्वे कराया और जो सर्वे सरकार के अनुकूल पड़ता था उसको तो बाहर निकाला और जिस सर्वे में यह रिपोर्ट आई है, जिसमें कहा गया है कि राजस्थान के गरीब से गरीब आदमी की रोजाना की आमदनी ४ पैसा है, डाक्टर बाग्ची की जो कमेटी बनी उन्होंने जो सर्वे किया है, मैटीरियल इकट्ठा किया है उस रिपोर्ट को राजस्थान सरकार नहीं छापेगी। गरीब से गरीब आदमी की आमदनी रोजाना ४ पैसा है। यह रिपोर्ट आपके आर्थिक विकास और योजनाओं पर पानी फेरने वाली है। आज सरकार पर से जनता का विश्वास उठ गया। इस सरकार को बदल देने की जरूरत है, यह सरकार बदली जायगी। अमरीका में रूज़वेल्ट दो बार राष्ट्रपति चुने गए, जब तीसरी बात चुने गये तो अमेरीकन्स ने कहा कि यह पोपुलर डेमोक्रसी है इस तरह से तो डेमोक्रसी खत्म हो जायगी। संविधान में संशोधन किया कि दो बार से ज्यादा कोई भी राष्ट्रपति नहीं बनेगा। हम लोकतंत्र में विश्वास करते हैं। लोकतन्त्र का तकाजा है, अगर प्रजातन्त्र को जीवित रखना है तो सरकारें बदलनी होंगी, सरकारों को पलटना होगा। हम सरकार को पलटेंगे। कांग्रेस के बड़े बड़े नेताओं के शब्दों में कांग्रेस खस्ता हो चुकी हैं, क्या मंत्री कहते हैं, कांग्रेस ऑपरेशन टेबल पर लेटी हुई है। अपने हाथ से कितना भी प्यार क्यों न हो, पैर से प्यार कितना भी हो, मुंह से कितना भी प्यार हो, लेकिन अगर इनमें से कोई सड़ जायगा तो उसका ऑपरेशन किया जायगा, उसको चाकू से काटा जायगा। आज कांग्रेस का एक बहुत बड़ा ऑपरेशन करने की जरूरत है।

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल)

कांग्रेस सब समस्याओं की जननी हो गई है। एक ही समाधान है कि जो जननी है उसका स्टे्लाइजेशन किया जाय, उसका वैधकरण किया जाय, नहीं तो भविष्य अन्धकार में होगा। राजस्थान की जनता चलने वाली हवाओं को पहचान गई है, हम उसमें कोई परिवर्तन नहीं करते इसलिए जनता मजबूर होकर उनको पलटेगी। आम चुनाव १९६७ में होने वाले हैं, मैं भविष्यवाणी नहीं करता लेकिन जो विरोधी दलों ने एकता प्रदर्शित की है और कल जिस समय स्वतन्त्र पार्टी और जनसंघ ने समझौते के समाचार आए तो खास तौर से सत्तारूढ़ दल, मैं असंतुष्ट गुट की तो नहीं कहता, उन लोगों की ऐसी हवाइयां उड़ रही थीं जैसे कोई मौत का पैगाम आ गया हो। यही मौत का पैगाम है जिससे कोई कभी उदयपुर छोड़कर जा रहा है, कोई नाथद्वारा खिसक रहा है....

श्री विजयसिंह झाला (नाथद्वारा): नाथद्वारा आने पर सुखाड़ियाजी जीत नहीं सकते। वह नाथद्वारा में आसानी से हारेंगे। सुखाड़िया साहब, आप नाथद्वारा आने का इरादा नहीं बदलें, असली मजा चुनाव लड़ने का नाथद्वारा में ही आयेगा।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल: सुखाड़ियाजी उन आदमियों में से हैं जो सुबह कुछ कहते हैं और शाम को कुछ कहते हैं, राजस्थान में सटोरियों की भी कोई जबान होती है लेकिन राजस्थान के मुख्य मन्त्रीजी की कोई जबान नहीं। कब क्या कहते हैं? उदयपुर से नाथद्वारा जायेंगे, नाथद्वारा से उदयपुर जायेंगे, उदयपुर से मावली जायेंगे वहां से भीलवाड़ा आएंगे, लोकसभा में जायेंगे, वहां से परलोक सभा में जायेंगे, जो कुछ भी हो, मुझे क्या ताल्लुक है।

श्री विजयसिंह झाला: मैं सुखाड़ियाजी को आमन्त्रित करता हूँ आप नाथद्वारा से चुनाव लड़ें, मैं आपको हराकर ही छोड़ूंगा। अपना चुनाव क्षेत्र नाथद्वारा नहीं बदलें और वहां चुनाव लड़कर देखलें आपको मजा आएगा।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह: क्या इनका ठिकाना है?

श्री विजयसिंह झाला: आप कहिए तो सही कि नाथद्वारा नहीं छोड़ेंगे।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल: समय हो गया और इसलिए आसन के आदेश का पालन करते हुए अन्त में मैं नाथूरामजी से कहूँगा कि जो गेहूँ का नमूना मैंने उनको दिया है उसको वह खालें। सदन के बाहर खाने की जरूरत नहीं है, उसके बाद यह गोल्ड स्पॉट पी लें तो मैं स्थान ग्रहण कर दूं।

(गोल्ड स्पॉट की बोतल देते हैं)।

जैसे तुम्हारे राज्य में मक्खियां मरी हुई हैं इस गोल्ड स्पॉट में भी मक्खियां मरी हुई है, यह आप जनता को पिलना चाहते हो, पहले नाथूरामजी तो पी लें।

श्री अध्यक्ष: सरकार की ओर से इसका उत्तर होगा। मुख्य मन्त्री पहले बोल लें।

श्री हरिश्चन्द्र (उद्योग मन्त्री): मुझे कुछ स्पष्टीकरण करना है....

श्री अध्यक्ष : (श्री दामोदरलाल व्यास के खड़े होने पर) यह तो आपस में तय कर लें कि पहले कौन मन्त्री बोलेंगे। मुख्य मन्त्री शुरू करें तो अच्छा है।

श्री हरिश्चन्द्र : एक मामला यहां उठाया गया है....

श्री अध्यक्ष : पिछले ४ दिनों में कई मामले उठाए गए, सबका निराकरण नहीं होगा।

श्री भैरोंसिंह : कम से कम डीडवाना का तो जवाब दिया जाय।

श्री अध्यक्ष : वह ध्यान आकर्षण के समय....

श्री भैरोंसिंह : वह कैसे आएगा ?

श्री अध्यक्ष : उसके लिए कई प्रस्ताव आए हैं।

श्री हरिश्चन्द्र : माननीय सदस्य जो कोलायत से आए हैं उन्होंने कुछ मामला उठाया, उन्होंने कहा था कि....

(१२ मध्यान्ह)

श्री अध्यक्ष : अब समय नहीं है। मैं आप से निवेदन करना चाहता हूं कि कई सॉल्ट पीटर के मामले आये हैं और अब समय नहीं है इसलिये उनको नहीं लिया जा सकता। और भी कई माननीय सदस्य क्लेरिफिकेशन करना चाहेंगे। यह सम्भव नहीं है।

श्री हरिश्चन्द्र : आप जैसा फरमावेंगे वैसा ही चलेगा। यदि मामला साफ होता चला जाय तो माननीय सदस्यों के दिमाग में गलतफहमी न रहे।

श्री अध्यक्ष : मैं यह निवेदन करूंगा कि अब बहस समाप्त की जाय और मुख्य मंत्री जी अपना भाषण शुरू करें।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, इस सदन में आज इस अविश्वास के प्रस्ताव पर बहस होते हुए चौथा दिन है। इस बहस के दौरान आम तौर से विरोधी पक्ष के माननीय सदस्यों की तरफ से यह कहा गया कि कांग्रेस का राज्य आने के बाद देश की बरबादी हुई है, राजस्थान की बरबादी हुई है और आज भुखमरी हो रही है, बेरोजगारी हो रही है, चारों तरफ परेशानी है और राजस्थान को कर्जे से दबा दिया गया है, टैक्सों की वजह से राजस्थान दब गया है; कई प्रकार की बातें यहां पर कही गयीं।

माननीय अध्यक्षजी, यह आम चुनावों के पहले होने वाला आखरी विधान सभा का सत्र है। इस अधिवेशन में स्वाभाविक बात है कि बहुत सी बातें आने वाले चुनावों को लक्ष्य में रख कर. अलग अलग पक्षों की तरफ से कही जाती हैं। मैं माननीय सदस्यों से बहुत नम्रता पूर्वक निवेदन करना चाहूंगा कि क्या यह सत्य नहीं है कि जब राजस्थान बना और उस राजस्थान के बनने के बाद राजस्थान के अन्दर जो प्रगति हुई, राजस्थान के अन्दर जो सामाजिक क्रान्ति हुई उस क्रान्ति से राजस्थान का कायाकल्प नहीं हुआ ? आज भारतवर्ष में राजस्थान ही एक ऐसा प्रदेश है कि जिस प्रदेश का निर्माण, सिवाय एक अजमेर के हिस्से को छोड़ कर,

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

अलग अलग जो रियासतें थीं उनके एकीकरण से हुआ । इस प्रकार का राजस्थान कि जिसमें अलग अलग रजवाड़े मिले हों, सैंकड़ों वर्षों की अलग अलग रियासतों की अपनी भावनायें हों, हमारा पिछड़ापन हो उस राजस्थान का एकीकरण करना, उस राजस्थान को उस पुरानी सामन्तवादी शासन प्रणाली से निकाल कर मौजूदा वेलफेयर स्टेट के लिये उसके एडमिनिस्ट्रेशन के ढांचे का निर्माण करना और उसके अनुसार उसको आगे चलाना एक कितना जटिल कार्य था, उस जटिल कार्य पर आत्म विश्लेषण किया जाय तो, मैं समझता हूं, इस बात का अन्दाजा हो सकता है कि पिछले १५ वर्ष में राजस्थान को किन मुश्किल हालतों में आगे बढ़ाने का कार्य करना पड़ा है ।

श्री भैरोंसिह : यह अविश्वास का प्रस्ताव वर्तमान सरकार के खिलाफ है । १५ वर्षों के इतिहास की आवश्यकता नहीं है ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : जहां पर सब बातें कही गयी हैं । मैं चाहूंगा कि मैं जो बातें कहूं उनको सुनने की भी आप क्षमता रखेंगे ।

श्री मुकुटबिहारीलाल गोयल (बयाना) : जो भाषण मुख्य मंत्री जी के हुए हैं उनको अखबारों में पढ़ा है और टेप रिकॉर्डिंग भी हैं ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : पढ़ लें तब भी दोहराना पड़ता है ।

श्री रामकिशन : मुख्य मंत्रीजी से हम निवेदन करेंगे कि जो नये मुद्दे बहस के दौरान उठाये गये हैं उन्हीं को बतायें । यह इतिहास तो खूब जानते हैं ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मुद्दों के साथ जो सरकार ने कार्य किये हैं और जो स्थिति है उन स्थितियों को तो रखना पड़ेगा । यदि माननीय सदस्य यह मानते हों कि कांग्रेस ने पहले काफी काम किये हैं और अब थोड़े अर्से के लिये प्रश्न उठाया गया, तो बात दूसरी है ।

श्री भैरोंसिह : वर्तमान सरकार के खिलाफ जो अविश्वास प्रस्ताव है और जो मुद्दे उठाये गये हैं आप उन पर ही आइये ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : आपने कांग्रेस के शासन पर सारी बातों को कहा है और सौभाग्य से माननीय अध्यक्षजी, मुझे इस सदन में सन् १९५२ से लगा कर अब तक किसी न किसी रूप में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ है और मैं यह कह सकता हूं कि राजस्थान के अन्दर इन पिछले १५ वर्ष में....

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : बरबादी हुई है....

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : हर क्षेत्र में कायाकल्प हुआ है ।

श्री भैरोंसिह : करप्शन का भी कायाकल्प हुआ है ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : राजस्थान में कायाकल्प ही नहीं हुआ है विकास कार्यों

Page No.63

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

के क्रम को आगे बढ़ाने का क्रम जारी रहा है। इस राजस्थान की पुरानी ऐतिहासिक परम्परायें हैं उनको बदल कर नये इतिहास के निर्माण का काम किया गया, नये समाज को स्थापित करने का काम किया गया। जिस राजस्थान में किसान जमीन का मालिक नहीं था, जमीन पर पूरे अधिकार नहीं थे, आज राजस्थान में गांव गांव में एक जगह से दूसरी जगह जाकर पता लगायें तो लोगों को मालूम होगा कि राजस्थान में १५ वर्ष में जो कुछ कार्य हुए हैं और पिछले पांच वर्ष में जो कार्य किये गये हैं उनके द्वारा आम तौर पर क्या असर पड़ा है....

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : लाखों लोग जमीन के लिये बिलबिला रहे हैं।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : माननीय अध्यक्षजी, मैं निवेदन करूंगा कि जब माननीय सदस्य बोलते हैं तो मैं किसी के बोलने में रुकावट नहीं करता हूं और बैठकर उनको सुनता हूं तो मैं भी यह उम्मीद करके चलता हूं कि सामने वाले भी उतना ही धीरज रखेंगे जिससे वे सब मेरी बातों को शान्तिपूर्वक सुन सकें।

तो मैं निवेदन करना चाहता हूं कि क्या आज इस तथ्य से इन्कार किया जा सकता है कि राजस्थान में कायाकल्प या परिवर्तन नहीं हुए हैं ? माननीय अध्यक्षजी, अभी कहा गया कि पिछले १५ वर्ष की बात मैं न कहूं। यहां पर अलवर से आने वाले माननीय सदस्य ने हमारे राजस्थान के भूमि सुधारों के बारे में श्री अमीररजा, जो भूमि सुधारों के बारे में आये थे, के पेरेग्राफ को पढ़ कर इस अविश्वास के प्रस्ताव पर बहस के दौरान जिक्र किया था। उसके उत्तर में मैं भी कुछ कहूं तो अनुपयुक्त नहीं होगा। जब स्वयम् उसके उद्धरण लाकर अविश्वास के प्रस्ताव के मौके पर बहस कर सकते हैं तो मैं भी जो राय है इन अमीररजा की और दूसरों की उनकी राय के बारे में जिक्र करूं तो मेरा भी अधिकार है और वह बात उचित भी होगी और आवश्यक भी होगी इस सदन के लिये। इसलिये मैं निवेदन करना चाहता हूं कि श्री अमीररजा ने जो देखा और देखने के बाद रिपोर्ट की उनकी रिपोर्ट के स्टेन्जाज् को पढ़ कर सुनना चाहता हूं। उन्होंने यह कहा है :

"In the very first para of the summary Shri Amir Raja after pointing out the immense difficulties with which the Rajasthan Government was faced has written that 'inspite of the immense difficulties land reform has been carried out with considerable success. Legislation on the subject is sound in conception and carefully considered in detail."

In para 2 at page 6.

दूसरा उसके बाद

"Shri Amir Raja has described Rajasthan Tenancy Act, 1955 as a comprehensive measure provided for fair rents, security of tenure for the tenants subject to limited right of resumption for the land owner leading eventual confirment of ownership upon the tenants and celling on land holding."

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

फिर वे लिखते हैं पैरा २२ के अन्दर

"The abolition of intermediaries, the protection of tenants and building up of a unform land system and revenue administration were thus tasks of great magnitude"

फिर इसके बाद में वे लिखते है इसके सम्बन्ध में राजस्थान का रेंट रेगुलेशन एक्ट निकला है, उसके विषय में :

These prompt measures for the protection of teanuts created situation very favourably for land reforms.'

यह जो अमीररजा साहब का रिपोर्ट का जिक्र किया उसके पेरेग्राफ का मैंने जिक्र किया ।

श्री उमरावसिंह ढाबरिमा : ये सब कागजी हैं ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैंने आप से निवेदन किया........

श्री रामानन्द अग्रवाल : इसका समिग-अप पेरेग्राफ ही तो मैंने पढ़ा था ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : इसके पैराग्राफों के एक्सट्रेक्ट मैंने रक्खे ।

श्री भेरोंसिह : डॉक्टर धूलसिह ने जो रिपोर्ट दी है कि राजस्थान सरकार ने लैंड रिफॉर्म्स में क्या किया है, इसको भी बता दीजिये ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : इसकी रिपोर्ट में से भी कुछ सेन्टेन्स माननीय अध्यक्षजी मैं पढ़कर सुनाना चाहूँगा ।

श्री भेरोंसिह : उन्होंने तो आपके खिलाफ लिखा है ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : इम्पलीमेन्टेशन की दिक्कतें आई । उन सामने आने वाली दिक्कतों को दूर करने के लिये भी प्रयत्नशील हैं ।

श्री भैरोंसिह : वही तो है, वह प्रयत्न कहां कर रहे हैं ?

श्री उमरावसिह ढाबरिया : प्रयत्न करते तो फिर बात क्या थी ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : माननीय अध्यक्षजी, आपसे में यह प्रोटेक्शन चाहूंगा कि जब मैं अपनी बात कह रहा हूं तो जैसे में दूसरों को डिस्टर्ब नहीं करता, उसी तरह माननीय सदस्यगण भी मेरी बात सुनने की तैयारी रक्खें ।

श्री उमरावसिह ढाबरिया : आप कराते हैं डिस्टर्ब तो । उत्तर नहीं देते, टालमटोल करते हैं ।

(शोरगुल-अश्रव्य)

श्री रामानन्द अग्रवाल : डिस्टर्ब करने की बात नहीं है, इन्टरवीन नहीं करें तो सारे तथ्य सदन में नहीं आ सकते ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय सन् ५२ से लेकर ६६ तक सुखाड़िया साहब

Page No.65

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल)

ने आज तक कभी चेयर से प्रोटेक्शन नहीं लिया । पर आज वे खुद यह महसूस कर रहे हैं कि उनके पैर और आवाज लड़खड़ा रही है । उनके पैर लड़खड़ा रहे हैं अब, उनको डाइरिया हो रहा है ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : पैर लड़खड़ाने के लिये तो ५२ में भी चैलेन्ज आया, ५७ में भी चुनौती आई और ६२ में भी आई और तीनों में इन सारी चुनौतियों का मुकाबला करके निकले हैं तो ६७ की चुनौती में से भी वैसे ही निकलेंगे । अब पैर हमारे लड़खड़ाते हैं या आपके, यह तो वक्त पर मालूम होगा । पांच महीने बाद मालूम पड़ेगा कि पैर लड़खड़ाते किसके हैं और गिर कौन गया और वापिस इस सदन में आकर कौन बैठता है ।

श्री सतीशचंद्र अग्रवाल : विधान सभा का चुनाव आप अब कहां से लड़ रहे हैं यह भी बताने में मुश्किल पड़ रही हैं । बता दें तो पता लगे ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : पैर लड़खड़ाने वालों को ही गुस्सा ज्यादा आता है, वे ही गाली बोलते हैं, हम तो कोई गाली देता है तो चुपचाप सुनते हैं ।

(शोरगुल–अश्रव्य)

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : सुखाड़िया साहब, हिम्मत हो तो कॉन्स्टीट्युएन्सी डिक्लेयर करो । कहां से लड़ रहे हो ?

(शोरगुल–अश्रव्य)

····पैर लड़खड़ाने की बात मालूम पड़ रही है । भाग गये उदयपुर छोड़ कर नाथद्वारा ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : वहां तो मैं इसलिये जा रहा हूँ कि तीन चुनावों में आप लोग दो बार जीते हैं । पर इस बार नाथद्वारा से अब नहीं जीतने दूंगा ।

तो इसकी चिन्ता मत करिये कि मैं वहां इसलिये जा रहा हूँ कि उदयपुर में स्थान नहीं है । बल्कि इसलिये जा रहा हूं कि नाथद्वारा में आप बहुत जीतते हुए आ रहे हैं, पर अब नहीं जीतने पावेंगे ।

श्री भैरोंसिंह : सुखाड़ियाजी यह भी आप सुन लीजिये कि उदयपुर से इस बार आप जीत भी नहीं सकेंगे ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैं वहां जिस किसी को भी खड़ा करूंगा वह जीत कर आवेगा उदयपुर से भी । मैं बताऊंगा । चिन्ता मत करिये ।

(शोरगुल-अश्रव्य)

तो माननीय अध्यक्षजी, धूलसिंहजी की रिपोर्ट के बारे में जिक्र किया गया । उस रिपोर्ट में उन्होंने यह लिखा है:

"The entire agrarian progress of the State, the entire process of change and adjustment can be described as a kind of socioeconomic revolution."

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

फिर आगे लिखते हैं :

"The Rajasthan Tenancy Act, 1955 was brought into force on 15th October, 55. This Act not only consolidates and amends the law relating to Tenancy of agricultural laws but it also provides for certain measures for land reforms. In principle it can safely be regarded as one of the most progressive laws in the country.'

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : अगर आप में सच्चाई है लैण्ड रिफॉर्म्स के बारे में तो इम्पेक्ट कमेटी की रिपोर्ट सदन की मेज पर रखकर उस पर डिसक्शन कराइये तो आपको अपना चेहरा साफ मालूम हो जावेगा।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : आपके सामने मौजूद है, मैं तो एक्सपर्ट की राय रख रहा हूँ।

श्री अध्यक्ष : सबको मौका मिला है बोलने का और आप सब बोले हैं। तो अब उनका जवाब मिलता है, तो धीरज रखें। इनको भी धीरज से सुनें।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : अब रामानन्दजी ने यह कहा कि चूंकि सरकार चुप रह गई है उनके आरोप सुनकर भी तो सारी बातें सरकार स्वीकार करती है, ऐसा लगता है तो यह तथ्य नहीं है। वे चुप रहते हैं और आपकी बातें सुनते हैं तो इसका यह अर्थ नहीं है कि सरकार उनको स्वीकार करती है। यह तो संसदीय शिष्टाचार है इसलिये सबको शान्त होकर सुनना है। अब उसमें किसी विशेष बात के बारे में चाहा जावेगा तो स्पष्टीकरण हो सकता है।

श्री रामानन्द अग्रवाल : माननीय मुख्य मन्त्रीजी ने लैंड रिफॉर्म्स के बारे में चौधरी धूलसिंह की रिपोर्ट के उदाहरण दिये, पर उन्होंने लॉ कमीशन बिठाया उसने तमाम इम्पेक्ट कमेटी की रिपोर्ट दी उसमें डाक्टर धूलसिंह ने जो कहा उसका पैरा सदन में रखिये।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यों ने कुछ पैराग्राफ पढ़े उस वक्त तो उन्होंने कुछ ऐतराज नहीं किये। अब मुख्य मन्त्री जी जो पढ़ें तो उनको सुन लीजिये।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : डा० धूलसिहजी की रिपोर्ट के कन्क्लूडिंग रिमार्क भी पढ़कर सुना दूं :—

"The former intermediaries, Jagirdars, Zamindars and Biswedars have also benifited from land reforms. The rural community as a whole has made substantive gains because of removal of impediments in agrarian progress and rural economy has ushered in an era of increasing agricultural production, as a result of security of tenure, fixity of rental improvement in farming practices and substantive investments in agricultural land and equipment. The whole process of abolition of intermediataries and implementa-

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

tion of tenancy laws is nothing sort of a social revolution"

माननीय अध्यक्षजी, यह निवेदन किया गया कि लैंड रेवेन्यू कमिश्नर हमने कायम किये। हमने क्या कहा और क्या किया मैं उसका भी जिक्र कर दूं कि उन्होंने उसमें लिखा है, जो उनकी फर्स्ट रिपोर्ट है, उसमें कि:––

"Unification of laws of the Covenanting States was itself a great achievement. This is not its only merit. It revolutionised the concept about rights and liabilities of tenants. It stands to the ever lasting credit of the State that by one stroke it had the courage to grant Khatedari rights to tenant and this has effected in stablising and consolidating the tenure of the majority of the tenants in Rajasthan. This step breathed a spirit of progress which placed Rajasthan in the fore-front in the matter of tenancy legislation."

मैं माननीय अध्यक्षजी, ज्यादा नहीं कहूंगा इस सम्बन्ध में क्योंकि हमारे विरोधी पक्ष के सदस्यों को यह अच्छा नहीं लगता है कि इसके अन्दर इतनी स्पष्ट बातें क्यों कहीं।

(शोरगुल–अश्रव्य)

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : हाल ही में प्लानिंग कमीशन के लैंड रिफॉर्म्स सैक्शन से सरकार के पास, चीफ मिनिस्टर साहब के पास कोई चिट्ठी आई है या नहीं कि लैंड रिफॉर्म्स कुछ हुए, पर उनका भी इम्प्लीमेन्टेशन नहीं हुआ। इसकी तरफ उस पत्र में ध्यान दिलाया गया है। अभी रीसेन्टली ऐसा पत्र आपके पास आया कि नहीं, बता दें। अभी इस सब पर प्लानिंग कमीशन में डिसक्शन हुआ और उन्होंने इस पर रिग्रेट भी शो किया कि जो कुछ भी रिफॉर्म्स डिक्लेअर भी हुए, पर उन पर भी कार्यवाही नहीं की गई, वे भी इम्प्लीमेंट नहीं हुए। राजस्थान में उनका इम्प्लीमेन्टेशन नहीं किया जा रहा है। इस तरह की चिट्ठी उन्होंने लिखी है। बताइये लिखी या नहीं?

श्री मुरलीधर व्यास (बीकानेर) : माननीय अध्यक्षजी, सीलिंग की बात की, पर वह लागू नहीं हुआ आज दिन तक। जो बुनियादी काम था, वही नहीं हुआ और तालियां पिटवा रहे हैं। मुझे तो इस पर शर्म आती है। जमीनें आपने बांटी नहीं और आप इस तरह के स्टेटमेंट दे रहे हैं, मुझे इस पर शर्म आ रही है।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : माननीय अध्यक्षजी, मैंने जो आपके सामने जिक्र किया उस जिक्र करने के साथ साथ आम तौर से इस सरकार की यह नीति रही है कि जो लेजिस्लेशन या रिफॉर्म्स हमने राजस्थान के अन्दर किया उसके सम्बन्ध में समय समय पर एक्सपर्ट लोगों के जरिये विवेचन कराते हैं, उनका विश्लेषण कराते रहे और इस विश्लेषण से जो दिक्कतें सामने आती प्रतीत हों उनको दूर करने के लिये और आगे कदम उठाते रहे। हमने लैंड रेवेन्यू कमीशन मन्जूर किया। उन्होंने

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

विचार करके रिपोर्ट दी । टीनेन्सी बिल सदन में पास हुआ । रेवेन्यू बिल तैयार हो रहा है और आगे आने वाले माननीय सदस्य होंगे उनको यह सौभाग्य प्राप्त होगा कि चुनावों के बाद जो इन पिछले दस वर्षों के अन्दर, ग्यारह–बारह वर्षों के अन्दर हमने टीनेन्सी के कानून पास किये उनके बाद उनमें आई कठिनाइयों को ध्यान में रखकर उनको दूर करने के इरादे से क्या परिवर्तन उनमें किये जाने चाहिये, क्या परिवर्धन किये जाने चाहिये इन दोनों बातों को सामने रखकर जो लैंड मैनेजमेंट के लिये बिल यहां आने वाला है जिससे राजस्थान आगे का एक कदम और उठावेगा तो उससे जो दिक्कतें सामने हैं या आई हैं या आवेंगी उनको भी दूर करके चला जावेगा ।

माननीय अध्यक्षजी, इस सदन में यह जिक्र किया गया कि राजस्थान के ऊपर जबरदस्त कर्जा है और राजस्थान के अन्दर बहुत जबरदस्त टैक्स है....

श्री भैरोंसिंह : इसका मतलब यह लगा लें कि नये चुनावों तक जो किसानों को राहत देना चाहते थे वह अब नहीं देना चाहते हैं आने वाले चुनावों तक ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : अध्यक्षजी, मैं निवेदन करूं कि किसानों को राहत देने के लिए आज भी कानूनों के अन्दर काफी प्रावधान हैं और आगे भी पूरी तरह से उनको राहत देने के लिए आवश्यक है कि लैण्ड रेवेन्यू बिल और टीनेन्सी बिल दोनों को साथ लेकर पास किया जाये कि जिससे जो उस लॉ कमीशन की मन्शा थी कि कन्सोलीडेटेड तरीके से लैण्ड मैनेजमेंट के बारे में एक तस्वीर सामने आये । इसलिए उसको आगे करना चाहते हैं ।

तो माननीय अध्यक्षजी, मैंने यह आपके सामने जिक्र किया इस सदन के अन्दर यह ख्याल होता है कि सरकार का एडमिनिस्ट्रेशन पर खर्चा अनाप-शनाप हो रहा है । एडमिनिस्ट्रेशन पर खर्चा जबरदस्त आकर पड़ा है । इस सम्बन्ध में माननीय सदस्य जानते हैं कि आज भारतवर्ष के जो अन्य १५ राज्य हैं उनमें जहां तक राजस्थान का सवाल है टैक्स के मामले में राजस्थान की जनता पर पर–कैपिटा टैक्स में राजस्थान ६ वें नम्बर पर आता है । पर–कैपिटा टैक्स राजस्थान के अलावा ८ राज्य और हैं जहां पर प्रति व्यक्ति टैक्स ज्यादा है ।

माननीय अध्यक्षजी, सिविल एडमिनिस्ट्रेशन के अन्दर राजस्थान का....

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : मेरे ख्याल से किसानों पर राजस्थान में सबसे ज्यादा टैक्स है ।

श्री रामकिशन : आप मद्रास और बोम्बे से तुलना कर रहे हैं जहां कि इन्डस्ट्रियल एरिया है । खेती वाले क्षेत्रों में राजस्थान पर टैक्स सबसे ज्यादा है ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : आज राजस्थान में जो पर–कैपिटा टैक्स है उसकी बात मैंने निवेदन की ।

सिविल एडमिनिस्ट्रेशन का जहां तक राजस्थान का सवाल है, राजस्थान का क्षेत्रफल इतना बड़ा है कि जहां पर सिविल

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

एडमिनिस्ट्रेशन के ऊपर और किसी प्रदेश में प्रति व्यक्ति जितना खर्चा आए उससे ज्यादा खर्चा राजस्थान के अन्दर स्वाभाविक होगा। क्योंकि हमारा क्षेत्रफल ज्यादा होने में सिविल एडमिनिस्ट्रेशन को चलाने के लिए एडमिनिस्ट्रेशन तहसीलों के नम्बर, पुलिस के थानों के नम्बर ज्यादा होंगे। लेकिन टैक्स के मामले में जहां हम सारी स्टेट्स में नवें नम्बर पर हैं। सिविल एड-मिनिस्ट्रेशन के अन्दर पर कैपिटा एक्सपेन्डी-चर में १० वें नम्बर पर हैं। इससे यह जाहिर होता है कि इस मामले में कटौती करके हम चल सकते हैं और राजस्थान के अन्दर इस काम को आगे बढ़ाया जा सकता है और उसको बढ़ाने की कोशिश की जाय।

माननीय अध्यक्षजी, राजस्थान के अन्दर यहां पर इसका भी जिक्र किया जाता है और बार बार यह सवाल उठाया जाता है कि राजस्थान के अन्दर जो हमारी वित्तीय स्थिति है, हम पर जो कर्जदारी है उसके कारण ओवर ड्राफ्ट्स हुए और उसके लिए राजस्थान सरकार को दोषी बताया जाता है। मैं भी इस बात को मानता हूं कि ओवर ड्राफ्ट्स नहीं होने चाहिए। मैं भी इस चीज को मानता हूं कि राजस्थान के अन्दर बैलेन्स्ड तरीके का बजट बने। हमारे सामने दिक्कतें रहीं। अकाल की वजह से रहीं, डेवलपमेंट के लिए जो हमने प्रोजेक्ट्स के लिए आॅर्डर्स प्लेस किये थे केपीटल एक्सपेन्डीचर की स्थिति में ज्यादा एक्स-पेन्डीचर करने का सवाल आया उसकी वजह से यह परेशानी सामने आई। माननीय अध्यक्षजी, आज कभी इस बात पर विचार किया जाय कि इन पिछले ४-५ वर्षों के अन्दर जिस मंहगाई के सवाल को उठाया जाता है यह सरकार भी इस बात को अच्छी तरह से जानती है कि मंहगाई का प्रश्न देश के लिए एक गम्भीर प्रश्न है। हम भी इस बात को मानते हैं कि मंहगाई की वजह से जो योजनाओं के द्वारा हम जो परिणाम लाना चाहते हैं उन परिणामों को उस हद तक लाने में रुकावटें साबित हुई हैं। हम भी इस बात को जानते हैं कि मंहगाई की वजह से आम लोगों की जिन्दगी पर असर पड़ रहा है। माननीय अध्यक्षजी, जिस डेफिसिट फाइनेंसिंग की वजह से देश में मंहगाई का सवाल सामने आता है उसके अन्दर भी हम गहराई के साथ जायें तो मैं समझता हूं कि माननीय सदस्य इस बात को जानेंगे कि इस तीसरी पंचवर्षीय योजना का काल देश के लिए कितनी मुश्किल का काल रहा है। आज इस बात पर विचार करें आप कि जिस देश में १९६१-६२ के अन्दर हमारी प्रजा पर ३१२ करोड़ रुपये का खर्चा था, चाईनीज एग्रेशन हुआ, इसी तीसरी पंचवर्षीय योजना में, दुर्भाग्य से इसी तीसरी पंचवर्षीय योजना में पाकिस्तान का एग्रेशन हुआ और देश के लिए यह आवश्यक है कि देश की हिफाजत के लिए, देश की स्वतन्त्रता के लिए चाहे जितनी मुश्किलें उठानी पड़ती हों उसके लिए इंतजाम किया जाना चाहिए.......

श्री फतहसिंह (चोहटन) : On a point of order, Sir, इंतजाम किया तो कल्पविलं के लनोरा और रोहड़ी में तीन कौक्यिा वर्षों खाली की [illegible]

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : माननीय अध्यक्ष जी, मैं यह निवेदन कर रहा था कि जहां १९६१-६२ में देश के डिफेन्स का बजट ३१२ करोड़ का था उस ३१२ करोड़ को बढ़ाकर आज १९६५-६६ में रिवाइज्ड एस्टीमेट्स हैं वह ८८८ करोड़ ४० लाख के हैं। अब इस बात से इस बात का अन्दाजा होगा कि देश के अन्दर करीब ५५० करोड़ रुपये का डिफेन्स के ऊपर खर्चा बढ़ा। आज डिफेन्स के ऊपर खर्चा बढ़ने का मतलब जो हम डेवलपमेन्ट के लिए, जो स्वर्गीय पंडित जवाहरलाल जी नेहरू कहा करते थे कि हिन्दुस्तान लड़ाई पसन्द नहीं करता, हिन्दुस्तान अपनी रोटी और रोजी के सवाल को हल करना चाहता है, हम देश के निर्माण के लिए, लोगों को बढ़ाने के लिए आज उस निर्माण के कामों पर खर्च करना चाहते हैं। आखिर डिफेन्स के लिए जब खर्च करने का सवाल आया वह देश के लोगों ने दिया, देश में से ही आया। इसकी वजह से डेफिसिट फाइनेन्सिग आया और मंहगाई के ऊपर असर हुआ और इन्हीं चार वर्षों के अन्दर राजस्थान के अन्दर माननीय सदस्य जानते हैं कि २ भयंकर अकाल पड़े। देश पर २ वार एग्रेशन हुआ। तो दो अकाल, दो एग्रेशन इन सारी परिस्थितियों के अन्दर देश को आगे ले जाने के लिए जिन मुश्किल हालातों में से इन ५ वर्षों में से निकलना पड़ा है माननीय सदस्य उसकी गंभीरता पर विचार करेंगे तो वह इस बात को मानेंगे कि चाइना के आक्रमण करने के पीछे उसकी मूल नीति यह थी कि हमारे देश के आर्थिक ढांचे को एक बार झटका दें कि जिससे हमारा दिमाग विकास से हट कर सारी ताकत को फौजी शक्ति बढ़ाने के लिए लगा दें। कुछ हद तक कामयाबी मिली लेकिन कांग्रेस का यह ध्येय रहा है कि देश की हिफाजत के साथ-साथ देश के विकास की भी आवश्यकता है। योजनाओं की आवश्यकता है, देश के निर्माण की आवश्यकता है। इसलिए उन कामों को किया गया।

आज, माननीय अध्यक्ष जी, देश की हमारी फौजी शक्ति चाहे हवाई जहाज की शक्ति हो, चाहे हमारी और शक्ति हो आज देश के अन्दर जबरदस्त शक्ति का निर्माण हुआ है। पाकिस्तान हमारी तरफ आंख उठाकर नहीं देख सकता है। उसका कारण मुख्य तौर से यह है कि हमारे कारखानों में ही हवाई जहाज तैयार हो रहे हैं। मैं इसको मानने के लिए तैयार हूँ। हमारे कृषि मंत्रीजी की यह इच्छा कहने की नहीं है कि हमारे हवाई जहाज कोई पाकिस्तान से कमजोर हैं। यह इस बात से भी जाहिर होता है कि हमारे हिन्दुस्तान के हवाई जहाजों ने पाकिस्तान को जबरदस्त शिकस्त दी है और इस पर सम्पूर्ण देश को गर्व है....

श्री भैरोंसिंह : ठीक है। लेकिन आप अपने कृषि मन्त्री जी को कह दें कि वह भाषण देने में थोड़ा संयम रखें। उन्होंने कहा था कि पाकिस्तान की एयरफोर्स हिन्दुस्तान से सुपीरियर है।

श्री नाथूराम मिर्धा : यह बिल्कुल गलत है। मैंने ऐसा नहीं कहा।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : कल ७॥ बजे पाकिस्तान रेडियो ने इसके बारे में कहा था।

श्री भैरोंसिंह : आप जो कह रहे हैं वह सही है। हमारी एयरफोर्स कितनी ही पॉवरफुल हो लेकिन यह कहने में थोड़ा संयम रखें।

श्री जोधसिंह चौहान : यह अपना बैलेंस खो गए।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : माननीय अध्यक्षजी, इन सब मुश्किल हालात के अन्दर भी आज देश के अन्दर ऐसी भी शक्तियां हैं कि जो देश के अन्दर चाहती हैं विघटन हो, देश में फिसिपेरस टेन्डेन्सी बढ़े, देश के अन्दर अराजकता हो और उस अराजकता के पैदा होने का लाभ कोई दूसरे देश उठायें। दुर्भाग्य से देश के अन्दर कुछ लोग हैं इस प्रकार के। इन हालातों के अन्दर देश को चलाना पड़ रहा है और चलाया है, दृढ़ता के साथ चलाया है। इन पिछले पांच वर्षों में पण्डित जवाहरलाल नेहरू जैसे महान् नेता के देहावसान की चोट भी इस देश ने सहन की है और उसके बाद स्वर्गीय लालबहादुरजी शास्त्री जैसे महान् नेता के देहावसान की चोट को भी सहन किया है और इस देश में आज जनतन्त्र कायम है। तो मैं निश्चित तौर से कहना चाहता हूं कि यह कांग्रेस पार्टी की वजह से ही कायम है इस देश के अन्दर।

आज देश को आगे कोई बढ़ा रहा है, देश का कोई निर्माण कर सकता है, देश में जनतन्त्र की स्वस्थ परम्पराएं कोई कायम रख सकता है तो वह कांग्रेस–शासन ही रख सकता है, अलग–अलग मिले जुले नहीं।

(शोरगुल)

एक माननीय सदस्य : कबर खोद रहे हैं।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : आने वाले चुनावों के लिए पार्टियों पर ...

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : ए. आई. सी. सी. के दफ्तर में ऐसे लोगों को नौकर रखें जो पाकिस्तान के एजेंट हैं।

यहां पर भी पाकिस्तान के एजेन्ट आपकी कांग्रेस के अन्दर बैठे हैं। जो आपके बड़े २ नेता हमारे राजस्थान के बोर्डर पर हैं, उनमें से सात ऐसे सदस्य थे, ११) रुपये के सदस्य थे, जो पाकिस्तान में चले गए। ये कांग्रेस के ही हैं, विरोधी पार्टी के नहीं।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मुश्किल यही होती है कि माननीय सदस्य बड़े-बड़े सवालों को समझने की बजाय छोटे–छोटे मामलों में जाते हैं। ये छोटे–छोटे सवाल निश्चित रूप से हैं, क्योंकि आज, मैं निवेदन करूं, माननीय अध्यक्षजी,....

(व्यवधान)

श्री रामानन्द अग्रवाल : माननीय मुख्य मन्त्रीजी ने देश की सुरक्षा के सम्बन्ध में जो....

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य !

श्री रामानन्द अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, मैं एक ही प्रश्न ही पूछना चाहता हूं।

देश की सुरक्षा के सम्बन्ध में जो हमारी फोर्सेज़ ने पराक्रम और वीरता दिखाई उसकी इस सदन ने सराहना की है

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

परन्तु जो ऑफिशियल एडमिनिस्ट्रेटिव लैप्सेज रहे हैं, जब पाकिस्तान और हमारे बीच में सीज फायर हुआ उसी रात को हमारे लैप्सेज से हमने फोर्सेज बाड़मेर में वक्त पर नहीं भेजी, दो दिन के बाद फोर्सेज गईं और इस वजह से पाकिस्तान उस सीज फायर से आगे बढ़ कर हमारे एरिया में घुस आया और उसने अनऑथोईज्ड़ ऑक्युपेशन करने की कोशिश की जिसके लिए हमें बहुत बड़ा सेक्रीफाइस करने की जरूरत पड़ी। उसकी जिम्मेदारी इस राजस्थान सरकार पर है कि नहीं, यह हम जानना चाहते हैं।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : इसमें पॉइन्ट ऑफ ऑर्डर कौन सा है, मैं नहीं समझता कि इसमें क्या बात है, यह तो बीच में ही भाषण आरम्भ हो गया।

(विराम)

तो मैं, माननीय अध्यक्षजी, यह निवेदन कर रहा था कि देश के सामने इन मुश्किल हालातों से देश को निकालने की बात रही है।

आज, माननीय अध्यक्षजी, हमारे राजस्थान के अन्दर लॉ एण्ड ऑर्डर के सवाल को उठाया जाता है और और बातों को भी उठाया जाता है। मेरे पहले बोलने वाले इस तरफ के माननीय सदस्यों ने भी इस बात पर काफी प्रकाश डाला है। क्या स्थिति थी राजस्थान की और क्या परिवर्तन आज राजस्थान के अन्दर है। मैं उसके विवेचन में पड़ूं इसकी आवश्यकता नहीं। यह ठीक बात है कि जो घटनाएं हुई हैं उन घटनाओं के बारे में हमें भी दुख है। "राजस्थान पत्रिका" की घटना के बारे में भी दुख है और चीजों के बारे में भी दुख है और उसके बारे में जो कुछ कर सकें वह करने के लिए सरकार हमेशा तैयार रही है और रहेगी....

श्री मानिकचन्द सुराणा (कोलायत) : हमला होने के बावजूद और आपके कहने के बावजूद एक मुल्जिम को पकड़ नहीं पाये इसमे ज्यादा सरकार का, गृह मन्त्री और गृह मंत्रालय का निकम्मापन और क्या हो सकता है ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : माननीय अध्यक्षजी, सारी बातों को जो यहां पर उठाया गया और भी बहुत से सवाल उठाए गए और कई चीजें रखी गईं। ओवर ड्राफ्ट के बारे में मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ कि पिछले वर्षों में राजस्थान में ही ओवर ड्राफ्ट हुआ हो यह बात नहीं है। हिन्दुस्तान की कई स्टेट्स के अन्दर भी ओवर ड्राफ्ट हुए हैं विशेष परिस्थितियों के कारण से। जो रिवाईज्ड एस्टीमेंट्स मुझे मालूम हुए हैं, टोटल भारतवर्ष के अन्दर डेफिसिट फाइनेंसिग के कारण करीब १८८ करोड़ रुपयों के करीब के ओवर ड्राफ्ट स्टेटों के हैं और हमारे पास सिक्योरिटीज पहले ही नहीं होने की वजह से राजस्थान में ओवर ड्राफ्ट का सवाल खड़ा हुआ। महाराष्ट्र जैसी स्टेट में, जो मुझे जानकारी मिली है उसके अनुसार करीब ६३ करोड़ रुपयों का जो उनकी सिक्योरिटीज थीं उसको सेल करके वहां पिछले वर्षों में अपने काम-काज को आगे बढ़ाया है। गुजरात में १२ करोड़ की सिक्योरिटीज को सेल करके काम को आगे बढ़ाया है, और यू० पी० ने भी अपनी सिक्योरिटीज

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

को सेल किया है। राजस्थान के पास सिक्योरिटीज़ नहीं होने की वजह से राजस्थान के अन्दर इस ओवर ड्राफ्ट की सिचुएशन पैदा हुई। राजस्थान में, माननीय अध्यक्षजी, जो आज स्थिति है इन पिछले पांच वर्षों में जो परिस्थितियां पैदा हुई हैं, दूसरों में भी हुई हैं। राजस्थान एक ऐसा पिछड़ा हुआ प्रदेश रहा है और....

श्री मुकुटबिहारीलाल गोयल : आपके मुख्य मन्त्री होने के बाद।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : उद्योगों के बारे में भी यहां सवाल उठाए गए और यह कहा गया कि यहां पर उद्योगपतियों को यह सहूलियतें क्यों देते हैं, प्लाटों के सम्बन्ध में ऐसा क्यों होता है ? इस सदन में, माननीय अध्यक्षजी, हमारे बहुत से माननीय सदस्यों ने ...

श्री भैरोंसिंह : राजस्थान पर ओवर ड्राफ्ट कितना है ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैं समझता हूँ, एक्जेक्ट फिगर तो इस समय मुझे मालूम नहीं है लेकिन करीब बीस करोड़ के ऊपर है।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : २४ करोड़ है।

श्री भैरोंसिंह : मुख्य मन्त्रीजी को यह पता नहीं है कि राजस्थान का ओवर ड्राफ्ट कितना है ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैंने निवेदन किया कि बीस करोड़ के ऊपर है एक्जेक्ट फिगर नहीं हैं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : वह तो ठीक है लेकिन दुख तो इस बात का है कि राजस्थान के मुख्य मंत्री को यह मालूम नहीं कि राजस्थान का ओवर ड्राफ्ट कितना है ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : माननीय अध्यक्षजी, मैं यह निवेदन कर रहा था कि राजस्थान के अन्दर इण्डस्ट्रियेलाइजेशन के बारे में जयपुर के माननीय सदस्य ने कोटा में जो फर्टीलाईजर फैक्ट्री जालान के जरिये स्थापित करने की बात थी उसके बारे में जिक्र करते हुए कहा कि पहले हमने पन्द्रह सौ रुपयों के बारे में कहा था और हजार रुपये में उसको क्यों दी जमीन ? मैंने उस वक्त भी जवाब दिया था और अभी भी मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ कि उनको अपनी फर्टीलाइजर फैक्ट्री लगाने के लिए जब लाइसेंस मिला उनको और जब उस वक्त के एक्जिस्टिंग रूल्स थे और अलॉटमेंट की रेट थी उसके अनुसार अगर वह कोटा के अन्दर जमीन लेते तो उन्हें तीन सौ रुपये एकड़ के अन्दर जमीन मिलती। उस समय हम चाहते थे कि यह फर्टीलाइजर फैक्ट्री हनुमानगढ़ में लगाई जाय, और हनुमानगढ़ में रेट दो सौ रुपये की थी। इसके बाद इकोनॉमिक रीज़न्स से वहां के लिए यह प्रश्न सामने आया कि वहां पर फर्टीलाइजर फैक्ट्री लगाने के लिए जिप्सम बेस नहीं हो सकता है। इसके लिए यह नेफ्था को कॉस्ट और ट्रांसपोर्टेशन, ये चीजें हनुमानगढ़ तक लेजाने के लिए बहुत ज्यादा खर्चा पड़ता था तो उनके कोलेबोरेटर्स ने यह सलाह दी कि

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

आपको यह फैक्ट्री कोटा में लगानी चाहिए। उन्होंने कोटा के अन्दर फैक्ट्री लगाने के लिए भारत सरकार को लाइसेंस ट्रांसफर करने के लिए मूव किया उनको कोटा में फैक्ट्री लगाने को लाइसेंस मिल गया। यह लाइसेंस मिलने के बाद जब उन्होंने आकर यहां बताया कि जो कोटा में वह फैक्ट्री लगाने वाले हैं उसके लिए जो उनको जमीन दी जा रही है उसके लिए पंद्रह सौ रुपये एकड़ तक जो आज के रिवाईज्ड नियम हैं उसके अनुसार चार्ज करना वाजिब नहीं है, इसके लिए तो वह चेंज ऑफ साईट कर रहे हैं। अगर उनको १९६१ में ही कोटा में साईट मिल जाती तो ३००) रुपये में ही वह जमीन मिल जाती। और जब कि वे साईट बदल कर दूसरी जगह आ रहे हैं और जिस फैक्ट्री का लाइसेंस १९६१ में ही मिला हुआ है तो उनसे पंद्रह सौ रुपया लेना वाजिब नहीं है। लेकिन हमने उनसे कहा कि इस मामले में ज्यादा नहीं कर पायेंगे और उन्होंने बजाय तीन सौ रुपये पर इन्सिस्ट करके हजार रुपया पर एकड़ की उनसे कॉस्ट लें इस पर फैसला किया गया है। माननीय अध्यक्षजी, मैं तो यह निवेदन करना चाहता हूँ कि यह मान लीजिये कि कंसेशन भी है या कंसेशन भी देना पड़े तब भी मैं समझता हूं २० करोड़ रुपये लगाकर कोटा में डी. सी. एम. वालों द्वारा एक फर्टीलाइजर फैक्ट्री लगाई जाने वाली है और यदि कोटा को यह सौभाग्य प्राप्त हो सके कि २० करोड़ की लागत से फैक्ट्री लगने के बाद भी कोटा में दूसरी फर्टीलाइज़र फैक्ट्री हो जाय तो कोटा के लिए यह बहुत बड़ी बात है। मेरे दिमाग में परेशानी इस बात की है कि कोटा में लग सकती है या नहीं। आज का सवाल यह नहीं है। वे यदि सन् ६१ में जमीन लेते तो उनका जमीन लेना गलत साबित नहीं होता और उस समय वह जमीन उनको ३००) एकड़ के भाव से मिलती। आखिर उस पार्टी को जिसने ६१ में लाइसेंस लिया था उसको यदि जमीन देने की कार्यवाही की गई तो क्या बेजा किया गया?

राजस्थान में इण्डस्ट्रियलाइजेशन के लिए यह समझ कर चलें कि राजस्थान में कारखाने लगानेवाले ऊपराऊपर पड़ रहे हों और हम एक के साथ ज्यादा सहूलियतें देने का व्यवहार कर रहे हों और दूसरे लोग ज्यादा कारखाने लगाने के लिए आ रहे हों तो मैं आप से निवेदन कर दूं कि ऐसी बात नहीं है। राजस्थान में कारखाने लगाने के लिए, आज के लिए ही नहीं कह रहा हूं आगे के लिये भी कह रहा हूँ, हमको बहुत प्रयत्न करने पड़ेंगे और, बहुत सहूलियतें देनी पड़ेंगी क्योंकि राजस्थान इस प्रकार का प्रदेश है जहां न तो कंजम्पशन के लिए सेन्टर है और न रॉ मेटीरियल उपलब्ध है। इन्डस्ट्रीज उस जगह होती हैं जहां पर रॉ मेटीरियल मिलने की आसानी हो, जहां पर सस्ती बिजली उपलब्ध हो और कन्ज्यूमिंग सेन्टर हो। हम राजस्थान में इस बात की चर्चा करते हैं कि आम लोगों पर टैक्स लगाने के बजाय नॉन टैक्स रेवेन्यू बढ़ानी चाहिये तो हमें इण्डस्ट्रीज की तरफ ज्यादा ध्यान देना पड़ेगा। आज महाराष्ट्र, गुजरात, बंगाल उनकी हैसियत हमसे बहुत ज्यादा है और एक–एक योजना में वे अपने साधनों से भी धन लगा पाते हैं और अपनी योजनाओं को बढ़ा पाते हैं उसका मूल

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

कारण यह है कि जो प्रदेश आज उद्योगों की दृष्टि से आगे बढ़े हैं वे आगे बढ़ते चले जाते हैं और जो पिछड़े हुए हैं उनको बढ़ने का प्रयत्न करना पड़ता है। आज राजस्थान को आनेवालों वर्षों में बहुत प्रयत्न करना पड़ेगा क्योंकि राजस्थान की भौगोलिक स्थिति और दूसरी बातें ऐसी हैं जिनके बारे में सोच समझकर चलना पड़ेगा। आज कहना आसान है, कीचड़ उछालना हो तो उछाल सकते हैं कि हमने १५००) के बजाय १०००) रु० में दे दिया। हनुमानगढ़ में हमने उनको २००) एकड़ के हिसाब से जमीन दी थी और कोटा में भी उस समय देते तो ३००) रु० के भाव से ही देते...

श्री भैरोंसिंह : यह बात मैं नहीं कहता बल्कि उस पार्टी की तरफ से श्री हांडू आपके पास आवे, उन्होंने रिप्रजेन्टेशन किया उसके बाद आपने तय किया है कि १५००) से कम में नहीं दी जायगी फिर क्यों आपने बदला फैसले को ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैंने कहा कि वे आये, मेरे से मिलने के बाद जो बातें कहीं उसके बाद जो उनकी तरफ से प्रस्ताव था उसमें वजन मालूम हुआ। वज़न मालूम होने के बाद इन्डस्ट्रीज सेक्रेटरी ने उसको एग्ज़ामिन किया फिर फाइनेन्स डिपार्टमेंट को भेजा। वहां से एप्रूवल आने के बाद मिनिस्टर फॉर इन्डस्ट्रीज़ को भेजा और उन्होंने एप्रूव किया उसके बाद केबिनेट में भेजा और केबिनेट ने एप्रूव किया और सबने इस व्यू पॉइन्ट को एप्रिशियेट किया कि उनकी वाजिब मांग है।

श्री भैरोंसिंह : मैं मुख्य मन्त्रीजी से यह नहीं कहता कि असत्य बात सदन में कह रहे हैं आज भी इन्डस्ट्रीज सेक्रेटरी, इन्डस्ट्रीज़ मिनिस्टर और फाईनेन्स डिपार्टमेंट के सेक्रेटरी ने १५००) रु० से कम में देना कभी स्वीकार नहीं किया। अध्यक्ष महोदय, आप स्वयं कागज मंगा कर देख लीजिए सत्य और असत्य का पता चल जायगा।

श्री रामानन्द अग्रवाल : माननीय सदस्य केटेगोरिकली कहते हैं कि उद्योग मन्त्री ने स्वीकार नहीं किया और उद्योग मन्त्री यहीं पर बैठे हैं वे केटेगोरिकली बतावें कि वस्तुस्थिति क्या है ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : इसमें और तरह की भ्रान्ति पैदा करने की कोशिश की जा रही है। मैं जानकारी देता हूँ कि इन्डस्ट्रीज़ सेक्रेटरी से श्री हान्डू के मिलने के बाद २५–५ को ...

श्री अध्यक्ष : मैं निवेदन करूंगा कि जो सरकारी फाइल है उसमें से न पढ़ें क्योंकि पढ़ने में और बातों का भी उल्लेख करना पड़ेगा। सेक्रेटरी कुछ भी लिखे उसका असर नहीं पड़ता क्योंकि आप जिम्मेदारी लेते हैं इसलिए फाइल से निवेदन नहीं करें।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : जो बात मैंने कही है पूरे तौर से सही बात है कोई अन्तर की बात नहीं है।

श्री भैरोंसिंह : मैं कह रहा हूं कि मैं जो कह रहा हूं वह सही है और मुख्य मंत्रीजी

(श्री भैरोंसिंह)

कह रहे हैं वह असत्य है। मैं रेकार्ड पेश करूंगा।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैं कहता हूं कि जो फाइल है वह मैं स्पीकर साहब को बता दूंगा।

श्री भैरोंसिंह : मंजूर है।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैं ज्यादा दूसरी चर्चाओं में न पड़कर एक बात निवेदन करना चाहता हूँ, मुझे सदन में इस बात का दुःख होता है मैं निवेदन करूं जब, हम सारे काम काज में लगे रहते हैं उसके बाद घुमा फिरा कर जो बातें यहां उठाई जाती हैं वे निराधार और असत्य बातों को सामने रखकर राजनीतिक तरीके से पेश करने की कोशिश की जाती है।

हमारे लायक मित्र बनेड़ा के माननीय सदस्य ने सोने के मामले में एक जोरदार हवा बनाने की कोशिश की और यह बताया कि ६ तारीख को चित्तौड के अन्दर एफ० आई० आर० मुझे दी गई। मैं माननीय सदस्यों को सूचित करना चाहता हूँ कि तारीख ६ को ४ बजे शाम को मैंने जयपुर में केबिनेट की मीटिंग को प्रिसाइड किया है...

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : सुबह ११॥ बजे कहा था...

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : तारीख १०-१२-६५ को उसी केबिनेट की मीटिंग को कन्टीन्यू किया गया इसलिए दूसरे रोज मैंने उसको प्रिसाइड किया....

(शोरगुल)

और माननीय अध्यक्षजी, तारीख ८ को मैं दिल्ली में था। मैं बाहर जाता हूँ तब मेरे साथ पुलिस वान जाती है, मेरी गाड़ी जाती है, ड्राइवर जाता है लॉग बुक होती है उसमें एन्ट्री होती है और भी होता है....

एक माननीय सदस्य : आपने कहा और भी होता है, और क्या होता है ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : माननीय सदस्य को इस बात का एहसास होना चाहिए कि गलत बात को महसूस करने के बजाय यहां कहा जाय कि सोना पी० सी० सी० में आ गया, दूसरों के पास आ गया, मैं सदन में गर्व पूर्वक कह सकता हूँ कि राजनीति मे आने के बाद १८ साल तक मिनिस्टर और चीफ मिनिस्टर की तरह से रहा हूँ, बीकानेर के माननीय सदस्य ने रजिस्ट्रीज दिखाई ७ हुई हैं मेरी पत्नी के नाम पर लेकिन उन्होंने यह नहीं बताया कि कुल जमीन कितनी है। मैं १८ साल तक मिनिस्टर और चीफ मिनिस्टर रहा और ८ एकड़ जमीन और एक छोटा सा मकान मेरे पास है और आज यह स्थिति है कि वह भी बैंक के पास गिरवी है, मेरी लाइफ इन्श्योरेन्स भी गिरवी है और कर्जा है मुझ पर....

(शोरगुल)

इस जगह बैठकर आज यह कहा जाय कि किसी जगह उद्योग खोल दिया, पैसा खा गये, सोना खा गये यह कहां तक उचित है! सोने के मामले में सोने वाला पकड़ा जाय सोना बरामद किया जाय, मुकदमें में चालान किया जाय, जो आदमी काउन्टर

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

पर जाकर सोना दे डिफेन्स फण्ड में सोना देने के लिए काउन्टर बना हुआ था कोई आदमी सोना दे सकता था वहां जाकर किसी ने सोना दे दिया या शास्त्रीजी को तुलवाने के लिए किसी ने ऑल इण्डिया रेडियो से अनाउन्समेंट करवा दिया तो कहा जाता है कि सोना हम खा गये, पी० सी० सी० में रख दिया, जुडिशियल इन्क्वायरी कायम करवा दीजिये। नाथद्वारा के मामले में जुडिशियल इन्क्वायरी की मांग अविश्वास प्रस्ताव पर बहुत जोरों से रखी गई थी और जुडिशियल इन्क्वायरी मैंने खुद ने कायम की। हिन्दुस्तान के इतिहास में यह पहला उदाहरण है जहां मुख्य मंत्री ने अपने ऊपर जुडिशियल इन्क्वायरी बैठाई है और जब इन्क्वायरी के बाद यह कह दिया कि कुछ नही है तो इन्क्वायरी करने वाले चीफ जस्टिस थे उनके ऊपर आक्षेप लगाना शुरु कर दिया। यदि उनको विरोध ही करना है तो संतुष्ट करने का कोई रास्ता नहीं है। चाहे कुछ कर दीजिये, वह चाहते यह है कि कोई इन्क्वायरी कायम हो जाय तो चलो कुछ दिन चर्चा चलाने के लिए कुछ मौका मिल जायगा, या कुछ और हो जाय तो चलो कुछ दिन चर्चा चलाने के लिए मौका और मिल जायगा। तमाम माननीय सदस्य, मैं समझता हूं कि आपके पास बैठने वाले माननीय सदस्य हैं वह गहराई से विवेचन करेंगे और अहसास करेंगे कि जो सोने का मामला सदन में चल रहा है और जिस सोने को मेरे द्वारा लेने की बात कही गई उसके सम्बन्ध में मुकदमा चल रहा है। अब यह कहा जाय कि वह मेरे पास आ गया है, तो मैं निवेदन करना चाहता हूं कि इस सदन के सब माननीय सदस्य जानते हैं, और अगर सब नहीं जानते हैं तो उदयपुर के माननीय सदस्य जानते हैं कि चित्तौड़ के जो एस० पी० हैं वह सारे विभाग के अन्दर....

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : मैं जानता हूं।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : और वहां की रहने वाली जनता है उसके अन्दर एक ट्रान्सपेरेन्टली ऑनेस्ट आदमी हैं, उस आदमी को इस साजिश के अन्दर हिस्सेदार बनाना चाहते हैं और उसके लिए आप कहना चाहते हैं और यह कहना चाहते है कि जैसे आप ही शरीफ आदमी रह जायं। मैं उस दिन भी यहां पर केबिनेट को प्रिसाइड कर रहा हूं, दूसरे दिन भी केबिनेट को प्रिसाइड कर रहा हूं और आप ऐसी हवा बननाने की कोशिश करें कि सोने के टुकड़े आ गये, दूसरी चीजें आ गई। मैं बनेड़ा से आने वाले माननीय सदस्य से कहना चाहता हूं कि इस तरह की हवा बनाने से आप बनेड़ा–हुरडा से जीतने वाले नहीं हैं। इस तरह की असत्य बातों की वजह से ही लोगों का आपके अन्दर से विश्वास उठ गया है। आप समझते हैं कि बनेड़ा तहसील का निर्माण आपने करा दिया है....

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : बिल्कुल करवा दिया है और इसीलिए यहां बैठा हूं।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : आप धन्य-वाद दो उस माणिकलाल को जो बनेड़ा

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

को छोड़ कर बाहर निकल कर बैठा है और एक तरह से हड़ताल कर के बैठ गया है। आप उस माणिकलाल के त्याग पर अपनी किस्मत की अजमाइश करना चाहते हैं और उसका फायदा उठाने की कोशिश करना चाहते हैं। पर सब बातों को वहां के लोग जानते हैं....

श्री रामानन्द अग्रवाल : यह तो आप स्वीकार करते हैं कि भूख हड़ताल के बाद ही आपने कन्सीड किया ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : और बनेड़ा से आने वाले माननीय सदस्य, जब वहां पार्लियामेन्ट के चुनाव हुए, तो बड़े जोरों से दहाड़ते थे....

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : बिल्कुल दहाड़ता था।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : लेकिन जो स्वतन्त्र पार्टी का नेतृत्व करती है, महारानी साहिबा, आप समाजवादी हैं और क्रान्तिकारी हैं फिर भी आप जब उनके सामने बैठते थे, उसका दृश्य देखा है, आप उनके चरणों में विराजा करते थे।

श्री रामकिशन : उनके चरणों में इसलिए नहीं बिराजते थे कि वह महारानी हैं, बल्कि इसलिए बिराजते थे कि वह नारी हैं, मां हैं।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : इसलिए आप बिराजते थे कि आपने देखा कि किसी तरह से मौका मिल जाय। और आज के दिन भी बनेड़ा से आने वाले माननीय सदस्य दौड़ रहे हैं, कोशिश कर रहे हैं कि कहीं से समर्थन मिल जाय, किधर से भी समर्थन मिल जाय, किसी प्रकार से कोई मदद कर दे तो मैं जीत जाऊं तो अच्छा है। लेकिन मैं निवेदन करना चाहता हूं कि इस प्रकार के आक्षेपों से आप जीतने वाले नहीं हैं क्योंकि लोग सब जानते हैं कि कौन कितनी कार्यवाही या काम कर रहा है। वह जानते हैं कि कांग्रेस काम कर रही है........

श्री योगेन्द्रनाथ हाण्डा : कांग्रेस भ्रष्टाचार कर रही है।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : यह सरकार काम कर रही है और वह वक्त दूर नहीं है जब आपको यह मालूम होगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, विरोधी दलों की तरफ से कहा गया कि कांग्रेस १९६७ के चुनावों में जीत कर नहीं आयेगी....

श्री विजयसिंह झाला : पांव लड़खड़ाने लगे हैं कांग्रेस के।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : सोने की ईंटों के बारे में आपने कह दिया क्या ?

कुछ माननीय सदस्य : बैठ जाओ! बैठ जाओ !!

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैं निवेदन करना चाहता हूं....

श्री रामकिशन : अगली सवाल तो आप टाल ही गये ।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : अध्यक्ष महोदय, इन्होंने जवाब दे दिया है तो मैं जवाब दे दूं ।

श्री अध्यक्ष : सवाल जवाब का प्रश्न नहीं है । अगर आप कोई प्रश्न पूछना चाहते हों तो पूछें ।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : मैं एक बात पूछना चाहता हूं । अभी मुख्य मंत्री जी ने कहा है कि वह ६ तारीख को साढ़े चार बजे यहां थे । मुझे कोई एतराज नहीं हो सकता है । लेकिन मैंने उस दिन का जो समय बताया था उस समय को आप याद करें । आप साढ़े ग्यारह बजे सुबह चित्तौड़ में थे तो साढ़े चार बजे आप यहां नहीं आ सकते ? और दूसरी बात....

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैं आपको निवेदन कर दूं कि....

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : मैं अभी पूछ रहा हूं ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : आपको ज्यादा महनत नहीं करनी पड़े इसलिए कह रहा हूं । मैं आठ को दिल्ली था और नौ की सुबह जयपुर आया हूं ।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : दूसरी बात यह कहना चाहता हूं कि आपने लालबहादुर शास्त्री जैसे आदमी को इस मामले में घसीट रखा है । मैं यह कहता हूं कि सोने से जो उनको तोलने वाला था वह उनके पास गया है । मैं एक बात सदन में रखना चाहता हूं कि ११ तारीख को हिन्दुस्तान समाचार का प्रतिनिधि है उसको इन मोहनलाल सुखाड़िया ने एक इन्टरव्यू दिया है जिसमें सोने के बारे में उन्होंने कहा है, वह मैं सदन में पढ़ कर सुना देता हूं :-

"श्री सुखाड़िया ने बताया कि बोमान गांव के श्री गणपति लाल, जो प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री को सोने से तोलने के लिए उपस्थित हुए, से स्वर्ण राशि राज्य के खजाने में जमा करा ली है । श्री गणपति लाल ने कल सुबह श्री सुखाड़िया से भेंट भी की है ।"

आगे इसमें बताया है ।

"श्री गणपति लाल प्रधान मंत्री शास्त्री के कांग्रेस अधिवेशन के समय जयपुर आने पर उन्हें सोने से तोल कर वह स्वर्ण राशि सुरक्षा कोष में देंगे ।"

माननीय अध्यक्ष महोदय, यह सारा स्टेटमेंट आपका है और यह अखबार में १२ तारीख को, राजस्थान पत्रिका में हूबहू छपा हुआ है । मैं यह कहना चाहता हूं कि आप यह बतायें, आपने यह स्टेटमेंट दिया या नहीं ?

(समय-समाप्ति सूचक घंटी)

श्री रामानन्द अग्रवाल : आपने कहा, नहीं मिला उनसे । आपने कहा, नहीं मिला ।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : मुझे थोड़ा टाइम दे दीजिये ।

श्री अध्यक्ष : आपने अपनी बात कह दी है, अब आप उनको सुनें।

श्री उमरावसिंह ढावरिया : मैं अभी कहना चाहता हूं....

श्री अध्यक्ष : आप तथ्य रख दीजिये।

श्री उमरावसिंह ढावरिया : मैं तथ्य रखता हूं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : मुख्य मंत्रीजी ने कहा था कि मुझे पता नहीं है।

श्री रामानन्द अग्रवाल : उन्होंने कहा कि मुझसे मिला नहीं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : पता नहीं है तो फिर स्टेटमेंट कैसे दिया ?

श्री रामानन्द अग्रवाल : आपने कहा कि मुझसे मिला नहीं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : कल हाउस में कहा था कि मुझे पता नहीं है।

श्री उमरावसिंह ढावरिया : मैं, आपके जरिये, अध्यक्ष महोदय, कहना चाहता हूं....

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैंने अध्यक्ष महोदय....

श्री उमरावसिंह ढावरिया : सुनिये, सुनिये। बैठ जाओ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : अध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूं।

कुछ माननीय सदस्य : बैठ जाओ ! बैठ जाओ !!

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप जो रखना चाहते हैं वह संक्षेप में रख दें। फिर मुख्य मंत्रीजी उत्तर दे दें।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : कांग्रेस के मेम्बर्स हूटिंग कर रहे हैं।

श्री अध्यक्ष : कोई नहीं कर रहे हैं।

श्री उमरावसिंह ढावरिया : मैं कहना चाहता हूं कि मुख्य मंत्रीजी कहते हैं, सोना पुलिस में है। फिर यह बतायें कि यह खजाने में जमा कैसे हो गया ? पुलिस में सोना अलग पड़ा है तो यह ४४ किलो सोना कहां है–यह बताइये ?

श्री अध्यक्ष : और भी प्रश्न पूछ लीजिये।

श्री उमरावसिंह ढावरिया : और दूसरी बात यह बताइये, जैसा हरिदेव जोशी ने कहा कि यह बेबुनियाद है, फर्जी है और झूठ है तो कांग्रेस अधिवेशन की रिसेप्शन कमेटी के आप चेयरमैन थे या नहीं ?

श्री हरिदेव जोशी : जी, मैं था।

श्री उमरावसिंह ढावरिया : कांग्रेस अधिवेशन पर तोलने के लिए सोना आपके पास था, वह आपके पास आया। क्या आप ना करते हैं ?

श्री हरिदेव जोशी : झूठ है। बेबुनियाद है ! गलत है !

श्री उमरावसिंह ढावरिया : झूठ है ?

श्री अध्यक्ष : आप समाप्त करें।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : एक बात और कहना चाहता हूं, जब से परसों से मैं ने इस सदन में इस बहस को उठाया है तो यह हरिदेव जोशी सारे प्रेस वालों को टेलीफोन कर रहे हैं, व्यक्तिगत तौर पर बुला बुला कर कह रहे हैं कि यह मामला मत छापो, यह अखबार में मत छापो। मैं यह कहता हूं कि यह इधर से उधर फिर रहे हैं, साढ़े दस बजे एक व्यक्ति के पास टेलीफोन आया, उसके पास में मैं बैठा था। फिर भी यह कहते हैं कि यह बहुत पवित्र हैं, नेक हैं और सदाचारी हैं। यह इतने सोने को खा जांय, इतने पैसे को खा जायं। मैं आपको सच कहता हूं अध्यक्ष महोदय ...

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य !

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : सुखाड़िया जी, मैं ने और आपने साथ साथ काम किया है, तुम्हारे पास तो दो लाख का बंगला आज है और हमारे पास था वह चला गया। यह आपकी ईमानदारी है? और आप बनेड़ा के चुनाव की बात करते हो। तुम मेरे सामने खड़े हो जाओ, मैं तुम्हारी जमानत जब्त करा दूंगा। तुम मेरे मुकाबले में खड़े तो हो जाओ।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य !

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मेरे पास में दो लाख का बंगला है या कितने का है........

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : मैं कहता हूं कि मैं उस बंगले के दो लाख देता हूँ। वह दो लाख का है।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : यह बंगला माननीय सदस्य का देखा हुआ है।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : हां, वह मैंने देखा है।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : इसलिए वह किसी से छिपा हुआ नहीं है।

श्री रामकिशन : दो लाख का नहीं है तो कितने लाख का है ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : यह मुझे कहने की जरूरत नहीं है। मुझे कहने की जरूरत इसलिए नहीं है कि मैं यह कह दूं, वह दो लाख में मैं देने के लिए तैयार हूँ तो यह कहेंगे कि उसकी कीमत दो लाख है।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : एक बात मैं कहना चाहता हूं, आपने कहा.......

श्री अध्यक्ष : अब आप उत्तर सुनिये !

श्री जयकृष्ण शर्मा (थानागाजी) : जैसा पहले आपने कहा था कि दो लाख रुपए वह उस समय देने को तैयार थे।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : उन्होंने यह भी कहा कि पार्लियामेंट के चुनाव के समय मैं महारानी के चरणों में बैठा हुआ था। मैं तो बड़े आदमियों की इज्जत करता हूँ। मैं कहना चाहता हूं कि अभी चुनाव नहीं है फिर जोधपुर की महारानी के पास धूल चाटने के लिए क्यों गये थे ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैं धूल चाटने के लिए नहीं जाता हूँ।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य !

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैं यह निवेदन करना चाहता हूं मैं कहीं बात करता हूं तो बराबरी के तरीके से करता हूं । पांव में बैठ कर नहीं किया करता ।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : नारी और माता के चरणों में बैठने में हमें एतराज नहीं है । उनके चरणों में हम बैठे हैं और आप भी बैठेंगे ।

श्री हरिदेव जोशी : आप समाजवादी अपने को कहते हैं, यही दिखाना चाहते थे ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : आपको कई चरणों में बैठना पड़ेगा । माननीय अध्यक्ष महोदय,........

(१.०० म. प.)

श्री रामकिशन : आप राजा महाराजाओं के शरण में जाने की बात को छोड़ दीजिये आपने जो स्टेटमेंट दिया है कि सोना खजाने में जमा है उसकी बात करें । राजा महाराजाओं की बातों में न जावें ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : उस सारे स्टेटमेंट का क्या बैंक ग्राउन्ड था, उसके बारे में क्या काण्ड हुआ, मैं नहीं कह सकता । मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि जो यह सारी बात है पता लगाने से रेकॉर्ड में मिल जावेगी । मैं नहीं चाहता था कि मैं यहां कहूँ कि यह कहा गया और वहां पर यह कहा गया और सेन्टर में दिल्ली में सप्लीकेशन दी गई और जब यह समाचार सामने आये तो इस समाचार के आने के बाद माननीय सदस्य को उनकी जानकारी के लिए मैं यह भी बता दूं कि एक आध रोज के बाद हमारे स्वर्गीय प्रधान मन्त्री ने जो कांग्रेस के सदस्य थे उन्होंने कहा कि सोना इकट्ठा करने का प्रयत्न करें । उसके बाद में पार्टी मीटिंग में एक व्यक्ति जिसका नाम शायद गणपतिलाल रहा हो उसने ऑफर की है । पब्लिसिटी उस पर हुई और यह मामला वहां से स्टार्ट हुआ और मेरे सामने आया तो मैंने कहा कि उसे तुलाकर देना चाहिये । जब मुझे यह मालूम हुआ कि मामला गड़बड़ी का है और ये सारी बातें सामने आती हैं तो पुलिस में जो कार्यवाही हो सकती है वह हुई ।

श्री भैरोंसिंह : आप एक बात का उत्तर दें कि आपको यह बात किसने कही कि एक गणपतिलाल नाम का व्यक्ति सोने में तोलना चाहता है ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मुझे सबसे पहले दिल्ली में मालूम हुआ । मुझे वहां पर शिवचरण दासजी ने कहा ।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : आप १२ और १३ तारीख को तो जयपुर में थे ।

श्री हरिदेव जोशी : यह ८ तारीख की कह रहे हैं ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैं यह समझता हूँ कि अगर कोई भी माननीय सदस्य यहां पर इन्फोर्मेशन देते हैं तो उनका पूरा अधिकार है कहने का और मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि माननीय सदस्य के नाते जब हम कोई बात कहते हैं तो उनको सुनने का अहसास तो करना चाहिये कि जो बात कही जाती है उसमें क्या

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

तथ्य है। इतनी कर्टसी तो मैं भी आपसे एक्सपेक्ट करता हूँ। इसलिये नहीं कि जो कुछ भी मैं कहूँ उसको सुनें नहीं, इस जगह पर बैठने की वजह से। यह प्रतिवाद की बात नहीं है। इसलिये जिस तरीके से यह बात कही गई है वह सारी मिस्ट्री बना कर कही गई है इसके लिए मैंने निवेदन किया है।

अध्यक्ष महोदय, राजस्थान में अभी विधान सभा में और प्रश्न भी उठाये गये गवर्नमेंट एम्पलॉइज के बारे में और....

श्री रामानन्द अग्रवाल : मैं यह निवेदन करूंगा कि जो सोना था वह खजाने में अलग था और पुलिस ने पकड़ा वह अलग था, यह आप बता दें।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : खजाने का सोना पुलिस में कैसे जा सकता है। वह तो खजाने में जमा हो चुका था।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैं इसके वादविवाद में नहीं जाना चाहता....

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : आप यह बतावें कि आपने जो स्टेटमेंट दिया वह गलत था या सही था।

आपने जो स्टेटमेंट दिया है वह स्टेटमेंट सदन की मेज पर रखता हूँ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैं इसके बारे में जो बात इर्रिलेवेन्ट है उसमें पड़ना पसन्द नहीं करता। मैने सारी बातें कह दी हैं।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : ये सारी बातें आपके स्टेटमेंट में हैं और इसका ताल्लुक है।

(शोरगुल)

एक माननीय सदस्य : सोना खजाने में है और आप झूठ बोल रहे हैं।

श्री रामकिशन : अध्यक्ष महोदय, एक बात चीफ मिनिस्टर से कहने की है। मैं यह निवेदन करूंगा कि यह मामला अपने आप में बहुत गंभीर है इसलिये वे इसमें उत्तेजना से काम न लें। हमारा इरादा कोई इसमें चरित्रहीनता का आक्षेप लगाने का नहीं है। जो स्टेटमेंट है उसमें सोने का जिक्र ही नहीं है बल्कि लेवी का भी जिक्र है। यह आपका स्टेटमेंट हुआ है या नहीं। आखिर कार कोई इस प्रकार की बात सामने आती है तो जब तक आप उसको साफ नहीं करेंगे तो व्यवहार वैसा का वैसा रह जावेगा। इसलिये मैं चीफ मिनिस्टर से निवेदन करूंगा कि वे उत्तेजित न हों, तथ्य आपके सामने हैं उन पर आप कहें और इधर–उधर राजा महाराजा और महारानी और रानी के मामले में न उलझें।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैंने जैसा निवेदन किया कि कौनसी तारीख को कौनसा स्टेटमेंट दिया उसका विश्लेषण किये बिना मै कुछ तत्काल कहने की स्थिति में नहीं हूँ।

श्री रामनन्द अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन करूंगा कि यह एक ऐसा प्रश्न है जो हमसे हमेशा सब जगह पूछा जावेगा जब हम हम यहां से बाहर जायेंगे।

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

हम नहीं चाहते कि कोई भी गलत भावना चीफ मिनिस्टर के खिलाफ हो या हमें लोगों को कोई गलत बात कहनी पड़े। अभी जो स्टेटमेंट हुआ उससे इस बात का भ्रम फैलता है कि पुलिस ने जो सोना रिकवर किया वह अलग था और गणपतिलाल ने सोने में तोलना चाहा वह अलग रिजर्व में रखा गया। यह तथ्य सही है या नहीं ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैंने कहा कि किस रोज कहा, किस रोज नहीं कहा। जैसा मैंने निवेदन किया उन्होंने आकर कहा, मैंने यह कहा हो कि खजाने में जमा करा दो, मुझे पता नहीं।

श्री रामानन्द अग्रवाल : खजाने में जमा कराया गया या नहीं ?

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : आप गणपतिलालजी को कितने दिनों से जानते हैं ?

श्री अब्दुल जब्बार : अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूं...

श्री रामानन्द अग्रवाल : आप यह तो ऑफिशियल्स से पता लगा सकते हैं कि आया सोना जमा हुआ या नहीं और हुआ तो किसके डाइरेक्शन से हुआ ? वह सोना जयपुर में आया या नहीं ?

श्री अब्दुल जब्बार खां : मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि चीफ सेक्रेट्री ने कलेक्टर के नाम लेटर लिखा वह चित्तौड़ में जमा हुआ। वहाँ गवर्नमेंट की कस्टडी में है। जब यह हुआ कि यह चोरी का सोना है। किस प्रकार सोना गायब हुआ यह सब राजस्थान सरकार को कहना चाहिये। इसमें कई लोगों ने सोना बनाया है। कई बड़े बड़े कांग्रेस के लोगों का हाथ है।

श्री मानसिंह महार (आमेर) : लोगों में इस प्रकार की धारणा बन जावेगी इसलिये चीफ मिनिस्टर को कहना चाहिये कि इसके बारे में क्लेरीफिकेशन करें। वे इस प्रकार की बात नहीं कहें कि मुझे समय याद नहीं, तारीख याद नहीं है। हम यह नहीं कहते कि सोने को मुख्य मंत्री ने रखा या प्रदेश अध्यक्ष ने रखा। मगर ऐसा लगता है दाल में जरूर कहीं काला है। मुख्य मंत्री उत्तेजित होते हैं उससे भी मालूम होता है कि दाल में काला है। इसलिये मैं यह निवेदन करूंगा कि दिल और दिमाग को ठंडा करके इस पर गंभीरता से विचार करें।

श्री भैरोंसिंह : आपने स्वीकार किया वह तो संदेह के लिये पर्याप्त है। आपने कहा कि शिवचरणजी माथुर ने उनको कहा और उस बात पर निर्णय हुआ कि शास्त्रीजी को तोला जावे। मैं यह निवेदन करूंगा कि माननीय मुख्य मंत्रीजी सन् ५२ से लेकर आज तक किसी न किसी मंत्री की हैसियत से रहे हैं। उस हालत में मैं कभी भी आशा नहीं कर सकता कि शिवचरणजी से कम से कम आप यह पूछते कि यह सोना कहां से आया है और जैसा वे कहते हैं कि उन्होंने नाम बताया तो जब सारे समाचार पत्रों में यह प्रकाशित हो गया था कि सादड़ी में सोना पकड़ा गया और फलां आदमी के पास पकड़ा गया और ऐसे आदमी का नाम बताया जाता है तो सबसे पहला काम आपका यह था कि उस व्यक्ति को पकड़वाते

(श्री भैरोंसिंह)

और शास्त्रीजी को तुलवाने की बात तो बाद में आती। यह तो आपने नहीं किया और शास्त्रीजी को तुलवाने की बात की। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि आप उसको बचाना चाहते थे लेकिन आपको पता नहीं लगा और इन्कम टैक्सवालों ने और पुलिस वालों ने उसका पीछा किया तो आप उसको बचा नहीं सके।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैं इस विवेचन में, समझता हूँ जितना कह चुका हूँ, उससे ज्यादा बढ़ने की आवश्यकता नहीं है।....

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : क्योंकि फंसोगे।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : केस चल रहा है........

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : आपके बारे में........

श्री रामानन्द अग्रवाल : इस प्रश्न क मुख्य मंत्री को जवाब देना पड़ेगा।

(शोरगुल)

अध्यक्ष महोदय, इस प्रश्न का जवाब मुख्य मंत्रीजी को देना पड़ेगा।

श्री मोहनलाल सुखाडिया : अन्तर क्या पड़ता है.... ....

श्री रामानन्द अग्रवाल....आपके खजाने में सोना जमा हुआ कि नहीं हुआ ?

श्री अध्यक्ष : मुख्य मंत्रीजी ने कहा कि आज उनको ध्यान है उससे यह स्थिति है। पहले सूचना देते तो और जानकारी करके कहते। श्री अब्दुल जब्बार ने कहा कि चीफ सेक्रेटरी ने जमा कराया है....

श्री अब्दुल जब्बार : चितौड़ से उदयपुर भेज दिया क्योंकि चितौड़ को ट्रेजरी में इतनी सेफ्टी नहीं है। चीफ सेक्रेटरी साहब का लेटर है मैंने देखा है।

श्री अध्यक्ष : किसके कहने से हुआ, चीफ सेक्रेटरी ने किसके कहने से लिखा....

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : अध्यक्ष महोदय, जैसा अभी होम मिनिस्टर साहब ने कहा था, मैं उस रेफेरेन्स में कहना चाहता हूं। जो होम मिनिस्टर साहब ने कहा और जो अभी मुख्य मंत्रीजी ने कहा, दोनों में कॉन्ट्राडिक्शन है। निरंजननाथजी ने कहा कि जमीन खोद कर ४४ ईंटें बरामद की गई, एक एक किलो की सोने की ईंटे थीं, ४४ थीं और ये कहते हैं कि ३ किलो की ईंटें है, तो मैं जानना चाहता हूं कि बाकी सोना कहां गया ? वे कहते हैं कि खड्डा खोदकर बरामद किया गया और ये कहते हैं कि ट्रेजरी में जमा कराई।....

(शोरगुल)

हमको दबाते हैं, जब कि ये सब झूठे हैं।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य इस पर आगे बहस न करें, जो सोना है, तीन-चार जगह जुदा पड़ा है ....

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : कहीं, नहीं है, मुकदमा ४०६ का है, एक जगह है।

श्री भैरोंसिंह : अध्यक्ष महोदय, इस सबका यह मतलब है कि मुख्य मंत्रीजी इसका संतोषजनक उत्तर नहीं दे सके। सदन को ही संतोष नहीं हुआ हो, यही नहीं, अखबारों में यह सारी खबर छपेगी और इससे राजस्थान और हिन्दुस्तान की जनता को संतोष नहीं होगा। इन्वेस्टीगेशन कराने वाले लोगों पर आरोप लगाये गये हैं तो अच्छा होगा, मुख्य मंत्रीजी शायद जूडिशियल इन्क्वायरी की बात नहीं स्वीकार करें पर सेंट्रल इन्टेलिजेंस ब्यूरो है उसकी मार्फत इसकी जांच करायें। इससे ज्यादा स्पष्टीकरण नहीं करें तो आप जनता की नजरों में दोषी रहेंगे, जनता की नजरों में जो इल्जाम आप पर लगाये गये है उनसे बरी नहीं होंगे। आप कहते हैं कि मैंने तो एक ही बंगला बनाया है और वह भी कर्ज लेकर, इसलिये यह आपके भी हित में है, यह आपके लिये उचित होगा कि दिल्ली की पुलिस से इसकी जांच करवायें।

श्री निरंजननाथ आचार्य (गृह मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, एक क्लेरिफिकेशन है....

(शोरगुल)

एक माननीय सदस्य : बैठ जाओ....

(शोरगुल)

श्री हीराभाई : हम तुमको नहीं सुनाना चाहते।

एक माननीय सदस्य : किस मुंह से बोलते हो ?

(शोरगुल)

श्री अध्यक्ष : अब इस पर चर्चा आगे नहीं होगी, मैं समझता हूं इस पर काफी चर्चा हो चुकी है। माननीय सदस्य श्री भैरोंसिंहजी ने कहा जांच कराई जाय.......

श्री मानिकचन्द सुराणा : मुझे सिर्फ इतना सा निवेदन करना है, तीन बातें मुख्य मंत्रीजी के बयान से स्वीकार हो गई। जैसे ढाबरियाजी ने कहा कि एक मेम्बर ऑफ पार्लियामेंट गये थे जो कांग्रेस के हैं, उन्होंने सूचना दी कि सोने से तोलना चाहते हैं, लालबहादुरजी के वजन के बराबर सोना देना चाहते हैं, इसको मुख्य मंत्रीजी ने स्वीकार कर लिया। मुख्य मंत्रीजी ने यह भी स्वीकार कर लिया कि इस बयान के बारे में अभी कुछ नहीं कह सकते, राजस्थान पत्रिका फर्जी तौर पर १२ दिसम्बर को छापी नहीं जा सकती....

श्री अध्यक्ष : इस सारी बहस का मतलब क्या है ? मुख्य मंत्रीजी कहते हैं कि उनको इसकी सूचना नहीं थी इन सारी चीजों का स्पष्टीकरण तभी हो सकता....

श्री मानिकचन्द सुराणा : अध्यक्ष महोदय,....

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य....

श्री मानिकचन्द सुराणा : अध्यक्ष महोदय, इस प्रश्न को आपके सामने आये तीन दिन हो गये। ८ लाख रुपये का इल्जाम किसी मुख्य मंत्री महोदय पर लगे तो क्या हम यह उम्मीद नहीं कर सकते कि ४८ घंटे के अन्दर अन्दर सारी सूचना मंगवाई जा सकती है।

श्री अध्यक्ष : मैं नहीं समझता कि मुख्य मंत्रीजी को कभी सूचना दी, माननीय सदस्य ने सूचना दी या नहीं ?

श्री मानिकचन्द सुराणा : वे खुद मौजूद थे उस समय ।

श्री मुरलीधर व्यास : आप चुनाव में जीत नहीं सकते, मन माना कह दिया....

(शोरगुल)

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : और फिर कहते हैं कि हम झूठे हैं, अरे झूठे और चोर तो आप हो ...

(शोरगुल)

श्री मानिकचन्द सुराणा : गृह मंत्रीजी ने क्या कहा है, १६ दिसम्बर को कलेक्टर चितौड़ के यहां गणपतिलाल जी ने कहा कि यह सोना शास्त्रीजी को तोलने के लिये देना चाहते हैं । ९ तारीख को एफ० आई० आर० हो गई । मुख्य मंत्रीजी कहते हैं कि ११ तारीख को बयान हो गये और गृह मंत्रीजी कहते हैं कि १६ तारीख को बयान दिये कि मैं शास्त्रीजी को तोलना चाहता हूं । मैंने पहले ही कहा है कि निरंजननाथजी ने व्रत लिया है कि मुख्य मंत्रीजी को फंसा देंगे । निरंजननाथजी ने कुछ कहा है और मुख्य मंत्रीजी ने कुछ कहा है, मुख्य मंत्री महोदय जवाब दें....

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, इस विवाद का इस तरह कहीं हल नहीं होगा । मुख्य मंत्रीजी ने इस सदन में उस दिन केटेगोरिकली कहा है कि न उन्हें सोने का पता है, न केस का पता है, न सोने से तोलने का पता है । अब ऐसी परिस्थिति आ गई कि इन्होंने स्वीकार किया है, उनका उत्तर कतई असंतोषजनक है, उन्होंने कहा कि सोना दिल्ली में जमा हो गया....

श्री हरिदेव जोशी : दिल्ली में जमा है, कहां है ?

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : दूसरी बात कही उसमें कहा कि उदयपुर में राजकोष में जमा है....

श्री हरिदेव जोशी : वह बाद का है ।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : ४४ ईंटों पर अलग अलग सीलें लगी हुई हैं ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : माननीय आचार्यजी ने कहा कि ३-३ किलो की ईंटें हैं और यह कहते हैं कि एक एक किलो की ईंटें हैं । इसलिये मैं समझता हूं कि केन्द्रीय गुप्तचर विभाग से इसकी जांच होनी चाहिये, नहीं तो इस सारे इल्जाम की सफाई नहीं हो सकती । सदन की यह मांग स्वीकार होनी चाहिये ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मंत्री): माननीय अध्यक्ष मैं निवेदन करना चाहता हूं यह हवा बनाने की कोशिश की जाती है इस प्रकार की कि किस प्रकार के काम काज के जरिये अपनी स्थिति बनाते हैं । इसलिए इस बात को स्वीकार करता हूं । मैं जूडिशियल एन्क्वायरी कराऊंगा अगर जूडिशियल इन्क्वायरी में मेरे पास सोना आना साबित नहीं होने पाये तो आप भी सदन में खड़े होकर कह दें कि राजनीति से अलग हो जायेंगे ।

(शोरगुल)

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : इन्होंने जो सारी बातें कहीं, पहले कैसे रखीं, आज कैसे रखीं मैं आज भी कह रहा हूं....

(शोरगुल, अश्रव्य)

जो कुछ गृह मंत्रीजी ने कहा है, बिल्कुल गलत कहा है मैं इसे साबित कर के बताऊंगा कि सोना कहां है ।

(शोरगुल

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैं हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस को यह इन्क्वायरी सौंपूंगा....

विरोधी पक्ष के कुछ माननीय सदस्य : नहीं । सैंट्रल ईन्टेलिजेन्स ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : माननीय अध्यक्षजी माननीय सदस्य भी यह कहें कि अगर सोना मेरे पास रहना साबित नहीं हुआ तो राजनीति वे छोड़ देंगे इस बात का ऐलान करें ।

(शोरगुल)

श्री हरिदेव जोशी : क्योंकि माननीय सदस्यों को बोलने का अधिकार है अगर गलत इल्जाम लगा कर हवा बनाने की कोशिश करें....

(व्यवधान)

श्री मुरलीधर व्यास : (अश्रव्य)

श्री अध्यक्ष : आॅर्डर प्लीज़ ।

श्री मुरलीधर व्यास : आपने जुडिशियल इन्क्वायरी की बात कही....

श्री अध्यक्ष : आॅर्डर प्लीज़ ।

(लगातार घंटी)

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : मैं इतना कहने के लिए तैयार हूँ कि जो कुछ मैंने कहा है वह अगर साबित नहीं करूंगा तो....

श्री हरिदेव जोशी : कैटेगरिकली कहिए ।

(व्यवधान)

श्री रामानन्द अग्रवाल : मुख्य मंत्रीजी भी यही कहें, जो इन्होंने कहा है । वह गलत साबित हो गया तो वह भी राजनीति से सन्यास ले लेंगे । जो कुछ मुख्य मंत्री ने कहा कि मैंने सोना देखा नहीं, केवल लाने की बात कही है, अगर गलत साबित होगी तो वे भी राजनीति से सन्यास लेंगे । माननीय सदस्य की तरह खड़े होकर मुख्य मंत्री कहें ।

(व्यवधान)

श्री हरिदेव जोशी : मैं यह रिपीट कर रहा हूं । अगर वह सोना पी० सी० सी० में आया और मेरे पास में रहा, फिर मुख्य मंत्री के पास गया इसको वह साबित कर दें तो....

(व्यवधान)

Page No.89

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मैं यही निवेदन करना चाहूँगा कि एक गम्भीर आरोप इस प्रकार लगाया जाय और उसकी गंभीरता को समझते हुए मैं इस बात को यहां पर स्वीकार करूं तो उस गंभीरता से उस बात को लिया जाय । मैंने निवेदन किया है कि अगर सोना, जैसा कि यहां पर कहा गया, उस सोने के टुकड़े मुख्यमंत्री के पास हैं....

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : यह नहीं कहा....

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : (अश्रव्य) ।

(व्यवधान)

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : आप जो कुछ बयान देकर अगर सारी इन्क्वायरी के स्कोप को लिमिटेड करना चाहते हैं, जो टर्म्स ऑफ रेफरेंस तय करना चाहते हैं....

श्री हरिदेव जोशी : जो एलीगेशन आपने लगाया है ।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : बिल्कुल, बिल्कुल ।

श्री हरिदेव जोशी : जो एलीगेशन आपने कल या परसों लगाया कि यह सोना जयपुर में आया, पी० सी० सी० में आया, टुकड़े हुए, मेरी कस्टडी में रहा और मुख्य मंत्रीजी....

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : पी.सी.सी. ऑफिस में रहा ।

श्री हरिदेव जोशी : यही तो कहता हूँ । इसकी इन्क्वायरी करवाने के लिए मुख्य मंत्री जी तैयार हैं । आपने कहा कि सारा सोना पी० सी० सी० में आया, मेरा नाम उसके अन्दर जोड़ा और मुख्य मन्त्री ने सोने को ले लिया । जो आपने कहा है उस पर बैकआउट न करें, उसको स्वीकार करलें, हम इन्क्वायरी चीफ जस्टिस से करवाने के लिए तैयार हैं ।

श्री रामानन्द अग्रवाल : लेकिन अगर उसमें आपकी कॉम्पलिसिटी साबित हो गई तो....

(व्यवधान)

श्री भैरोंसिंह : अभी मुख्य मन्त्रीजी ने एक जुडीशियल इन्क्वायरी की बात कही उन्होंने मुख्य मन्त्री की हैसियत से उसको स्वीकार किया है और उन पर आरोप लगाए हैं । मैं समझता हूँ कि आरोपों की गम्भीरता को देखकर, जब मुख्य मन्त्री ने जुडिशियल इन्क्वायरी की बात को स्वीकार किया है, तो लोकतन्त्र में न्याय की दृष्टि से यह कभी भी वाजिब नहीं हो सकता कि कोई इन्क्वायरी शर्त के आधार पर कराई जाय । सरकार का कर्तव्य है कि आज अगर मुख्य मन्त्री की हैसियत से....

श्री हरिदेव जोशी : फिर क्या बात हुई ? आप आरोप लगायें फिर बैकआउट करें ।

श्री रामानन्द अग्रवाल : अब यह कन्डीशन स्वीकार करें कि अगर यह बात साबित हो गई और जिसका कहना गलत निकला वह सन्यास लेगा ।

Page No.90

श्री हरिदेव जोशी : फिर इसके माने यह हो जायेंगे कि आपको ही सदन में कहने का अधिकार है....

(व्यवधान)

श्री मुरलीधर व्यास : सदन में बहुत से मुद्दे उठाए गए....

श्री हरिदेव जोशी : आप सदन में कह रहे हैं कि हम गम्भीरता से लें और आप जो आरोप लगाएं उसको साबित न करें और ऐसी हवा पैदा करें जिससे लोगों में हमारी बदनामी हो। ऐसी हालत में हम इस प्रकार की चीज को मानने के लिए तैयार नहीं हैं। आप पोलिटिकली इस प्रकार की फिजां पैदा करें और उस कैरेक्टर एसेसीनेशन के द्वारा लोगों की निगाह में हमको गिराने की कोशिश करें। इसलिए मुख्यमन्त्रीजी जो चैलेंज देते हैं आपको उसको आप स्वीकार करें, हम भी स्वीकार करने के लिए तैयार हैं।

(व्यवधान)

(कुछ माननीय सदस्यों के खड़े होने पर)

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज। आप स्थान ग्रहण करें।

श्री भैरोंसिंह : मुझे अपनी बात कम्प-लीट करने दें। मैंने जैसा निवेदन किया कि मुख्य मन्त्री ने जब जुडीशियल इन्क्वायरी की बात को स्वीकार कर लिया है आरोपों की गम्भीरता को देखते हुए....

श्री नाथूराम मिर्धा : कन्डीशनल स्वीकार किया है।

श्री भैरोंसिंह : तो कोई भी जुडीशियल इन्क्वायरी किसी शर्त पर नहीं होती, यह मुख्य मन्त्रीजी स्वीकार करेंगे। न्याय किसी के साथ करना है तो शर्त नहीं की जाय। किस बात की जांच कराई जाय और किसकी नहीं कराई जाय, इससे तो उचित यह होगा कि जो आरोप लगाए हैं, श्री ढाबरिया ने, श्री मुरलीधर व्यास ने या बाकी सदस्यों ने, इन आरोपों का सार क्या है, उनको टर्म्स ऑफ रेफरेंस बनाकर जुडीशियल इन्क्वायरी कराई जाय तो मैं समझता हूँ कि सबसे बड़ा न्याय होगा और मुख्य मन्त्रीजी किसी शर्त के आधार पर न्याय कराने की बात करते हैं तो हम नहीं मानते।

श्री हरिदेव जोशी : पिछली बार भी आपने आरोप लगाए थे, जुडीशियल इन्क्वा-यरी कायम हुई उसके अन्दर मुख्य मन्त्रीजी निर्दोष साबित हुए। इसलिए आप कहिए कि आप अपने पोलिटिकल कैरीयर को स्टेक पर लगाने के लिए तैयार हैं, तब तो हम मानते हैं।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : ४२ चार्जेज लगाए हैं।

श्री मुरलीधर व्यास : इन सवालों को सदन के अन्दर हमने रखा और आपने सुना। जहां तक सरकारी पक्ष के जवाब देने का सवाल है, उन्होंने जवाब भी दिया। हम कहना चाहते हैं इस प्रकार का सोना जिसके लिए केन्द्रीय सरकार भी जांच कर रही थी और उसमें से कुछ सोना केन्द्रीय सरकार ले गई और कुछ बचा। उसके बाद न जाने किसकी साजिश से दूसरों के पास जाने लगा। उसके बाद सारी कार्यवाही हुई। इस

(श्री मुरलीधर व्यास)

बारे में लाल बहादुर शास्त्री का नाम भी आया और दूसरी बातें आईं। यह सोना सादड़ी का सोना भारत के अन्दर सबसे बड़ा सोना है....

श्री अध्यक्ष : क्या कह रहे हैं ?

श्री मुरलीधर व्यास : सदन में जो विचार रखे गए, कुछ चार्जेज हमने लगाए, जवाब उन्होंने दिया....

श्री रघुनाथ बिश्नोई : यह पहले भी कह चुके हैं।

श्री मुरलीधर व्यास : इसलिए टर्म्स ऑफ रेफरेन्स बना कर जो सोना है कैसे निकला, कहां गया, सारी चीज की जुडीशियल इन्क्वायरी हो।

श्री रामानन्द अग्रवाल : यह ऐसा मामला है कि मुख्य मन्त्रीजी ने शर्त रखी है...

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य ने शर्त स्वीकार कर ली है, अब दिक्कत क्या है ?

श्री रामानन्द अग्रवाल : मैं मुख्य मन्त्री जी से दुबारा पूछता हूं कि जो शर्त रखी है, वह हमारे सदस्य ने स्वीकार की हैं, ऐसी हालत में क्या मुख्य मन्त्री जुडीशियल इन्क्वायरी बिठाने के लिए तैयार हैं ? दूसरे अगर उनका कहना यह है कि जुडीशियल इन्क्वायरी सशर्त बैठेगी तो उसका मतलब जो आरोप स्टैंड होते हैं तो मुख्य मन्त्री सदन से इस्तीफा दे देंगे ?

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : चीफ जस्टिस के द्वारा जुडीशियल इन्क्वायरी होनी चाहिए। ये तो इन्क्वायरी करायेंगे आर. एन. मधोक से।

(शोरगुल–व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : श्री ढाबरिया! माननीय सदस्य।

(शोरगुल–व्यवधान)

ऑर्डर प्लीज। माननीय ढाबरिया।

यदि आप बहस नहीं चलाना चाहते हैं तो फिर आगे कैसे सदन की कार्यवाही चलाई जाये। आप ठीक ढंग से न बात करते हैं और खामख्वाह उलझाते हैं। बिल्कुल स्पष्ट था। बात हो रही है, कॉन्क्रीट टर्म पर बात हो रही है। कॉन्क्रीट बहस को गलत रास्ते पर ले जाना चाहते हैं। मुख्य मन्त्रीजी ने चीफ जस्टिस से इन्क्वायरी कराने के लिए कहा है........

श्री मुकुटबिहारीलाल गोयल : जगत नारायण जी से करायें।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य। आप स्थान ग्रहण कीजिये। नाम लेने की आवश्यकता नहीं है।

श्री रामानन्द अग्रवाल : माननीय अध्यक्षजी,....

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य। आप स्थान ग्रहण कीजिये। अब माननीय मुख्य मन्त्रीजी को इस सम्बन्ध में जो कुछ कहना है वह कहें।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मुझे यह कहना है कि अगर बनेड़ा से आने वाले माननीय सदस्य जैसा उन्होंने सदन में गोलमाल भाषा में वातावरण बनाया है और वह मुझ पर यह चार्ज लगाते हैं कि यह सोना मेरे पास रहा है, इस सोने के अन्दर से मैंने हिस्सा ले लिया है तो मैं निवेदन कर दूं कि मैं चीफ जस्टिस ऑफ राजस्थान के द्वारा ज्युडिशियल इन्क्वायरी कराने के लिए तैयार हूँ और इस शर्त पर कि वे इस बात को साबित नहीं कर पायेंगे तो वे राजनीति से सन्यास ले लेंगे।

(शोरगुल)

श्री रामकिशन : अध्यक्ष महोदय, मुद्दा यह था....

ढावरियाजी ने यह नहीं कहा कि सोना किसके पास है।

कुछ माननीय सदस्य : बैठ जाओ। बैठ जाओ। आप सुन लीजिये।

(शोरगुल)

मैं जो कह रहा हूं वह सुन लें। आप हाउस की प्रॉसिडिंग्स को पढ़ लीजिये कि तीन तीन किलो सोने की ईंटें थीं। एक एक किलो के टुकड़े कर दिये ४४। बाकी ८८ टुकड़े कहां गये ? उसमें यह शक है कि कांग्रेस के प्रेसीडेन्ट, मुख्य मन्त्रीजी और शिवचरणजी माथुर उसमें शामिल हो सकते हैं।

श्री हरिदेव जोशी : उन्होंने केटगोरिकली कहा है।

श्री रामानन्द अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मन्त्रीजी से निवेदन करना

(व्यवधान)

चाहूंगा आपके जरिये कि क्या वे इस बात को वाजिब नहीं समझते कि इस इन्क्वायरी के जरिये केवल यह मामला साफ न हो कि माननीय मुख्य मन्त्रीजी ने वह सोना लिया है या नहीं बल्कि इस बात की सफाई हो....

(शोरगुल व्यवधान)

श्री हरिदेव जोशी : माननीय सदस्य गलत रख रहे हैं।

(शोरगुल–अश्रव्य–घण्टी)

श्री रामानन्द अग्रवाल : मुख्य मन्त्री को कोई ऐसी बात नहीं थी। यह क्लियर वर्डिक्ट होना चाहिए और इसमें मुख्य मंत्रीजी को कोई एतराज नहीं होना चाहिए। अगर वर्डिक्ट यह हो गया कि वह सोना मुख्य

(शोरगुल)

मन्त्रीजी के पास नहीं है लेकिन उनकी नॉलेज में शिवचरण माथुर के पास है....

(शोरगुल-अश्रव्य)

श्री हरिदेव जोशी : साईडट्रैक कर रहे हैं।

(शोरगुल–अश्रव्य)

श्री रामानन्द अग्रवाल : और वह इन्क्वायरी काबिल है।

(शोरगुल)

श्री अध्यक्ष : श्री ढाबरिया।

श्री हरिदेव जोशी : माननीय मुख्य मन्त्रीजी ने स्पष्ट रूप से कह दिया है।

(शोरगुल)

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : मुझे समझ में नहीं आता कि यह सारी बातचीत क्यों हो रही है ? मैंने पहले भी खड़े होकर कह दिया कि जो चार्जेज़ मैंने लगाये हैं उनको मैं ज्युडिशियल इन्क्वायरी के सामने साबित कराने के लिए तैयार हूँ और साबित नहीं करता हूँ तो इस सदन से और राजनीति से सन्यास लेने के लिए तैयार हूं।

श्री हरिदेव जोशी : We are prepared.

(शोरगुल)

श्री अध्यक्ष : सीधी बात है इसमें। आप आपस में बातचीत न करें।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : आप घोषणा करवाइये मुख्य मन्त्रीजी से।

श्री अध्यक्ष : मुख्य मन्त्रीजी ने जो बात कही है और जो घोषणा की है उसको स्वीकार करते हैं क्या ? वे क्या कहें और आप क्या कहें इससे काम नहीं चलता। मुख्य मन्त्रीजी यह कहते हैं कि उनके पास सोना पहुंचा या नहीं यह आप साबित करायें....

(माननीय सदस्यों द्वारा आपस में बातचीत)

माननीय सदस्य आपस में बातचीत करते हैं तो यह उचित नहीं है और न हो किसी समस्या का निराकरण होगा।

उसके साथ साथ हरिदेवजी ने यह कहा कि जैसा कि माननीय सदस्य ने पी० सी० सी० में सोना आना बताया और वहां टुकड़े होना और पी० सी० सी० प्रेसीडेन्ट के पास पहुंचना और मुख्य मन्त्रीजी के पास पहुँचना बताया, उन तथ्यों के बारे में अगर जैसा मुख्य मन्त्रीजी ने कहा कि वे जांच कराने के लिए तैयार हैं, अब आपको स्वीकार हो उनकी बात तो मुख्य मन्त्रीजी स्वीकार करेंगे।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : वह साफ तौर से कहें।

श्री अध्यक्ष : फिर भी मैंने कहा वैसा....

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सोने के मामले में जो मैंने कहा उन सब बातों को ज्युडिशियल इन्क्वायरी के सामने साबित कराने के लिए तैयार हूँ। वे क्यों नहीं तैयार हैं ? जो मैंने कहा उसमें एक बहुत बड़ा चार्ज है जिसको यह छिपाना चाहते हैं कि चोरी के सोने से ये लालबहादुरजी को तोलना चाहते थे।

उसको क्यों निकलवाना चाहते हैं ? जो चार्जेज़ मैंने लगाये हैं वे सब साबित कराने के लिए तैयार हूँ।

श्री अध्यक्ष : स्थिति यह है कि केस चल रहा है और मामला सबजुडिस है। जहां तक मुख्य मन्त्री और मन्त्री महोदय का सवाल है वे उनके आचरण की जांच करवाना चाहते हैं, वह आपको स्वीकार नहीं है।

श्री रामानन्द अग्रवाल : उनके स्टेटमेंट पर मुख्य मन्त्री ने यह कहा कि मैंने सोना नहीं देखा। मैंने उसके बारे में सुना नहीं।

श्री अध्यक्ष : यह सब हो गया।

श्री रामानन्द अग्रवाल : यह सब उसमें आवेगा। मुख्य मंत्री की कॉम्पलीसिटी हुई हैं, उनके देखने में आया है, उनकी जानकारी में इधर-उधर हुआ है तो वे भी उतने ही दोषी हैं....

(शोरगुल)

श्री भैरोंसिह : अध्यक्ष महोदय, यह मामला मुख्य मंत्रीजी और ढाबरियाजी के बीच का नहीं है। यह सदन का मामला है। यह शर्त रख कर अवॉइड नहीं कर सकते।

श्री अध्यक्ष : शर्त कहां रखी है।

श्री भैरोंसिह : शर्त रखी है कि ढाबरियाजी त्याग पत्र दें तो।

श्री अध्यक्ष : वह खत्म हो गयी।

श्री भैरोंसिह : यह राजस्थान की जनता का ही नहीं यह हिन्दुस्तान की जनता का प्रश्न है और सुखाड़ियाजी इस प्रकार शर्त लगाकर उसको खत्म नहीं कर सकते। जब इस प्रकार के चार्जेज उनके ऊपर लगाये जाते है तो स्वयं बिना कोई शर्त लगाये उनको इसकी ज्युडिशियल इन्क्वायरी कराना चाहिये कि मुख्य मन्त्री जी के पास सोना आया या नहीं, और आप आज इस मामले को उलझा कर चलेंगे तो उचित नहीं होगा मुख्य मन्त्रीजी आपके स्वयं के लिये भी और राजस्थान के लिये भी यह उचित है कि जिस बात की गम्भीरता को सदन के अन्दर स्वीकार किया गया है उसकी ज्यूडिशियल इन्क्वायरी करायें, उस जांच को आप शर्तों में न डालें। यह आपके और ढाबरिया के बीच का मसला नहीं है। यह सदन और राजस्थान का ही मसला नहीं है यह सारे हिन्दुस्तान का मसला है।

श्री नाथूराम मिर्धा : जैसा आप कहते हैं वैसा मानें तो मुख्य मन्त्रीजी को कोई जांच नहीं करानी है।

(शोरगुल–घण्टी)

मामले को उलझाना चाहते हैं। सच्चाई की कोई बात नहीं है।

(शोरगुल)

ऐसे रद्दी आदमी के कहने से नहीं कर सकते।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : आपको पंच किसने बनाया बीच में ही।

(शोरगुल, व्यवधान, अश्रव्य)

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : विवाद इस लिए उठा है कि टर्म ऑफ रेफेरेन्स को

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल)

लिमिट करने की कोशिश की गई है। वह गलत है।

श्री अध्यक्ष : यह बहस समाप्त हो चुकी।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह (आसपुर) : बनेड़ा से आने वाले मानवीय सदस्य ने सोने के सम्बन्ध में मुख्य मन्त्रीजी के ऊपर कुछ आरोप लगाये....

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : On a point of Order Sir. ये नाथूरामजी मिर्धा हैं, मुझे होंठ दबाकर कहते हैं 'बेटेजी देख लेंगे।'

(शोरगुल, व्यवधान, अश्रव्य)

श्री नाथूराम मिर्धा : यह झूठ है।

(शोरगुल, व्यवधान, अश्रव्य)

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य विरोधी पक्ष के नेता की सुनें।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं विनम्र निवेदन करता हूँ कि मेरे भी दो शब्द शांति से सुनें।

इस मामले को हमें उलझन में नहीं डालना चाहिये और उलझते वातावरण के अन्दर इसे डालना, मेरे ख्याल में और भी पेचीदा समस्या बनाना होगा और दुर्भाग्यवश यह समस्या और उलझ जावेगी। मुख्य मन्त्रीजी ने जो कुछ कहा है, उसे हमें ध्यान से सुनना चाहिए। अगर मुख्यमन्त्रीजी ने कहा है उस पर माननीय सदस्य जो बनेड़ा से आये हुए हैं वे कहें कि इस सम्बन्ध में जुडिशियल जांच हो कि आया मुख्य मन्त्रीजी ने सोना लिया या नहीं या उनकी जानकारी में यह सब था या नहीं। मेरे ख्याल में किसी भी हालत में वर्तमान स्थिति के अन्दर यह तथ्य कभी भी साबित नहीं हो सकता कि मुख्य मन्त्रीजी द्वारा सोने की खयानत की गई हो।

विरोधी पक्ष की तरफ से तो एक सीधी सादी मांग होनी चाहिए और वह मांग यह होनी चाहिये कि सोना एक्साइज़ विभाग के द्वारा सादड़ी में पकड़ा गया और पकड़ा गया यह तथ्य सारे राजस्थान भर के लोगों को विदित है। मुझे तो आश्चर्य है कि ऐसी मोटी बात के सम्बन्ध में मुख्य मन्त्रीजी को कोई जानकारी प्राप्त नहीं हो यह कयास और समझ के बाहर की बात है। अगर वह सोना जयपुर आया, जयपुर आने के पश्चात कहां गया, क्या हुआ, इस सम्बन्ध में हमको पूरी जानकारी प्राप्त करने का अधिकार है।

मैं समझता हूँ कि रक्षा कोष का सोना जो सरकार के पास जिस कमरे में सुरक्षित रूप से रखा गया हो और वह भी पिलफरिंग हो जाय और गबन हो जाय, गबन में चला जाय तो विरोधी पक्ष की तरफ से यह मांग होना सर्वथा स्वाभाविक है कि यह सोना तो और भी आसानी से गबन किया जा सकता है, इसका पिलफरिंग होना तो और भी आसान है, तो ऐसी सूरत मेंइ स सरकार पर कोई भरोसा नहीं किया जा सकता। इसकी जुडिशियल इन्क्वायरी होनी ही चाहिए कि वह सोना कहां गया।

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

और यह सस्ते सौदे की बात कि वे इस्तीफा दे दें राजनीति से, इस तरह की गली - कूचों की बात में मैं विश्वास नहीं करता। राजनीति हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। हम क्यों राजनीति को छोड़ें ? मैं माननीय सदस्य, जो बनेड़ा से आये हुए हैं उनको कहूंगा कि उन्हें कभी यह नहीं कहना चाहिए और न मैं उनको इसकी राय दूंगा कि वे राजनीति छोड़ दें। आप क्यों छोड़ें राजनीति ?

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : जांच में इनको तो साबित करा के छोड़ूंगा।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : अमानत में खयानत जो करते हैं, सोना इधर से उधर करते हैं, रक्षाकोष के सोने पर भी हाथ साफ करने से नहीं झिझकते तो फिर यह उत्तरदायित्व सरकार का है कि वह इसका उत्तर दे। मुख्य मन्त्रीजी स्वयं की प्रतिष्ठा के लिए भी यही उचित होगा कि वे इसकी तुरन्त जुडिशियल जांच करावें कि यह सोना कहां गया, कितना आया, कहां से आया, कहां पर वह आज है और कहां गया आया। बस इस के अलावा हमें यह नहीं कहना है कि मुख्य मन्त्रीजी सोने के टुकड़ों के वास्ते तड़प रहे हैं और थोड़े बहुत टुकड़े दबा लिए यह तथ्य कभी साबित नहीं हो सकता। इसलिए हमारी सर्व सम्मत मांग यह होनी चाहिए कि शीघ्रता से सोना जो बरामद हुआ उसके बारे में जुडिशियल जांच कराई जावे कि वह कहां से कितना कितना आया, कहां है और कितना है, कितना गया और वह गया तो कहां गया, कैसे गया। अब मुख्य मन्त्रीजी को अपनी प्रतिष्ठा प्यारी है तो वे जांच करावेंगे। नहीं प्यारी है तो नहीं करावेंगे। पर मैं माननीय सदस्य बनेड़ा से आने वालों को निवेदन करूंगा कि आप कभी भी राजनीति से ऐसे सस्ते तरीके के सौदों पर, गली-कूचों की बातों पर इस्तीफा मत दीजिए।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : जहां तक सोने का सवाल है, सैन्ट्रल एक्साइज़ विभाग इसकी नैसेसरी एन्क्वायरी कर रहा है। एक्शन ले रहा है और मुझ पर किये हैं स्ट्रे आरोप, हरिदेवजी पर लगाए गए हैं और हमें इसमें इन्वोल्व किया गया कि जैसे सोने को हमने रख लिया, वे सब दुर्भाग्यवश लगाए गए हैं।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : पर आपको भी इस तरह से उत्तेजित नहीं होना चाहिए आपकी प्रतिष्ठा के लिए यह शोभनीय नहीं है। और कहना कि राजनीति से इस्तीफा दे दें यह भी अशोभनीय है आपके लिए।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : हमारे लिए जो बात कही गई कि हमने सोना रख लिया पी० सी० सी० में गया। मेरे यहां पर आया। इसके लिए जैसा अध्यक्ष महोदय ने कहा और शर्त इसलिए लगाई कि आज वाइल्ड एलीगेशन चाहे जैसे लगाने का एक सिलसिला बन गया है तो इसलिये जो इस तरह के एलीगेशन लगावें उन लगाने वालों की भी अगर गलती साबित हो तो इसका कुछ न कुछ परिणाम तो भुगतने के लिए तैयार होना चाहिये। इसलिये यह बात मैंने कही है। वरना तो इस सदन में हरेक सदस्य को प्रिविलेज है कि वह चाहे सो बात कहें।

Page No.97

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

पर इस तरह से तो उनके कहने में कोई वजह नहीं रहेगा। इसलिये शर्त वाली बात कही है। वरना तो सोने के बारे में एक्सा-इज विभाग भारत सरकार का, इन्क्वायरी कर रहा है पुलिस विभाग एक्शन ले रहा है यह सारी कार्यवाही हो रही है।

श्री रामकिशन : इससे हमारा क्या लेनादेनाहै ?

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, Where do we stand now ?

श्री अध्यक्ष : मुख्य मन्त्रीजी ने जो बात कही उस पर वे अभी भी काबिज हैं अगर सदस्य चाहें तो।

श्री रामकिशन : अध्यक्ष महोदय,....

श्री अध्यक्ष : मैं समझता हूं कि इस पर बहुत बहस हो चुकी है।

श्री हरिराम चौहान (तिजारा) : अध्यक्ष महोदय, जब माननीय मुख्य मन्त्री ने....

श्री अध्यक्ष : इस पर बहुत बहस हो चुकी।

श्री हरिराम चौहान : सवाल इस बात का नहीं है। हाउस में जो जिम्मेदार आदमी हैं उनका इस तरह से कहना कि अब झगड़ा महज इस बात का है कि चुनौती पर इन्क्वायरी हो। मैं कहता हूं कि जब प्रारम्भिक आरोप लग चुके तो उनका फर्ज हो जाता है कि उनकी जांच वे करावें।

श्री अध्यक्ष : अब अविश्वास के प्रस्ताव पर बहस होगी।

श्री हरिराम चौहान : अपने आपको तैयार रहना चाहिए जांच के लिए पर अगर अब उससे पीछे हटते है तो राजस्थान की जनता के अन्दर....

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, अविश्वास के प्रस्ताव पर जो बहस चल रही थी, उस पर ही आप बोलें।

श्री रामानन्द अग्रवाल : हम यह जानना चाहते हैं कि मुख्य मन्त्रीजी कह रहे हैं कि कोई कन्डीशन ऑफ रेफरेन्स हम नहीं चाहते और जिस तरह से हम चाहते हैं वे नहीं चाहते। पर जो चार्जेज़ लगाये हैं वे काफी गम्भीर है उनकी गम्भीरता को समझते हुए क्या माननीय मुख्य मन्त्रीजी उनकी जुडीशियल इन्क्वायरी कराने को तैयार हैं या नहीं ?

श्री रामकिशन : इसमें कराने में क्या दोष है ?

श्री रामानन्द अग्रवाल : वे चार्जेज़ आप गम्भीर मानते हैं या नहीं, अगर गम्भीर मानते हैं तो जांच करवाने में आपको क्या कठिनाई है ? आप अगर यह समझते हैं कि आप पर कोई आँच नहीं आने वाली है तो अच्छा ही है कि आप जांच करवा लें।

श्री अध्यक्ष : विरोधी पक्ष के नेता, बहस में जो मुद्दे रक्खे हैं, उनका उत्तर देंगे।

श्री मानिकचंद सुराणा : बाकी के और भी मुद्दे हैं अध्यक्ष महोदय, उनमें से एक पर भी प्रकाश नहीं डाला।

श्री अध्यक्ष : जो ठीक समझा कह दिया उन्होंने।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह (आसपुर) : अध्यक्ष महोदय, अविश्वास प्रस्ताव के संबंध में जो बहस हो रही है वह अब खत्म होने को जा रही है । मुख्य मंत्रीजी ने बहुत सारी बाते कहीं और मैं यह मानता हूं कि उनकी कई एक बातें तथ्यहीन नहीं हैं । एक हद तक राजस्थान आगे बढ़ा है–यह निर्विवादित बात है । लेकिन उसके साथ साथ यह मैं कहे बिना नहीं रह सकता कि भूमि सुधार के संबंध में भी जो कानून हैं उन कानूनों का भी इम्प्लीमेन्टेशन नहीं होता, जो कानून बनाये हैं वह भी मेरे ख्याल से ठीक रूप से कार्यान्वित नहीं होते । यह मेरा ही अनुभव नहीं है बल्कि कांग्रेस के मंत्री जो मेरे सामने बैठे हुए हैं वह अपने दिलों के ऊपर हाथ रखकर और गंभीरता पूर्वक विचार करें कि यह निर्विवादित सत्य है कि वह भी अनुभव करते हैं कि जो कानून पारित हुए हैं उन्हें कार्यान्वित राजस्थान की सरकार करने में असमर्थ रही है । ऐसी हालत में जनता और सदन के इस ओर बैठने वाले माननीय सदस्यों के अन्दर कैसे विश्वास रखें ?....

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, शांति से सुनें ।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : हमारी सरकार सीलिंग कानून भी कार्य रूप में परिणत करने में असफल रही है और टीनेन्सी लॉज़ के संबध में जो कोडीफाइड कानून यहां लाने के विषय में अभी ही विचार किया जा रहा था उस पर भी मैं समझता हूं कि मंत्री–मण्डल में मतभेद हैं; मतमतान्तर होना स्वाभाविक है, जनतंत्र का यह एक स्वस्थ परम्परा है, लेकिन ऐसा होकर के भूमि संबधी जो भी सुधार के कानून आप लाना चाहते हैं उसके अन्दर सिद्धान्तः आप एक मत होकर नहीं चल पा रहे हैं और इसके फलस्वरूप मेरे ख्याल में जनता के अन्दर अस्थिरता की भावना पैदा हो रहीं है । आप आये दिन नये कानून पारित करते हैं और उनको कार्यान्वित नहीं कर पाते । ऐसी स्थिति में मैं यह समझता हूं कि यह सरकार की नीति और सरकार की यह लेजिस्लेटिव पॉलिसी है यह खामियों से भरपूर है । मुख्य मंत्री जी ने कहा कि डिफेन्स पर खर्चा बहुत बढ़ गया । मैं मानता हूं कि डिफेन्स पर खर्चा बढ़ा और डिफेन्स खर्चे के कारण हमारी सुरक्षा नीति को सुदृढ़ बनाने के लिए हमारी योजनाओं के बहुत सारे कार्य स्थगित करने पड़े । मैं समझता हूं कि यह सरकार जो अविभाज्य अंग है भारत का उसकी दूषित नीति के कारण हमारी जो यह सुरक्षा व्यवस्था है इसके अन्दर फर्क आया और मैं समझता हूं यह सरकार ही इसके लिए उत्तरदायी है । जो अनादि–काल से तिब्बत हमारी ढाल थी नहीं तिब्बत को हमारे हिन्दी–चीनी भाई भाई के नारे से खो दिया और मैं इसके अन्दर लम्बी बहस नहीं करना चाहता लेकिन मेरा और मेरी पार्टी का यह अभिमत है कि अगर तिब्बत के सम्बन्ध में हम कुछ न कुछ रूप से संयुक्त राष्ट्र संघ के अन्दर ठोस सुझाव रखते तो क्या आश्चर्य है कि वियतनाम का विभाजन हुआ, कोरिया का विभाजन हुआ. जर्मनी का विभाजन हुआ, भारत का विभाजन हुआ, भारत के अन्दर कश्मीर का विभाजन हुआ यह विभाजन का जो पैटर्न विश्व युद्ध के पश्चात उत्पन्न हुआ' वह तिब्बत के ऊपर लागू अगर किया जाता तो शायद उत्तरी तिब्बत आज भी सुरक्षित होकर वहां दलाई लामा

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

का राज्य होना। ऐसी हालत में मैं समझता हूँ कि यह सरकार की दूषित नीति है जिसके फलस्वरूप हमको रक्षा के सम्बन्ध में डिफेन्स बजट को डबल और ट्रिपल करना पड़ रहा है।

सोने के सम्बन्ध में बहुत सारी बातें यहां हुईं। मैं विशेष सदन का समय नहीं लेना चाहूँगा किन्तु मैं इतना अवश्य कहूँगा कि यह एक बड़ी भद्दी, एन्टी-सोशियल और अस्वस्थ परम्परा है कि कोई भी गणमान्य कांग्रेस के नेता महानुभाव हों, चाहे जितने भी बड़े वह क्यों न हों, अगर उनका समाजवाद का नारा लगता है दूसरी तरफ आप यह कहते हैं कि इनको स्वर्ण में तोला जाये–मैं समझता हूँ कि यह तो भूतपूर्व राजा हमारे जैसे होते थे उनके लिए तो शोभनीय है लेकिन आपके लिए तो यह महान घृणित काम है कि आपके महानुभाव को सोने से तोला जाय। श्री लालबहादुर शास्त्री जैसे महान् आदमी, उनके लिए यह प्रस्ताव रखें और विचार करें और ऐसा वातावरण उत्पन्न करें कि यह चोरी और तस्करी के सोने से उनको तोला जाये। तो यह मेरे ख्याल से सरकार की नीति पर एक लांछन सा है।

बनेड़ा से आये हुए माननीय सदस्य के लिए यह कहा गया कि वह भीलवाड़ा से चुनाव के सम्बन्ध में महारानी गायत्री देवी से मिले तो यह कोई कसूर तो नहीं है। आप व्यंग से कुछ भी कह जायें लेकिन मैं यह समझता हूं कि आपकी भी अवसरवादिता की पराकाष्ठा है। यह मुख्य मंत्री और मंत्रीमण्डल अच्छी तरह से जानते हैं कि इस कांग्रेस, जो महात्मा गांधी की पवित्र संस्था थी, आज कितनी अपवित्र अवसरवादी यह संस्था हो गयी। इसमें हिन्दू महासभा के सदस्य भी बैठे हैं, इसमें केरल के मुस्लिम लीगियों से भी सांठगांठ होती है और अगर यह कहा जाये कि विरोधी पक्षों में सांठगांठ किसी तरह से हो गयी तो सबसे–पहले तो हम यह समझते हैं कि आपके जैसा अवसरवादी दल, सिद्धान्तविहीन दल, भ्रष्टाचारी दल को जितनी जल्दी हम समाप्त करें उतनी जल्दी मेरे ख्याल में नया दौर उत्पन्न होगा और तब हम समारी समस्याओं को हल कर सकेंगे। यह आपके कुशासन के द्वारा धीरे-धीरे विपक्षी दल अनुभव करता जा रहा है कि संगठित होकर और सामुहिक रूप से हम अगर कांग्रेस का मुकाबला करेंगे तभी तो हम सफल हो सकते हैं वर्ना नहीं। "Where these is will there is way"। अगर हम यह निर्णय कर लें कि हमको इस भ्रष्ट शासन को हटाकर कुछ न कुछ ऐसी कामन नीति बनानी है कि जिसके द्वारा हम शासन की बागडोर हाथ में लें तो वह कोई बुरी चीज नहीं है। मेरे ख्याल में यह हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम ऐसा पवित्र काम करने को जा रहे हैं कि जिसके द्वारा जनतंत्र सफल रूप से इस देश के अन्दर जमे और उसकी जड़े गहरी उतरें।

माननीय मुख्य मंत्रीजी ने और माननीय गृह मंत्रीजी ने यही भावना व्यक्त की कि कांग्रेस के अलावा यहां पर कोई भी जनतंत्र के द्वारा शासन संचालन नहीं कर सकता। एक हद तक कांग्रेस को यह मैं

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

क्रेडिट देना चाहूंगा, श्रेय देना चाहूंगा कि जनतन्त्र की प्रणाली स्थापित उन्होंने की और महात्मा गांधी और जवाहरलालजी नेहरू जैसे महान व्यक्तियों की प्रेरणा के द्वारा इस जनतंत्र को सफल उन्होंने किया है। लेकिन वह यह कहें और खासकर मुख्य मंत्रीजी कि सन् ५२ में भी हम हरडल पार कर गये, ५७ और ६२ में भी कर गए तो मैं, अध्यक्ष महोदय, इस सरकार से यही निवेदन करूंगा कि सब समय सब दिन समान नहीं होते। नेपोलियन को भी मेरे ख्याल में हार माननी पड़ी और "Every day is not Sunday" के नाते हम यह नहीं कहते कि हम कांग्रेस को हरा सकते हैं लेकिन हम निरन्तर यह प्रयास करेंगे कि कांग्रेस हारे और कांग्रेस के हारने से कांग्रेस का आचरण शुद्ध हो और जनतंत्र की पवित्र प्रणाली इस देश के अन्दर स्थापित हो।

अध्यक्ष महोदय, बहस के अन्दर आरोप और प्रत्यारोप लगाना यह तो एक स्वाभाविक चीज है। इसके अन्दर मैं विशेष नहीं जाना चाहूँगा लेकिन कुछ बातें व्यक्तिगत रूप से मेरे संबंध में कही गयीं तो मेरे ख्याल से मैं दो शब्द व्यक्तिगत रूप से कहूँगा। क्योंकि आरोप लगाये जाते हैं तो स्पष्टीकरण के रूप में आपको निवेदन करूं। सन् ६२ में भी आरोप लगाये गये। सन् ६३ में भी लगाए गए और ६६ में भी लगाए गए। आपको आरोप लगाने का अधिकार है। एक हद तक वह आरोप तथ्यहीन भी नहीं हैं लेकिन मैं निवेदन करूंगा कि आप पुरानी बातों को दोहराते हैं तो मेरे पास उनको दोहराये बिना क्या गुंजाइश है ? "No scope"। आपने यह कहा कि राजा और महाराजाओं का राज्य खराब था। अब वह राजा और महाराजाओं का राज्य खराब था या अच्छा था वह चैप्टर तो बन्द हो गया और एक हजार वर्ष तक या उससे भी अधिक वह चैप्टर रहा और उसके अन्दर शायद खराब भी दो चार पेज होंगे, पन्ने होंगे और उज्जवल भी इतिहास राजाओं और महाराजाओं का है यह निर्विवादित बात है।

(२.०० म. प.)

खैर, उस बात को मैं छोड़ना चाहता हूं। यहां पर अगर यह कहा जाय कि डूंगरपुर या प्रतापगढ़ का मुकाबला आज राजस्थान की तुलना में किया जाय तो मेरे ख्याल में यह तो हास्यास्पद स्थिति है, वास्तविकता से परे है और आपको भी मेरे ख्याल में शर्म आनी चाहिए। डूंगरपुर में क्या व्यवस्था थी और आज राजस्थान में क्या व्यवस्था है, भरतपुर में क्या व्यवस्था थी और आज राजस्थान में क्या व्यवस्था है–इस प्रकार की तुलना करते हैं तो यह तो बड़े ताज्जुब की बात है। यह तो इस तरह की तत्वहीन बात है, पुरानी बातों को ले कर के कि अकबर के राज्य में माननीय निरंजन नाथजी आचार्य शायद शिक्षा मंत्री होते तो बहुत उन्नति होती या प्रस्तावित लोकमान्य तिलक यूनिवर्सिटी डबोक में होती तो बहुत ज्यादा शिक्षा सुदृढ़ होती या झांसी की रानी के पास पचास हाथी के बजाय पांच टैंक होते तो ब्रिटिश सरकार हार जाती, इस तरह की बातें करने से कोई विशेष मदद नहीं मिल सकती, लेकिन क्योंकि

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

आपने मुझे इस सम्बन्ध में मेरी बातें कही है, मैं भी आपको चन्द बातें कहना चाहता हूँ कि राजाओं के राज्य में इतनी महंगाई नहीं थी, राजाओं के राज्य में इतनी रिश्वतखोरी नहीं थी और राजाओं के राज्य में अनाज सस्ता था और पर्याप्त रूप से मिलता था। इतना भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी....

श्री रामकिशन : यह तो ठीक कह रहे हैं साहब, राजाओं के राज्य में रिश्वतखोरी तो इतनी नहीं थी।

श्री विजयपाल कटारा : आज तो भूख से मर रहे हैं लोग।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : यह भी जनता की आम भावना है कि आपके जमाने में हिन्दुस्तान में अनाज का अभाव है, भुखमरी है और लोगों को खाने को अच्छी तरह से नहीं मिलता है। आपके लिए शोभनीय तो यह होता कि हिन्दुस्तान राष्ट्र की तुलना आप रशिया से करते, अपनी तुलना जापान से करें, आप फार्मोसा और इजराइल से करें, तब तो मैं समझता कि कोई तुलना भी हुई और छोटे मोटे डूंगरपुर और प्रतापगढ़ से इस बड़े राजस्थान की तुलना करना मेरे ख्याल में यह तो कोई शोभनीय बात नहीं है, एक तरह से बिल्कुल चाईल्डिशनेस है।

श्री रामकिशन : डूंगरपुर का नाम तो लेते हैं लेकिन झालावाड़ का नाम कभी नहीं लेते।

श्री मानिकचन्द सुराणा : २१ तोपों की सलामी वाले किधर हैं यह भी तो बता दीजिए।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : मैं उनके बारे में सीधी बात नहीं करता, झालावाड़ नरेश की बातें नहीं करता और भी बहुत से भूतपूर्व नरेश ऐसे हैं जो कांग्रेस में हैं, वे तो प्रगतिशील हो गए आपके अनुसार और भी बहुत से सरमायेदार करोड़पति ऐसे हैं जो कांग्रेस के अन्दर हैं और इन भूतपूर्व शासकों और उनकी बहिनों, उनकी बख्शीशों से, उनके पैसे के आधार पर यह हमारे ऊपर जालिमाना हुकूमत थोप कर यह राज्य कायम हुआ है। इस तरह से दो नरेशों में भिन्न २ तुलना करने की जो आपकी यार्ड स्टिक है और उनके बारे में आप जिस तरह डिस्क्रिमिनेशन कर के व्यवहारिक रूप में अपनी मान्यतायें निश्चित करते हैं तो मेरे ख्याल में इससे बढ़ कर और क्या हास्यास्पद स्थिति या घृणित स्थिति या रद्दी-सड़ी-गली नीति मैं यह कहूँ कि इसे जो कुछ भी आप कहें इस सम्बन्ध में आप विचार कर सकते हैं कि क्या हो सकती है ? आज हमारे उत्पादन की क्या स्थिति है ? आज जापान को देखिये, जापान की बिल्डिंग्स सारे विश्व के अन्दर सर्वप्रथम हैं। आज जापान का इस्पात दूसरे नम्बर का है सारे विश्व में। हमारे माननीय खाद्य मंत्री नाथूराम मिर्धा लम्बी-चौड़ी बातें कहते हैं लेकिन आज भी आप बताइये कि आधुनिक स्थिति से माडर्न रूप से आपने खेती के लिए क्या किया है ? हमारे वहां तो वही टूटे-फूटे हल हैं। मैंने यह आपको पहले भी कहा था खाद्यान्नों के सम्बन्ध में....

श्री नाथूराम मिर्धा : महारावल साहब अभी तो करना बहुत है, मरण में पाव पिसा है

Page No.102

(श्री नाथूराम मिर्धा)

है अभी तक तो। मैं आपको पहले भी कह चुका हूं कि अभी तो बहुत कुछ करना बाकी है।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : लेकिन एक एकड़ के अन्दर कितना उत्पादन फार्मोसा में होता है, कितना उत्पादन इजराइल में होता है और कितना उत्पादन हमारे यहां पर हो रहा है ? इस बारे में आप स्वयं विचार कर सकते हैं।

यह भी कहा गया कि भीलों से दुर्व्यवहार किया, आदिवासियों को भी मारा, तो मैंने मारा तो इसका मुझे दुख है। २० वर्ष के शासन में दो आदमियों को मार भी दिया गया तो मुझे उसका दुख है, लेकिन कांग्रेस के शासन ने १७–१८ वर्षों के शासन में डूंगरपुर में १३ हत्यायें की हैं और अण्डर ट्रायल प्रिजनर को जेल के अन्दर भून दिया है। और इसके अतिरिक्त सन् १९५७ के अन्दर कांग्रेस के जिलाध्यक्ष की जीप से, कांग्रेस के जिलाध्यक्ष की बन्दूक के द्वारा उनके कार्यकर्त्ता द्वारा हमारे वर्कर को पांच फिट के पास से गोली से मार दिया। सारे हिन्दुस्तान में कभी भी ऐसा नहीं हुआ कि सारे दिन पोलिंग होती रहा और उस पोलिंग के दिन एक वोट भी नहीं पड़ा और जो वोट पड़ते थे सबके सब वोट मिल जाते। जब यह मामला सेशन्स की कोर्ट में गया तो उस व्यक्ति को फांसी की सजा दी गई और उसके पश्चात् जब वह हाई कोर्ट में मामला गया तो उस व्यक्ति को जन्म कैद की सजा दी गई। तो मेरे ख्याल में मेरे शासन में दो व्यक्ति मारे गये तो आपका भी यह नमूना है, यह मेरे ख्याल में कोई क्रैडिटेबल नहीं है। यह आज जो ज्वाला धधक रही है। सारे देश में असंतोष की बाढ़ आई हुई है, अब उसकी तुलना बेचारे छोटे मोटे राजाओं से करना बेकार है। अगर आप विश्व की समस्याओं से और एशिया की समस्याओं से इसका मुकाबला करें तो जिस तरह से लाठी-चार्ज, टीयर गैस, गोली-बारी, क्या क्या आप नहीं कर रहे हैं ? मैं इस समय इस सम्बन्ध में लम्बी चौड़ी बहस नहीं करना चाहता। मैं केवल इतना ही कहूंगा कि आज का न्याय भी महंगा है, शिक्षा भी महंगी है और अन्न महंगा है, रहन-सहन सब कुछ इतना महंगा हो गया है कि मध्यम श्रेणी का वर्ग इसमें पिसता हुआ जा रहा है। गरीबों की दुर्दशा हो रही है। इस स्थिति के अन्दर अगर आप सरकारी कर्मचारियों के लिए महंगाई के अलाउंस में वृद्धि करते हैं तो यह आपका अधिकार है करने का, लेकिन वह भी आपके बजट को संतुलन नहीं कर पाए हैं। जो कुछ भी महगाई अलाउंस देते हैं वह भी महंगाई में हजम हो जाता है। यह तो सरकार की नीति है सांभर पड्या सो हैं लूण, तो इस तरह से आगे नहीं बढ़ सकते, आपकी प्रोग्रेस मेरे ख्याल से नहीं हो सकेगी।

आदिवासियों के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि पुराने डूंगरपुर के शासन में लोगों से बड़ा दुर्व्यवहार किया जाता था तो आज की आप की जो व्यवस्था है और जिसमें ये आपके सेवा संघ हैं वहां क्या हो रहा है ? ये आपके सारे सेवा संघ बेईमानी और भ्रष्टाचार के अड्डे हैं, ये व्यभिचार के आश्रम हैं। वहां के अध्यापकों को तनख्वाहें

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

नहीं मिलती; उनको जो कुछ भी अन्न, कपड़ा आदि वितरण के लिए मिलता है वह भी बहुत कुछ इधर उधर हो जाता है। और जो आपके आदिवासी ग्रेज्यूएट हुए हैं उनको आप कितने ऊंचे स्थान दे पाए हैं ? आज जितने भी ग्रेज्यूएट हैं मेरे ख्याल में वे आपसे असंतुष्ट हैं, आपके विरोधी हैं और आपको नहीं चाहते। मैं समझता हूँ कि अगर आदिवासियों की संस्था है और समाज-कल्याण विभाग से लाखों रुपया देते हैं तो आदिवासियों की संस्था किसी आदिवासी के द्वारा ही क्यों नहीं संचालित कराते, इसमें क्या दिक्कत है। हमारा विश्वास आपकी नीति में नहीं है। आप दूसरों को मोनोपोलिस्ट की तरह से रख कर उनके द्वारा इन आदिवासी छात्रावासों का शासन कराते हैं यह मेरे ख्याल में दूषित नीति है। यदि आदिवासियों का उत्थान करना चाहते हैं तो आदिवासियों को स्वावलम्बी बनाने के लिए, उनको शासन संचालन करने के मौका दीजिये और मैं आपकी सरकार को चुनौती देकर यह जानना चाहूंगा कि श्री भीखाभाई जो राजाओं के जमाने का पौधा हैं, राजाओं के जमाने में पनपे हैं, इनके अलावा एक भी आदमी आगे बढ़ाकर आप लाये हों तो बतावें...

श्री रामकिशन : कितने बनाये हैं बताओ तो सही भीखाभाई...

(शोरगुल)

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : अध्यक्ष महोदय, यहां पुराने जमाने की बात मैं नहीं लाना चाहता हूं लेकिन मेरे ख्याल से माननीय श्री माणिक्यलालजी वर्मा के जो कोई चेले हैं और उनके प्रधान मन्त्री के काल के शागिर्द हैं....

श्री रामकिशन : मुख्य मन्त्री कहिए...

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : मैं इतना अवश्य कहूंगा कि माणिक्यलालजी वर्मा का मैंने बुरा नहीं किया। महाराणा फतहसिंहजी के जमाने में जब माणिक्यलालजी को निर्वासित किया था तो मैंने उनको डूंगरपुर में रखा। वे बांसवाड़ा गये थे तो बांसवाड़ा के शासन ने उनसे कहा कि मार्ग नहीं पकड़ोगे तो डण्डा पड़ेगा। वहां से वे वापिस आये भीगी बिल्ली की तरह और फिर मैंने उनको रखा। मैं बड़ाई की बात नहीं कहता, लेकिन उन्होंने दुर्भावना मेरे प्रति क्यों बना रखी है इसका जवाब मैं नहीं दे सकता, लेकिन मैं इस सिद्धान्त को मानने वाला हूं कि यदि दुनिया में दुश्मनों के सामने कोई आदमी भागता है, तो वह इन्सान नहीं जानवर है। मैं इसके साथ साथ कहे बिना नहीं रहता, पुरानी बातें खोदते हैं तो कहता हूँ, माणिक्यलालजी का यह व्यवहार और उनके साथी विजयसिंहजी पथिक मेरे प्रति कभी दुर्भावना नहीं रखते थे। जब कभी वे डूंगरपुर आते थे तो एक मित्र का सा व्यवहार करके रहते थे। दोनों व्यक्ति एक ही संस्था में रहने वाले, एक में कुटिल और दुर्भावना की नीति और दूसरे की साफ नीति, यह एक व्यक्ति और व्यक्ति के बीच में अन्तर होना स्वाभाविक है और मेरे ख्याल से मेरी हिस्ट्री माणिक्यलालजी के शागिर्द लाकर बार बार सुनाते हैं तो मैं सुनने को तैयार हूं।

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

रामकिशनजी ने कहा कि आदिवासियों को आपने क्या दिया ? मैंने बनावट के साथ आंकड़े पेश नहीं किये। उन्होंने आंकड़े दिये ९ आना एक आदमी को ५ साल में, एक आदमी को पर–कैपिटा के लिए व्यवस्था की लेकिन यह आपका शासन प्रगतिशील है, आप दलित जातियों के लिए कल्याण की कामना करते हैं यह गलत है।

अध्यक्ष महोदय, किसानों के सम्बन्ध में मैं इतना अवश्य कहूँगा कि आपने किसानों के साथ विश्वासघात किया, तरह तरह के टैक्स लगाये और कहते हैं मुख्य मंत्रीजी कि खातेदारी राइट्स दिये गये। आपने राइट्स दिये लेकिन हरएक के पट्टे पर क्या लिखा ? मालिक श्री सरकार,....

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : यह तो आपने पिछले चुनाव में बहुत काम में लिया।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : बहुत काम में लिया और आयन्दा भी लेंगे। क्या पता मालिक श्री सरकार के नामसे आपका जनाजा भी निकल जाय।

(हीयर–हीयर)

मेरा यह निवेदन करना है कि यह सरकार की नीति है, कहना क्या है करना क्या है। उनके दो स्टेन्डर्ड हैं यदि आपको उनकी खातेदारी मानना है, यही मालिक हैं, भूमि इन्हीं की है तो मालिक श्री सरकार लिखने का क्या कारण है जो चलता था चलने देते। यह सरकार का अन्याय है कि लगान भी ले, सेस भी ले इरिगेशन फी भी ले, लेवी भी लें और १७ वां संशोधन लाकर किसान के अधिकार और खत्म करना चाहते हैं। आप समाज विरोधी तत्व हैं। सरकार शत्रु है किसानों की। आपके नेताओं के नाम हैं दीनबन्धु लेकिन मेरे ख्याल से आप दीन-बन्धु नहीं दीन शत्रु हैं।

श्री रामकिशन : दूसरी अपील करें झालावाड़ महाराजा को कांग्रेस से निकाल दें तो....

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : ये कांग्रेस में हैं तो मेरा इनसे विरोध है।

श्री रामकिशन : वे अब आ रहे हैं।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : वह स्वर्णिम दिन उगनेवाला नहीं है कि ये इधर आकर बैठें। दुष्काल के संबंध में चंदनमलजी ने कहा कि आप क्या करते थे ? हमारी सरकार तो जो होता है वह करती है...

श्री मथुरादास माथुर (योजना मंत्री) : वही हम करते हैं।

महारावल श्री लक्ष्मण सिंह : आप जो कुछ भी करते हैं उसका प्रमाण सामने है लेकिन पहले के जमाने में दुष्काल पड़ते थे तब रेल नहीं थी, वायरलेस नही था, हवाई जहाज नहीं था, संवत् तब ५६ के दुष्काल में हजारों आदिवासी मरे। उसके बाद सन् ३६ में दुष्काल पड़ा, मैं छोटे मुंह बड़ी बात नहीं कहना चाहता, तब नुकसान भुगतकर १ रु. का ९ सेर अनाज दिया और आज आप १) रु. का १ सेर देते हो...

श्री परसराम मदेरणा (सहकारिता मंत्री) : उस समय वेजेज क्या थीं ?

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : ओवर ड्राफ्ट के संबंध में बात आई, मुझे मालूम नहीं कितना ले रखा है, कौल साहब को मालूम होगा। शायद ५० करोड़ का होगा या मैं समझता हूं ४० करोड़ का होगा..

श्री बालकृष्ण कौल (वित्त मंत्री) : गलत है।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : गलत है तो आप जो समझते हैं वही है लेकिन ओवर ड्राफ्ट है। इससे आप जानते है एक पैटर्न पैदा किया है। हरएक स्टेट में ओर ड्राफ्ट, ओवर ड्राफ्ट का पैटर्न पैदा किया खजाना खाली। हम तो अनादिकाल से समझते हैं जिस सरकार का खजाना खाली है वह सरकार नाजोगी है। हम कैसे विश्वास करें। आपके पास फंड नहीं हैं आप दिवालिया हैं। आप भारत के दूसरे प्रांतों से अपनी तुलना करते हैं लेकिन तुलना ही करनी है तो आप दूसरे विदेशी पड़ोसी राज्यों से करिये, खास करके हौलेन्ड, जापान, स्विटजरलैंड, जर्मनी आदि देशों से करिये।

आपके पास ८०० करोड़ स्टर्लिंग था उसके बजाय ३ खरब करीब का केन्द्रीय सरकार पर और करीब साढ़े तीन खरब का कर्जा आपने किया है इसलिये कभी खुशहाली नहीं आ सकती। इसीलिए हमारा विश्वास इस सरकार में कैसे हो सकता है ? यह सरकार विश्व की अनोखी सरकार है जिसकी तुलना २० वर्षों में नये आजादी प्राप्त देश हैं उनसे की जाय तो इंडोनेशिया का नम्बर सबसे नीचा है और भारत का नम्बर उससे ऊपर है। पाकिस्तान, इजराईल, फार्मोसा आदि के मुकाबले में कुछ नहीं है बल्कि पाकिस्तान, नेपाल और सीलोन के मुकाबले में भी नहीं है।

यहां बार बार कांग्रेस के सदस्य और मुख्य मन्त्रीजी डींग हांकते हैं कि जिस तरह से हमने ५२ में, ५७ में और ६२ में जीते उसी तरह से जीत जायेंगे। यह संदिग्ध है। अभी हम अल्प संख्यक कहलाते हैं लेकिन ५२ के चुनाव में १ नम्बर से आपका बहुमत था और ५७ और ६२ में भी यही हाल था। यदि विरोधी पक्ष संयुक्त होते तो विरोधी पक्ष को १७।। लाख वोट मिले थे और आपको १३ लाख वोट मिले इस तरह से आपका अल्प मत है। यह ठीक है कि टेक्निकल मेजोरिटी आपके साथ है लेकिन वास्तव में मेजोरिटी हमारी है।

लम्बी चौड़ी बातों में मैं नहीं जाता। बहुत सारी बातें कही गई, और कहना भी चाहता हूं। इस बहस के दौरान पेन्डिंग केसेज के बारे में प्रकाश डाला था लेकिन उत्तर में मुख्य मन्त्रीजी ने उनके सम्बन्ध में कोई प्रकाश नहीं डाला। तो मैं सरकार पर इतना आरोप लगा दूं कि पेन्डिंग केसेज के सम्बन्ध में कोई उत्तर नहीं दिया गया। और दामोदरलालजी व्यास के सम्बन्ध में, एक अमृतलालजी यादव के सुपुत्र के सम्बन्ध में, एक मुन्नालालजी गोयल के सम्बन्ध में, एक नमक के प्लाट्स के सम्बन्ध में एक, हथियारों के बेचने के सम्बन्ध में, एक गोकुललालजी मेहता के सम्बन्ध में, एक भूरसिंह पुरोहित के मर्डर के सम्बन्ध में, एक बीकानेर के अन्दर हुए मर्डर के सम्बन्ध में, एक फर्टीलाइजर फैक्ट्री के सम्बन्ध में, एक अलाउद्दीन खिलजी के सम्बन्ध में, ब्लेक मार्केटिंग

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

के सम्बन्ध में–इस तरह के कई आरोप लगाये, और इसके अलावा इकोनॉमिक पोजीशन जो स्टेट की है, उसके सम्बन्ध में, 'राजस्थान पत्रिका' की घटना के सम्बन्ध में, फियेट कार के सम्बन्ध में और मनफूलसिंहजी के सम्बन्ध में भी आरोप लगाये....

श्री रामानन्द अग्रवाल : इन चार्ज शीट्स का जवाब नहीं दिया है।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : इन पेंडिंग केसेज के बारे में, वैसे यह सरकार के लिए आवश्यक नहीं है कि वह उनका उत्तर दे लेकिन उत्तर दे देते तो अच्छा रहता।

श्री रामकिशन : आवश्यक था लेकिन चार्जेज सही हैं इसलिए नहीं दिया।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : मैं निवेदन करूंगा कि विरोधी पक्षों में कभी इतना....

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : सुखाड़िया जी ने उत्तर नहीं दिया है, सुखाड़ियाजी ने डाइंग डिक्लेरेशन दे दिया है।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : क्या ?

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : कोई व्यक्ति मरता है तो डाइंग डिक्लेरेशन देता है वैसा दिया है।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : इनको आप चन्द्रोदय मकर ध्वज दे दीजिये।

श्री रामकिशन : दवाई भी हिन्दी में ही बताई है।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : कभी भी विरोधी पक्षों में इतनी एकता नहीं रही जितनी कि आज है और कभी भी शासनारूढ़ दल में इतनी फूट नहीं रही जितनी आज है। मेरे ख्याल में इस सरकार ने इस प्रांत में भ्रष्टाचार दिया है, गरीबी दी है और जलालत दी है। मैं आपको यह कहता हूं कि महात्मा गांधी के पवित्र नाम की खातिर, और राजस्थान की दो करोड़ जनता की खातिर आप इन कुर्सियों से इस्तीफा दे दो।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : अध्यक्ष महोदय, एक मिनिट....

श्री रामकिशन : और कोई बात नहीं है, एक पाइन्ट ऑफ ऑर्डर है।

श्री अध्यक्ष : Order please !

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : मेरा पोइन्ट ऑफ ऑर्डर यह है कि इस हाउस में सोने के मामले में बहुत चर्चा हुई, और जुडिशीयल इन्क्वायरी कराने के बारे में मांग हुई। मैं आज भी, माननीय अध्यक्ष महोदय, फिर कहना चाहता हूं कि अपोजीशन के नेता और मैंने जो कुछ भी कहा है, और जिन बातों का हमने चार्ज लगाया है उन सारी बातों की यदि आप जांच कराने के लिए तैयार हैं, उस जांच में यदि हम उनको साबित नहीं करें तो मैं राजनीति से और इस हाउस से इस्तीफा देने के लिए आज भी तैयार हूं और उस दिन भी देने को तैयार रहूंगा, इस आधार पर आप जांच कराइये।

श्री भैरोंसिंह : यह स्पष्टीकरण तो हो जाय कि हम कहां स्टेण्ड कर रहे हैं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : Where do we stand ?

श्री अध्यक्ष : जहां पहले थे ।

श्री उमरावसिंह ढाबरिया : यह मालूम हो जाय कि मुख्य मंत्रीजी की भावना जांच कराने की थी या नहीं थी ?

श्री मोहनलाल सुखाड़िया : मेरी भावना कुछ नहीं थी ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, क्लीअर हो जाय पोजीशन !

श्री अध्यक्ष : क्लीअर हो गई है ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : नहीं साहब, उन्होंने एक्सेप्ट कर लिया है और उनकी जो ऑफर थी, उस पर श्री ढाबरिया ने मुख्य मंत्रीजी की ऑफर को एक्सेप्ट किया है । अगर वह एलीगेशन्स प्रूव नहीं करा सके तो बावजूद इसके सब लोगों ने, विरोधी पक्ष के नेता ने और श्री भैरोंसिहजी ने उनको सलाह दी है, उन्होंने स्वीकार किया है कि वह राजनीति से सन्यास ले लेंगे । उन्होंने यह स्वीकार किया है वैसे उनको स्वीकार करना नहीं चाहिए था और विरोधी दल के नेता ने भी यह कहा था कि यह जायज नहीं है । लेकिन उनके सेन्टीमेंट्स हैं इसलिए जो उनका कमिटमेंट या उसके अनुसार उन्होंने सलाह के बावजूद भी स्वीकार किया है अब । मुख्य मंत्रीजी अपने कथन से मुकरना चाहते हैं । क्या वह इम्प्रेस करना चाहते हैं कि वह अपने कथन से पीछे हटना चाहते हैं ?

श्री चन्दनमल वैद (यातायात मंत्री) : पीछे तो आप हट रहे हैं ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : उन्होंने तो एक्सेप्ट कर लिया है, अब आप क्या कहते हैं ?

श्री रामप्रसाद लड्ढा (सिंचाई मंत्री): You are backing out.

श्री रामानन्द अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, मैं जानना चाहता हूं....

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य !

श्री रामानन्द अग्रवाल : मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या मुख्य मंत्री....

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, इस पर बहुत बहस हो चुकी है ।

श्री रामानन्द अग्रवाल : किसी बात पर तो स्ट्रिक्ट करना चाहिए । आपने पहले कहा कि गणपतिलाल से मैं नहीं मिला, पब्लिसिटी मैंने नहीं की । यह दोनों बातें झूठी साबित हो चुकी हैं । फिर तो आपको जांच करानी चाहिए ।

श्री अध्यक्ष : सदन के समक्ष प्रस्ताव यह है...

एक माननीय सदस्य : सुखाड़ियाजी के लिए यह कोई नई बात नहीं है ।

श्री अध्यक्ष : सदन के समक्ष प्रस्ताव यह है....

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : सुखाड़िया जी अपनी जबान के पाबन्द नहीं है, यह इनकी हमेशा की आदत है ।

श्री अध्यक्ष : सदन के समक्ष प्रस्ताव है वह इस प्रकार है–

"यह सदन राजस्थान सरकार के वर्तमान मंत्री परिषद में अपना अविश्वास प्रगट करता है ।"

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल :)
श्री रामकिशन :)
श्री योगेन्द्रनाथ हाण्डा :) (मतदान के पश्चात्) "हां" पक्ष जीता ।
श्री मुकुटबिहारीलाल गोयल :)
श्री नत्थीसिंह (भरतपुर) :)

श्री हरिदेव जोशी : "ना" पक्ष जीता ।

श्री रामकिशन : हम डिवीजन करायेंगे ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, क्या आप रूल्स को रिलेक्स करके सीक्रेट बैलेटिंग की व्यवस्था नहीं कर सकते । मैं प्रस्ताव करता हूं कि अध्यक्ष महोदय सम्बन्धित रूल्स को रिलेक्स करके सीक्रेट बैलेटिंग की व्यवस्था करें ।

श्री हरिदेव जोशी : वोट तो हमारे ही ज्यादा आयेंगे ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : मैं कहता हूं कि आपको मालूम पड़ जायगा, यह प्रस्ताव पास हो जायगा और आपकी सरकार गिर जायगी ।

श्री हरिदेव जोशी : वाह ! वाह !

श्री गिरधारीलाल व्यास (आसींद) : अंगूर खट्टे हैं ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : मैं कहता हूं कि इस प्रस्ताव पर सीक्रेट वोटिंग कराने की व्यवस्था करा दें और सीक्रेट वोटिंग हो तो जिस तरह की स्थिति सुकाएों की हुई उसी तरह की नहीं हो तो मैं इस सदन से इस्तीफा दे दूंगा ।

श्री चन्दनमल वैद : वह अपने घर को दूसरों के भरोसे चलाते हैं, हम यहां पर अपने भरोसे चलाते हैं ।

श्री योगेन्द्रनाथ हाण्डा : एक डिब्बा रखवा दीजिये, अध्यक्ष महोदय ।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : अध्यक्ष महोदय, जो मांग रखी है उसका समर्थन करते हुए मैं निवेदन करूंगा, अगर मेज पार्लियामेन्ट्री में ऐसा सम्भव हो तो सीक्रेट वोटिंग करायें ।

श्री हरिराम चौहान : अध्यक्ष महोदय, गुप्त मतदान हो । केरल में जो स्थिति है, वही यहां होगी, कांग्रेस सरकार टिक नहीं सकेगी और कांग्रेसी ही इनकी खिलाफत करेंगे । कुछ कांग्रेस के सदस्य इनके खिलाफ वोट देना चाहते हैं इसलिए गुप्त मतदान करायें ।

श्री हरिदेव जोशी : वाह ! वाह !

श्री अध्यक्ष : एक दफा और मतदान हो जाय । एक दफा और !

एक माननीय सदस्य : आपसे निवेदन है कि आप राजस्थान की जनता की भावनाओं की उपेक्षा नहीं करेंगे ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : सीक्रेट वोटिंग की आप व्यवस्था दे दें।

श्री मुकुटबिहारीलाल गोयल : अध्यक्ष महोदय,....

श्री रामानन्द अग्रवाल : आपकी जो रूलिंग है, अध्यक्ष महोदय, वह राजस्थान की दो करोड़ जनता के भाग्य को बचा सकती है।

श्री अध्यक्ष : मैं नहीं समझता कि कोई माननीय सदस्य ...

श्री रामानन्द अग्रवाल : कम से कम पचास सदस्य उधर ऐसे होंगे।

श्री अध्यक्ष : मैं नहीं समझता कि माननीय सदस्य ऐसे वोट पर निर्भर करना चाहेंगे जो स्वतंत्र रूप से वोट नहीं दे सकते। इसलिए मैं समझता हूं कि पुनः मतदान हो जाय।

श्री योगेन्द्रनाथ हाण्डा : धीरे धीरे बोल्ड हो रहे हैं।

श्री अध्यक्ष : जो माननीय सदस्य इस अविश्वास प्रस्ताव के पक्ष में हैं वे हां कहें और जो विपक्ष में हैं वे ना कहें।

(मतदान के पश्चात्)

श्री रामानन्द अग्रवाल : माननीय रेवेन्यू मिनिस्टर ने ना नहीं कहा है। इससे जाहिर होता है कि कुछ माननीय सदस्य ऐसे हैं जिनको इस सरकार में अविश्वास है और वह इस प्रस्ताव का समर्थन करेंगे। इसलिए सीक्रेट वोटिंग करायें।

श्री अध्यक्ष : ना पक्ष जीता। प्रस्ताव अस्वीकार हुआ।

श्री रामानन्द अग्रवाल : We want division.

श्री रामकिशन : अध्यक्ष महोदय, कुछ लोगों को बोलने नहीं दिया गया है, उनके बारे में आपकी क्या राय है? राजस्व मंत्री और इन्डस्ट्री मंत्री बोलना चाहते थे; उनकी वोटिंग में भी आवाज नहीं आई है।

श्री अध्यक्ष : जो व्यक्ति सतर्क थे वह अवश्य बोले हैं।

श्री रामकिशन : क्या करें वह दबे हुए हैं।

(२. १८ म. प.)

विशेषाधिकार प्रश्न के संबंध में अध्यक्षीय घोषणा

श्री अध्यक्ष : कुछ सूचनायें मैं माननीय सदस्यों को दे दूं।

एक विशेषाधिकार के प्रश्न की सूचना माननीय सदस्य श्री मानिकचन्द सुराणा ने दी थी जिसका सम्बन्ध विधान सभा की विशेषाधिकार समिति की रिपोर्ट, जो अखबारों में छप गई थी, से है। इस सम्बन्ध में इस सारे विषय को जांच के हेतु विशेषाधिकार समिति के सुपुर्द कर दिया गया है।

श्री रामकिशन : (किसी माननीय सदस्य के हंसने पर) क्यों हंसते हैं, क्या इसकी रिपोर्ट नहीं आयेगी? अगर बाद में

(श्री रामकिशन)

हम नहीं आवेंगे तो क्या परम्परा नहीं रहेंगी ?

विमत पत्र संबंधी घोषणा

श्री अध्यक्ष : एक प्रश्न माननीय रामानन्द अग्रवाल ने उठाया है कि राजस्थान टीनेन्सी विधेयक के सम्बन्ध में प्रवर समिति के प्रतिवेदन में जो उनका नोट था ....

श्री रामकिशन : मेरा भी था । हम मोअत्तिल हो गये । हमने भेजा था ।

श्री अध्यक्ष : सारी व्यवस्था पर विचार करने के पश्चात् मैंने निर्णय किया है कि यह माननीय सदस्य के साथ न्यायसंगत होगा कि उनका नोट प्रतिवेदन के साथ प्रकाशित किया जाय ।

श्री हरिदेव जोशी (खनिज मंत्री) : सस्पेन्शन के वक्त के ।

श्री मानिकचन्द सुराणा : एक ब्रीच ऑफ प्रिविलेज मेरा मिर्धाजी के खिलाफ है....

श्री रामकिशन : मिर्धाजी से भ्रम नहीं हो इसलिए निवेदन है कि आपके खिलाफ नहीं हैं, नाथूराम मिर्धा के खिलाफ है ।

श्री गिरधारीलाल व्यास : न्यायसंगत नहीं है ।

(२. १९ म. प.)

सत्रावसान पर अध्यक्ष का संबोधन तथा दल के नेताओं द्वारा वक्तव्य

श्री अध्यक्ष : जैसा कि माननीय सदस्य जानते हैं कि यह सत्र आज समाप्त होने जा रहा है, तारीख १५ सितम्बर से यह अधिवेशन चल रहा है और पिछले चार पांच वर्ष में हम सब यहां पर इस सदन में अपना अपना कर्त्तव्य करते रहे हैं । इस सदन की जो कार्यवाही पिछले वर्षों में चली उसमें समय समय पर कई तरह की बातें हुई, कभी कभी कुछ अप्रिय घटनायें भी हुई, कभी कभी कुछ कटुता भी उत्पन्न हुई । लेकिन फिर भी आप सब के सहयोग से सदन ठीक तरह से चल सका है । विशेष तौर से मैं स्वयं के लिए यह कहना चाहूंगा कि आप लोगों ने जिस प्रकार का सहयोग मुझे दिया और जो विश्वास मुझमें व्यक्त किया, इसी से यह सम्भव हो सका कि हम सदन की कार्यवाही को चला सके हैं । मैं आप लोगों का इस विश्वास और सहयोग के लिए आभार प्रदर्शित करता हूं और मैं आशा करता हूँ कि जो कुछ भी कटुता या जो कुछ भी भावनायें थोड़ी बहुत पैदा हुई हैं उनको आप भूल जायं, मेरी भी जो त्रुटियां रही हैं उनको आप भूल जायें और सद्भावना से सदन के बाहर जायं जिससे की हम सब कह सकें कि हमारे देश में और हमारे राज्य में जो यह व्यवस्था है, जो पार्लियामेन्ट्री व्यवस्था है, संसदीय प्रणाली की व्यवस्था है, उसको हम ठीक प्रकार से चला पाये हैं और अपने अपने स्थान पर कार्य करते हुए हमने उसे सफल बनाने में योगदान दिया है । इस भावना के साथ में आपको पुनः धन्यवाद देता हूँ ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मंत्री): अध्यक्ष महोदय, जैसा कि आपने अभी फरमाया कि सदन को, इस विधान सभा का आखिरी सत्र और आखिरी दिवस है, पिछले ५ वर्षों में इस सदन में बहुत से महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये और बहुत से मुश्किल मसले यहां पर लिये गये और इस सदन में राजस्थान के हित की दृष्टि से पारित किये गये हैं। अब चुनाव आने वाले हैं। जो माननीय सदस्य यहां पर हैं उनका मिलना इस अधिवेशन में या इस सिलसिले में हुआ है। मैं अपनी तरफ से विरोधी दल के और हमारे पक्ष के सभी माननीय सदस्यों से इस बात के लिये धन्यवाद देना चाहता हूं कि चाहे आपके आपसी मतभेद रहे हों, बोलने में तीव्रता भी आई हो तब भी सबने मिलकर इस सदन में जनतन्त्र को आगे बढ़ाने में सहयोग दिया है और उसको सफल बनाने में काफी महत्वपूर्ण कदम उठाया है। यह सदन राजस्थान की आकांक्षाओं का प्रतीक है। मेरी तरफ से अगर किसी माननीय सदस्य को किसी प्रकार का कभी क्षोभ हुआ हो तो मैं उसके लिये क्षमा याचना करना चाहूंगा। मेरा यह प्रयत्न रहा है कि जो भी सदस्य यहां पर हैं उनसे सम्मान पूर्वक समझौता रहे। हम सदन में बोलते हैं लेकिन आगे सब मिलकर जब बाहर निकलते हैं तो हम सब यहां की बातें भूलकर चलने की कोशिश करते हैं। इस सम्बन्ध में मैं और ज्यादा न कह कर सभी माननीय सदस्यों को एक बार आभार प्रकट करना चाहता हूं और अध्यक्ष महोदय, मैं इस अवसर पर विशेष तौर से जिन परिस्थितियों में यहां का कार्य चलता है आपके द्वारा जो निष्पक्ष संचालन हुआ है उसके लिये सारे सदन की तरफ से धन्यवाद देता हूं। आपने सभी पक्ष के सदस्यों के हृदय को एक तरह से जीता है और सबमें विश्वास प्राप्त किया है। बहुत कम व्यक्तियों को ऐसा सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसलिये विशेष तौर से आप मुबारिकबादी के पात्र हैं। इन्हीं शब्दों के साथ इसी प्रकार से इस सदन में हम एक दूसरे से अपनी विदाई लेंगे और फिर इसके बाद सन ६७ में मिलेंगे।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह (आसपुर): अध्यक्ष महोदय, मैं और मेरे दल की ओर से मैं अपना पुनीत कर्तव्य समझता हूँ कि आसन के प्रति सम्मान और आदर की भावन प्रकट करता हुआ दो शब्द कहूँ। आपने जिस निष्पक्षता और दूरदर्शिता से इस सदन का संचालन किया है वह मेरे ख्याल से मैं समझता हूं कि सबके लिये प्रेरणा दायक है। और इस सम्बन्ध में कितनी भी व्यक्तिगत रूप से आपकी और उपाध्यक्ष महोदय की प्रशंसा की जावे, मैं समझता हूँ कम है। आपने जिस तरह से इस सदन का संचालन किया है वह निश्चित रूप से जनतन्त्र के लिये एक स्वस्थ परम्परा बनी है और इस स्वस्थ परम्परा को हम इस सदन के बाहर चिरस्मरणीय रूप से लेजा रहे हैं। इन्हीं शब्दों के साथ, अध्यक्ष महोदय, अपने और अपने दल की तरफ से धन्यवाद की भावना व्यक्त करता हूं।

श्री भैरोंसिंह (किशनपोल, जयपुर) : अध्यक्ष महोदय, मेरा यह सदन में तीसरा

(श्री भैरोंसिंह)

विदाई समारोह है और मैं ऐसा अनुभव करता हूँ कि १९५२ से जो माननीय सदस्य इस विधान सभा में बैठे हैं वे इस बात का अनुभव करते होंगे कि विधान सभा में काफी उत्तेजित वातावरण होने के बाद में विरोधी दल और सत्तारूढ़ दल में किसी व्यक्ति विशेष को लेकर या व्यक्तिगत वैमनस्य के कारण हमने इस सदन का उपयोग नहीं किया। यह बात सही है कि विरोधी दल के सदस्य होने के नाते हमें सत्तारूढ़ दल के प्रति काफी अनप्लेजेंट ड्यूटीज़ करनी पड़ती हैं। इससे यह सही है कि सदन में उत्तेजना पैदा हो जाए। लेकिन इसके बावजूद भी सत्तारूढ़ दल और हमने एक बात का पूरा ध्यान रखा है और मैं गर्व के साथ कह सकता हूँ कि राजस्थान की विधान सभा ने लोकतन्त्र के प्रति आस्था रखने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। इसलिये सदन के सभी माननीय सदस्य, सदन के नेता, विरोधी दल के अलग अलग नेता और अध्यक्ष महोदय, इन सब में सबसे ज्यादा योगदान आपका रहा है और सब इस बधाई के पात्र हैं। मैं ऐसा अनुभव करता हूं कि आज हमारा सौभाग्य है कि अध्यक्ष और उपाध्यक्ष महोदय में अविश्वास प्रकट करने की स्थिति पैदा नहीं हुई। बाकी की कई विधान सभाओं में इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न हुई और इस नाते हमें बहुत ज्यादा गौरव है। विरोधी दलों के जो राइट्स हैं, जो भी उनके राइट्स की सीमा थी उस सीमा तक आपने उनको प्रोटेक्ट किया है और इसमें सदन के सभी माननीय सदस्यों का जो सहयोग मिला है वह इस बात का द्योतक है कि हम सब मिल कर लोकतन्त्र को पनपाने में यथाशक्ति कोशिश करते रहे हैं। अगले चुनावों में हम दुबारा विधान सभा मे बैठने की तैयारी करेंगे। पांच वर्षों के चुनाव में हम ६२ में यहां आये और हमें विधान सभा में बैठने का हक था उसके नाते हमने कार्यवाही की। मेरे द्वारा या मेरे दल के कई माननीय सदस्यों द्वारा कई बार कटु बातें एक दूसरे के लिये कही गई। मैं यह कहना चाहूंगा कि यह हमारा अधिकार था, जनता ने ड्यूटी दी थी। हमने उसमें पेथफुली अपना पार्ट अदा किया है और कुछ कटु बातें कही गई हैं तो मैं निवेदन करना चाहूंगा कि कम से कम इस चैप्टर को क्लॉज करने के लिये क्षमा करें। आगे चैप्टर शुरू होगा; फिर नई बातें शुरू होंगी। अब अपने को सभी बातों को भूल कर चलना है यही अच्छा होगा। इस नाते मैं आपके प्रति और सदन के सदस्यों के प्रति जिन्होंने लोकतन्त्र को ज्यादा से ज्यादा पनपाने की चेष्टा की है और उसमें सफल हुए हैं, आभार प्रकट करता हूं।

श्री रामकिशन (वैर) : अध्यक्ष महोदय, इस सदन में शपथ लेने के बाद सबसे पहले दिन मैंने और मेरे दल ने एक बात कही थी कि हम लोकतान्त्रिक परम्पराओं के लिये संघर्ष करते रहेंगे और लोकतांत्रिक परम्पराओं को जीवित रखने के लिये सहयोग भी देते रहेंगे। मैं इतना कह सकता हूँ कि जो कुछ इस सदन में हमने किया है, जहाँ तक हमारा सम्बन्ध है, हमने केवल लोकतान्त्रिक नीतियों को स्पष्ट करने के लिये, समाजवादी नीतियों में अंधेरा, कांग्रेस सरकार की नीतियों की वजह से जो धुंधला आ गया था उसको साफ करने के

(श्री रामकिशन)

लिये किया। हो सकता है कभी कुछ कटुता आ गई हो, मुझे तो याद ही नहीं कि हमारी ओर से कोई कटुता आई क्योंकि मैं कभी कटु नहीं होता, दूसरे लोग भी कटु नहीं हो सकते, फिर भी कोई कटुता आई हो तो मैं विशेष तौर से सरकारी पार्टी के व्यक्तियों से, अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे तो क्षमा याचना करूंगा बाद में, पहले इनसे कर लेता हूँ। समाजवादी नीतियों की रक्षा के लिये संघर्ष चले हैं उनमें किसी तरह की कटुता मेरी ओर से अथवा मेरी पार्टी की ओर से आ गई हो तो वे क्षमा करेंगे।

जहां तक आपका सम्बन्ध है, कहना तो नहीं चाहिये, क्योंकि मनु ने अपने सूत्र में कहा है कि व्यक्ति के सामने प्रशंसा करने से व्यक्ति कभी कभी दम्भी हो सकता है।

हमारे संसार के सबसे बड़े विचारक हैं डा० राममनोहर लोहिया, उनसे मैंने एक बार नहीं दसों बार कहा है, आपके स्पीकर किस तरह के हैं, हमारे स्पीकर किस तरह के हैं। लोहिया, जिनके लिये जवाहरलाल नेहरू हमेशा चाहते रहे कि वह उनसे मिलें पर वे जिंदगी भर नहीं मिले, जयप्रकाश बाबू और लोहिया साथ रहे पर उनसे भी लोहियाजी मिले नहीं। पर शान्ति कुटीर में विश्राम करने गये तो उन्होंने मुझसे कहा कि आपके स्पीकर अच्छे हैं, उनसे मैं मिलने की कोशिश करूंगा। अध्यक्ष महोदय, मैं इससे बढ़कर आपको और कोई सर्टिफिकेट नहीं दे सकता। जो लोहिया जी के प्रति हमारा सम्मान है, जिन्होंने, आदिवासियों के लिये, महिलाओं के लिये, शोषित वर्ग के लिये संघर्ष किया, वर्गभेद, जाति भेद और वर्ण भेद के खिलाफ जिन्होंने अमरिका और अफ्रीका में जाकर संघर्ष किया है, उन्होंने आपसे मिलने की इच्छा प्रकट की, मैं समझता हूं उससे अलावा और सर्टिफिकेट हो नहीं सकता।

हमें पूरा विश्वास है कि अभी यहां हम कुछ लोग हैं, आने वाले चुनावों में हम ३०-३५ के करीब आने की कोशिश करेंगे, उस समय लोकतान्त्रिक परम्पराओं के लिये, समाजवादी नीतियों के लिये हमारा संघर्ष प्रखर, प्रखरतापूर्ण और नम्रतापूर्ण होगा।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपसे और सदन के सभी माननीय सदस्यों से क्षमा याचना करता हूं।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : अध्यक्ष महोदय, इस पाँच वर्ष की विधान सभा के अन्दर कार्य करने के बाद हम एक दूसरे से विदा हो रहे हैं। हमें इस विधान सभा के कार्यों का पहली बार अनुभव है और इस दौरान हम लोगों का एक सबसे छोटा दल होते हुए भी, जो इस सदन में विभिन्न दलों की ओर से हमारे लिये स्थान रहा, सहयोग रहा, एडजस्टमेंट की भावना दिखाई गई उसके लिये इस सदन के सभी दलों के हम पूरी तरह आभारी हैं। अध्यक्ष महोदय, इस सदन में हमें यह भी अनुभव हुआ कि यदि नीतियों के प्रश्न पर, जनता के हित की दृष्टि से, ईमानदारी से काम किया जाय, उस सवाल को सदन में रखा जाय तो

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

संख्या कोई बड़ी बात नहीं, संख्या छोटी होते हुए भी जनता के प्रति अपनी जिम्मेदारी को पूरी तरह निभाया जा सकता है। इस पांच वर्ष के अर्से में कई कई घटनाएं हुई, ऐसी भी घटनाएं हुई जिनको मेरे दल से जोड़ा गया, ऐसी भी घटनाएं हुई जिनको हिन्दुस्तान के इतिहास में अभूतपूर्व कहा गया। मैं आपको और इस सदन के माननीय सदस्यों को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि वे तमाम घटनाएं इस भावना से प्रेरित हो कर हुई हैं कि इस देश के अन्दर प्रजातन्त्र मजबूत हो, मेजोरिटी का शासन देश के हित में चले, इसके लिये हमने कदम उठाये।

अध्यक्ष महोदय, आज हम जा रहे हैं, काफी गरमागरम बहस हुई है और काफी कटुता आई है, लेकिन मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि इन तमाम सवालों को, किन्हीं व्यक्तियों पर, लोगों पर आरोप लगाने की दृष्टि से नहीं वरन् जनहित की दृष्टि से, राज्य का प्रशासन अच्छी तरह चले इसलिये उठाया गया है, वह कटुता आज हम ले कर जा रहे हैं, जिस तरह एडमिनिस्ट्रेशन चलता है, बहुमत के हित में, आम लोगों के हित में नहीं चलता वहां कटुता रहेगी पर वह कटुता किसी मित्र विशेष या व्यक्ति के खिलाफ नहीं, नीतियों और प्रशासन के खिलाफ है और उसको बदलने के लिये जो हम प्रयास कर सकते हैं, वह हमने इस सदन में किया है और बाहर भी करते रहेंगे।

अध्यक्ष महोदय, इस सदन में जो सहयोग आपकी ओर से मिला है और आपके साथ उपाध्यक्ष महोदय से मिला है, उसके लिये मैं निश्चित तौर से कहूंगा कि हम जब तक विधान सभा में नहीं आये थे हम उम्मीद नहीं करते थे, कल्पना नहीं करते थे कि अध्यक्ष महोदय एक दल के स्पीकर हो कर विरोधी दल का इस कद्र विश्वास प्राप्त कर सकते हैं, पर अध्यक्ष महोदय, मैं इस बात को कहने में अतिशयोक्ति नहीं समझता कि आपके व्यवहार और व्यवस्थाओं से जितना विरोधी दल सन्तुष्ट था, शायद शासक दल को आपसे शिकायत करने का मौका मिला हो।

श्री मथुरादास माथुर : कोई शिकायत नहीं।

श्री रामानन्द अग्रवाल : आपके तहत इस विधान सभा के अन्दर जो सेक्रेटेरियेट चलता है, उसमें जिस प्रकार का बराबर का व्यवहार आपके स्टाफ से हमें मिला, उसमें इन पांच वर्षों में एक दिन भी ऐसा नहीं हुआ कि किसी के प्रति, शासक दल से विशेष व्यवहार किया जाता हो और हम लोगों के साथ जिनका एक छोटा सा दल है, किसी और तरह का व्यवहार किया गया हो। चपरासी से लेकर सेक्रेटरी तक एक से भी शिकायत करने का मौका नहीं मिला। इसलिए अध्यक्ष महोदय, हमें विश्वास होता है, लोकतन्त्र में विश्वास होता है कि इस तरह की व्यवस्था कायम की जा सकती है जिसमें निष्पक्ष शासन प्रणाली स्थापित की जा सकती है। जिस प्रकार हमारे यहां सेक्रेटेरियेट चलता है, यहां जिस प्रकार का ऑफिसर्स का क्लर्क्स

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

का रवैया रहता है उसी प्रकार सारे राज्य में हो जाय, जो राज्य का सेक्रेटेरियेट चलता है उसमें हो जाय तो यहां जितनी बहस होती है वह बहुत कम हो कर महज नीतियों की ही बातें रह जायेंगी।

अध्यक्ष महोदय, हम यह उम्मीद लेकर चलते हैं, हम इतने पेसेमिस्टिक नहीं, हम ओप्टेमिस्टिक हैं कि हिन्दुस्तान की जनता डेमोक्रेसी के लिए लड़ी है सदियों तक, वह डेमोक्रेसी को लाई है, इसमें इस डेमोक्रेसी को मजबूत बनाने की शक्ति है। कोई भी तत्व हो, चाहे वह इधर बैठने वाले हों, चाहे उधर बैठने वाले हों, कोई भी उसको धूमिल करना चाहता हो तो हिन्दुस्तान की जनता डेमोक्रेसी को धूमिल नहीं करने देगी और हिन्दुस्तान में डेमोक्रेसी मजबूत होकर रहेगी। इसी विश्वास के साथ हम जा रहे हैं। आपके द्वारा सदन के सभी माननीय सदस्यों का मैं एक बार फिर आभार प्रकट करता हूं कि छोटा-सा दल होते हुए भी हमें बहुत एड्जस्टमेंट का स्थान, आदर का स्थान दिया है। मैं यकीन दिलाता हूं कि यदि यहां दुबारा आने का मौका मिला तो इन्हीं उच्च भावनाओं से प्रेरित होकर हम अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करेंगे।

श्री मुरलीधर व्यास (बीकानेर) : अध्यक्ष महोदय, लोकतन्त्र की यह जो गाड़ी है उस गाड़ी के दो चक्र हैं। एक चक्र सरकारी पक्ष है और दूसरा चक्र विरोधी पक्ष है और इस संसदीय प्रणाली की गाड़ी के वाहक आप हैं। अगर वाहक गाड़ी को ठीक ढंग से चलाते हैं तो यह गाड़ी बहुत ही जल्दी संसदीय दृष्टिकोण से आगे बढ़ती है। जहां तक हमारी इस गाड़ी चलाने का सवाल है, मैं मानता हूं, वाहक बहुत कुशल हैं और लोकतन्त्र की गाड़ी ठीक ढंग से चलती है....

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : इसका पहिया ही खराब है।

श्री मुरलीधर व्यास : अब सवाल आता है कि जहां तक अध्यक्ष महोदय का सवाल है, मैं समझता हूं कि अध्यक्ष महोदय की व्यवस्थाओं का, उनके व्यवहार का, उनकी मधुरता का और सबको साथ में लेने का जहां तक कार्य है, मैं समझता हूँ कभी कभी मैं भी आपके कोप का भाजन बना हूं, लेकिन जो कुछ आपने व्यवस्थाएं दी हैं, वे संसदीय प्रणाली को ऊंचा करने के लिए दी हैं और मैं ऐसा भी महसूस करता हूँ कि जब कभी आप आसन पर बैठते, हम लोग कई बार अपनी बात को कहने के लिए आतुर होते, आपका जो अंकुश था उसकी अवहेलना भी करते और कई बार आपकी व्यवस्था भी होती, लेकिन माननीय दृष्टिकोण से ऊंचा उठकर, उसका आपने ख्याल किया है; सदन के संचालन का जहां तक सवाल है, नीचे से लेकर ऊपर तक सभी लोग आपकी प्रशंसा करते हैं। मैं सुखाड़ियाजी से भी कहना चाहता हूं कि हमने एक पक्ष के नाते, विचार के नाते कोई बात आपको कही हो, तो वह दुर्भावना की दृष्टि से नहीं, दुर्भावना की दृष्टि से कही जाती है तो वह गाली है। मैं समझता हूं कि दुर्भावना की दृष्टि से कोई बात नहीं कही जाय मुख्य मन्त्री विरोधी पक्ष और सरकारी पक्ष

(श्री मुरलीधर व्यास)

के नेता हैं और सदन के भी नेता हैं, वह भी ऐसी बहुत सी बातें हमारे कहने के बावजूद भी मुस्कान से सुनते हैं, सुनने का माद्दा रखते हैं, उसके लिए मैं उन्हें बधाई देता हूँ। जब लोकतन्त्र में सुनने की ताकत पैदा हो जायगी तो लोकतन्त्र कुशल होगा, हो सकता है कि कोई बात आपको बुरी लगती हो लेकिन इस गाड़ी को चलाने के लिए हम दोनों जिम्मेदार हैं। विरोधी पक्ष को भी कड़ा दिल करके सहन करेंगे तो लोकतन्त्र की गाड़ी अच्छी चलेगी।

श्री हरिराम चौहान (तिजारा) : अध्यक्ष महोदय, मैं सबसे पहले आपको धन्यवाद देना चाहता हूं क्योंकि आपने समय पर जो व्यवस्थाएं दी हैं, वे हमें इतनी प्रभावित करती हैं कि जिनके अन्दर किसी भी तरह का कोई पक्षपात नजर नहीं आता है। सदन में जब कभी गंभीर मामला आॅपोजीशन की तरफ से उठाया गया और कांग्रेस की तरफ से चाहे कितना भी बचाव किया गया लेकिन आपने उसकी गंभीरता को कम नहीं होने दिया और जिस समय आम लोगों की भावना के अनुसार जिस किस्म का मसला था उसके अनुसार आपने व्यवस्था दी। इसलिए मैं अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से, आपको धन्यवाद देता हूं। हमारा दल चाहे विधानसभा में सबसे छोटा है, लेकिन भारत में यह दल दूसरे नम्बर पर है। कांग्रेस के बाद में दूसरे नम्बर के वोट्स हमारे दल को मिले, दूसरे नम्बर में ज्यादा सीट्स हमारे दल को मिली हैं। मैं उसका सदस्य होते हुए भी मैं यह बात ठीक तरह से आपके सामने रखना चाहूंगा कि हम पर ५ साल के दौरान में चाहे कितने भी दमन हुए हों, चाहे राष्ट्र की सुरक्षा के नाम पर, चाहे प्रजातंत्र के नाम पर दमन हुआ हो, लेकिन हमने इस सारे दमन का मुकाबला किया, कभी प्रोवोक नहीं हुए। ५ साल में कितने ही आरोप हम पर लगे कि हम अराष्ट्रीय हैं, प्रजातन्त्र में विश्वास नहीं करते, हमने संसदीय प्रजातन्त्र के अन्दर पूरी तरह से उसी के तहत रहकर काम किया है। मैं समझता हूँ कि अगर हमको इसी तरह से जैसे आज आजादी है, जनतंत्र के अन्दर मिलती रही तो जरूरी नहीं है कि हम और कोई तरीके इस्तेमाल करें क्योंकि जनतन्त्र हमारे फायदे में पड़ता है और जनता के फायदे में पड़ता है, इसलिए उसका उपयोग करना हमारा कर्त्तव्य हो जाता है। इसलिए मैं अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से आभार प्रकट करता हूं, तमाम माननीय सदस्यों को बधाई देता हूं और मुख्यमंत्री के हौंसले की दाद देता हूं। चाहे कितनी कड़ी से कड़ी अड़चनें आईं लेकिन हौंसला नहीं छोड़ा और कोशिश यही करते रहे कि मुस्कान के जरिए बड़े से बड़े मसले को टाला जाय। इसलिए उनके हौंसले की दाद देता हूं और अध्यक्ष महोदय, मुझे धन्यवाद देने की आदत नहीं है पर धन्यवाद के लिए खड़ा हुआ हूं, इसलिए दे रहा हूं और दुबारा आऊंगा तो और भी अच्छी तरह से धन्यवाद दूंगा।

श्री केदारनाथ (गंगानगर) : अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूं कि इस पौने पांच साल के जीवन में, जो लोग अपनी विद्वता से, अपनी ओरेटरी से इस सदन में बोले, उसके बारे में मैं कुछ शब्द बोलना चाहूंगा।

(श्री केदारनाथ)

सबसे पहले आपके बारे में, आपकी पर्सनल्टी और आपकी नॉलेज की सराहना करता हूं। उसके बाद उपाध्यक्षजी का, जो पान खाकर अपनी लिट्रेरी नॉलेज के नीचे आकर आसन पर अपने आप को भूल जाते हैं, मुझे हमेशा याद रहेगा। जहां तक सदन के नेता की बात है, मुख्य मंत्री का हमेशा नॉन–रिवेन्जफुल एटीट्यूड रहा और उसके साथ साथ माथुर साहब का रोमेंटिक एटीट्यूड भी याद रहेगा। श्री नाथूराम मोटे तगड़े आदमी हैं, उनमें अपने धुन पर डटे रहने की बात है जैसे हार्डी के एक कैरेक्टर थे हैन्चर्ड।

ऑपोजीशन के लीडर में जैन्टलमैन-लीनेस, शराफत बहुत भरी हुई है। इसके अलावा श्रीमान् सतीशजी, भैरोंसिंहजी और मानकचंदजी, इनकी हरेक विषय पर मास्टरली ग्रास्प और फोर्सफुल प्रेजन्टेशन इस सदन के लिए बड़े सौभाग्य की बात है। हमारे रामानन्दजी की मिलिटेन्सी और रामकिशनजी की शराफत और हमारे मुरलीधरजी व्यास की हार्डनैस, ये याद करने योग्य हैं। ट्रेजेडीज में भी इन्टरल्यूड्स होते हैं, उसके लिए श्री ज्वालाप्रसाद, श्री हांडा और मानसिंहजी हमें याद रहेंगे।

श्री अब्दुल जब्बार (निम्बाहेड़ा): अध्यक्ष महोदय, पांच साल पूरे होने जा रहे हैं। शपथ लेने के बाद इस विधान सभा में। मैंने एक स्पोर्ट्समैन होने के नाते इस सदन को एक खेल का मैदान ही समझा है। मैदान में हार-जीत का रिजल्ट सुन कर बाद में हम साथ साथ चाय पीते हैं और गले मिलकर बैठते हैं। यहां पर भी ऐसा वातावरण पाया उसकी मुझे खुशी है। कभी कभी हो सकता है कि रूलिंग पार्टी की ओर से ऐसी बातें कह दी हों, तोड़ मरोड़ कर कही गई हो, वाक्युद्ध में हमारी तरफ से कुछ कहा गया हो तो मैं साफ तौर से अपनी तरफ से कहूँगा :

(अश्रव्य)

हम परवाने को कभी नहीं जलाते ; वह स्वयं आकर जल जाता है। एक स्पोर्टसमैन होने के नाते इस सदन को खेल का मैदान समझ कर अध्यक्षजी, आपको रेफरी मान कर कई पैनेल्टी और गोल हुए हैं और आपने व्हिशल दी है, जितना आपस में तय हो गया हो, चैम्बर में बैठ कर तय किया हो, कैन्टीन में जाकर चाय पी है। मैं यह निवेदन करता हूँ कि यही स्पिरिट राजस्थान के कौने कौने में ले जायें, यह सदन खत्म होने के बाद ले जायें। मेरा कटु अनुभव है और वह परम्परा जो पहले निभती चली आ रही है वह पुनः निभायें और जनहित में कार्य किये हैं वह एक अच्छी भावना लेकर किये हैं उसी भावना को साथ लेकर आये थे और उसी भावना के साथ पुनः जायेंगे। साथ-साथ यह भी निवेदन करता हूँ कि अगर किसी किस्म की कोई बात मेरे द्वारा या और किसी के द्वारा....

(विराम)

हम तो निर्दलीय हैं। हमारा कोई दल नहीं है। हम सब दलों की ओर से बोलते हैं।

कटुता खत्म करके जो कुछ भी हो तो उसको यहीं छोड़ कर सदन से जाना चाहिये

(श्री अब्दुल जब्बार)

और आगे पॉलिसी और प्रोग्राम के आधार पर पुनः सदन में आकर जनता की सेवा के लिये कोशिश करनी चाहिये।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपका बहुत आभारी हूँ। मैंने जिन्दगी में कई रेफरी पाये हैं। उसी प्रकार आपको एक रेफरी पाया है और आपकी ऑर्डर व्हिशल बजती रही है। मैं मानकर चलता हूँ, मुझे पंजाब वगैरा में जाने का मौका मिला है, वहां जो हालात थे आप सब भी उनसे वाकिफ हैं, लेकिन आपने यहां विधान सभा में जो बैलेन्स बना कर रखा वह तारीफ के काबिल है, प्रशंसनीय है और जितनी तारीफ की जाय वह कम है। मैं चाहता हूं कि आपकी शालीनता राजस्थान में फैले। जब तक विधान को न बदला जाय आपको तैयारी करके आना ही है।

श्री रामकिशन : लेफ्ट कांग्रेस की ओर से कुछ भी नहीं आया है। राइट की तरफ से सुखाड़ियाजी बोल गये।

श्री अध्यक्ष : आज प्रारम्भ में यह निर्णय किया गया था कि तीसरे पहर स्थगन प्रस्तावों पर चर्चा होनी थी, माननीय मन्त्री महोदय से निवेदन करूंगा कि उनका लिखित उत्तर माननीय सदस्यों के पास भेज दें ताकि जो समस्यायें उठायी गई हैं उनका निराकरण हो सके।

सदन की कार्यवाही अनिश्चित काल के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही ३.५. म० प० अनिश्चित काल के लिये स्थगित हुई।)

शुद्धि-पत्र

(गुरुवार, दिनांक २६ सितम्बर, १९६६)

स्तम्भ सं०	पंक्ति सं०	अशुद्धि	शुद्धि
२	१०	हतु	हेतु
३	शीर्ष	(श्री अध्यक्ष)	—
७ से २१८	शीर्षक	मंत्री मंडल	मन्त्रिमंडल
७	५	श्रोर	श्रौर
,,	६	भ्रटाचर	भ्रष्टाचार
,,	१८	हमरी	हमारी
६	३	धबे	बंधे
१०	अन्तिम	से	—
१८	अन्तिम से २	कोट्रस	कोर्ट्स
२०	१	विजली थर्मल	थर्मल बिजली
,,	६	अर्ज	आज
२१	अन्तिम से ५	ममय	समय
२४	७	मेंने	मैंने
२५	६	पेशियों	पेशियां
२६	३	निरजननाथआचार्य	निरंजननाथ आचार्य
२६	६	आपका	आपको
,,	२३	दैठे	बैठे
३०	१०	चाचार्य	आचार्य
,,	२०	डावरिया	ढाबरिया
३४	२६	कस्टोडी	कस्टडी
३६	३०	बम्बार्टमेंट	बम्बार्डमेंट
४३	४	मत्री	मंत्री
४६–५०	शीर्षक	प्रस्ताय	प्रस्ताव
५८	अन्तिम से ६	नीरी	नीरो

(२)

१	२	३	४
६१	६ व ७	जवाब	जवाब
६२	अन्तिम से ४	रिपोट	रिपोर्ट
६३	१	कम्पलेनेट	कम्प्लेनेन्ट
६७	१४	सुब्राम्हृणम	सुब्राहमण्यम्
७२	२	मनिस्टर	मिनिस्टर
७३	१६	डाइरेक्टर	डाइरेक्टर्स
७५	७	उनक	उनका
,,	१२	हो या न हो	हों या न हों
७६	अन्तिम से ४	राजस्थान सरकार तो चलती है इस बूते पर है	राजस्थान सरकार तो चलती ही इस बूते पर है
७८	अन्तिम से ५	रेफरेन्स कया है	रेफरेन्स किया है
९०	१९	उठती	उठाती
९२	२१	चिट्ठिये	चिट्ठियें
९४	१७	फेंसला	फैसला
,,	अन्तिम से ४	श्री स ाशचन्द्र अग्रवाल	श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल
९५	२३	दुआ	हुआ
९८	अन्तिम से ३	कन्सवट्रशन	कन्सट्रक्शन
११९	४	वैधकरण	वैध्याकरण
१२६	अन्तिम से ३	confirment	Conferment
,,	,, ,, २	celling	ceiling
१२७	४	unform	uniform
,,	११	teannts	tenants
१३०	अन्तिम से २	socioeomic	socio-economic
१३२	,, ,, १४	benifited	benefeted
,,	,, ,, १	intermediataries	intermediaries
१३३	२	sort	soort
,,	१८	effected	aff ceted
१३८	११	हृद	हद
१४९	१७	आवे,	आये,
१५१	१०	जब, हम	, जब हम

१	२	३	४
१५३	१७	नही	नहीं
,,	१८	शुरु	शुरू
१५४	१८	बननाने	बनाने
,,	२०	गई।	गई।
१५६	१९	कहां	कहा
१५९	१४	आपन	आपने
१६१	२२	जांय,	जायं,
१६६	१	ढाबरिया	ढावरिया
,,	अन्तिम से ६	मै	मैं
,,	अन्तिम	हम हम	हम
१६९	१७	क	का
१७०	६	को	की
,,	अन्तिम से २	कहीं' नहीं	कहीं नहीं
१७३, १७४ व १७७	६, १२ व ६	श्री उमरावसिंह ढ़ाबरिया	श्री उमरावसिंह ढाबरिया
१७४	१७	किलों	किलो
१७५	५	(शोरगुल, अश्रव्य	(शोरगुल–अश्रव्य)
,,	६	(शोरगुल	(शोरगुल)
१७७	१०	कैटेगरिकली	कैटेगोरिकली
१७८	२३	कर्तव्य	कर्त्तव्य
१८४	६	(शोरगुल व्यवधान)	(शोरगुल–व्यवधान)
१८६	१३	आपकी	आपको
१८८	६	उलझा	उलझा
१८८ व १८९	अन्तिम से ३, १३ व १५	(शोरगुल, व्यवधान, अश्रव्य)	(शोरगुल–व्यवधान-अश्रव्य)
१९०	अन्तिम से १०	वह	वहां
,,	,, ,, ४	में ईस	में इस
१९२	१६	महारावल श्री लक्ष्मणसिह	महारावल श्री लक्ष्मणसिंह
१९३	७	इससं	इससे
१९४	२२	ममझते	समझते

१	२	३	४
१९५	५	वाते	बातें
,,	१२	स	से
,,	अन्तिम से ३	का	को
१९६	४	रहीं	रही
,,	अन्तिम से ५	दुआ	हुआ
१९८	२	इस	यह
२०१	१०	नही	नहीं
२०२	अन्तिम से ६	मत्री	मंत्रि
२०३	शीर्षक	मत्री	मंत्रि
२०४	१४		है
२०६	११	वासवाड़ा	वांसवाड़ा
,,	१४	मैने	मैं ने
,,	१५	बढ़ाई	बड़ाई
,,	अन्तिम	हूं	
२०७	४	का	को
२१४	अन्तिम से १२	पब्लिरिटी	पब्लिसिटी
२१५	,, ,, ११	में	मैं
२२०	१०	पिचले	पिछले
,,	अन्तिम से ८	जिससे की	जिससे कि
	,, ,, १	में	मैं
२२४	११	पेथफुली	फेथफुली
,,	१४	क्लॉज़	क्लोज़
२३२	७	आराष्ट्रीय	अराष्ट्रीय
२३३	अन्तिम से ४	स्पोर्ट्समैन	स्पोर्ट् समैन